दीवान-ए-ग़ालिब

शब्दावली

दीवान-ए-ग़ालिब

शब्दावली

دیوانِ غالب کی ہندی فرہنگ

ہندستانی بک ٹرسٹ
۳ اے، ناز بلڈنگ، بمبئی ٤

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट,
३-ए, नाज़ बिल्डिंग,
बम्बई ४.

१

नक़्श – निशान, बेलबूटे, चित्र, चिह्न।

फ़रियादी – फ़रियाद करने वाला।

शोख़ि-ए-तहरीर – (शोख़ी–तीखापन, चंचलता, दिलकशी, मोहकता, शरारत, सुन्दरता। तहरीर–लिखावट, चित्र की रेखायें) तहरीर की सुन्दरता और बांकपन।

पैरहन – लिबास, वस्त्र।

पैकर-ए-तस्वीर – (पैकर–आकार) चित्र का आकार।

प्राचीन ईरानमें रिवाज था कि फ़रियाद करनेवाले काग़ज़ के कपड़े पहनकर आते थे।

२ काव-ए-काव-ए-सख़्तजानीहा-ए-तन्हाई – (काव काव–कड़ी मेहनत, घोर परिश्रम। सख़्तजानी–ऐसी हालत जिसमें प्राण मुश्किल से निकले। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त। तन्हाई–एकान्त, अकेलापन) तन्हाई की मुसीबतें, विरह के दुख।

जू-ए-शीर – दूध की नहर।

शीरीं फ़रहाद की कहानी में फ़रहाद ('आशिक़) पहाड़ से दूध की नहर काटने गया था और वहीं सर फोड़कर मर गया। इसलिये जू-ए-शीर लाना–कठिन काम करना, कठिन काम में मर जाना।

जज़्बः-ए-बेइख़्तियार-ए-शौक़ – (जज़्बः–मनोभाव, आवेश। बे इख़्तियार–जिसपर क़ाबू न हो। शौक़–अभिलाषा, चाव) इंतिहाई शौक़ की हालत, प्रेम का अतिशय भाव।

सीनः-ए-शमशीर – तलवार का सीनः।

दम – धार, साँस, प्राण।

आगही – समझ बूझ, अक़्ल, चेतना।

दाम-ए-शुनीदन – (दाम–जाल। शुनीदन–सुनना) बात को पकड़ने की कोशिश, समझने की कोशिश, श्रवण-जाल।

मुद्द'आ – उद्देश्य, मक़सद, मतलब, अभिप्राय।

'अन्क़ा – एक काल्पनिक पक्षी का नाम, जिसका अस्तित्व न हो, नापैद।

'आलम-ए-तक़रीर – बोलने की हालत, बातों की दुनिया।

असीरी – क़ैद।

आतश ज़ेर-ए-पा – पाँव के नीचे आग, व्याकुल, बेताब।

मू-ए-आतश दीदः – आग में झुलसा हुआ बाल।

हल्क़ः – ज़ंजीर की कड़ी।

२

जराहत – घाव, ज़ख़्म।

अलमास – हीरा, दिल को काटनेवाला।

अर्मुग़ाँ – तोहफ़ः, भेंट, उपहार, पुरस्कार।

दाग़-ए-जिगर – जिगर का दाग़। (जिगर वीरता और शक्ति का प्रतीक है)

हदियः – तोहफ़ः, उपहार।

मुबारकबाद – मुबारक हो, बधाई।

ग़मख़्वार-ए-जान-ए-दर्दमन्द – (ग़मख़्वार–सहानुभूति रखनेवाला। जान-ए-दर्दमन्द–दुखी प्राण) दुख भरी जान का दुख उठानेवाला, दुखियों को धीरज बँधानेवाला।

३

१ जुज़ क़ैस – (क़ैस–मजनूँ का नाम) क़ैस के सिवाय।

बरू-ए-कार आना – पैदा होना, प्रसिद्धि पाना।

सहरा – जंगल, रेगिस्तान, बयाबान, वीरानः (इसमें विस्तार और फ़ासले का मतलब भी है)

वुस'अत – विस्तार, फैलाव

मगर – शायद।

धतँगि-ए-चश्म-ए-हुसूद – (हुसूद–ईर्षा, डाह) हसद की आँख की तरह तँग, डाह करनेवाले की आँख की संकीर्णता।

२ आशुफ़्तगी – परीशानी, उन्माद, विकलता, अस्तव्यस्तता।

नक़्श-ए-सुवैदा – दिल पर काला धब्बः या दाग़, ग़म का दाग़।

किया दुरुस्त – बनाया।

सरमायः – पूँजी।

दूद – धुआँ।

३ ख़्वाब – स्वप्न (ग़फ़लत)

ख़याल – कल्पना।

मु'आमलः – लेन देन, बातचीत, त'अल्लुक़, सम्बन्ध।

ज़ियाँ – नुक़सान, घाटा, हानि।

सूद – नफ़'अ, लाभ।

४ मकतब-ए-ग़म-ए-दिल – दिल के ग़म का मदिरसः, दुखों की पाठशाला।

सबक़ – पाठ।

हनोज़ – अभी, अभी तक।

रफ़्त – गया।

बूद – था।

५ दाग़-ए-'अयूब-ए-ब्रहनगी – (दाग़–धब्बः। 'अयूब–दोष, अवगुण, बुराइयाँ। ब्रहनगी–नग्नता) नग्नता के दोषों के चिह्न।

लिबास – वस्त्र, कपड़े।

नँग-ए-वुजूद – (नँग–लज्जा, शर्म, दोष। वुजूद–जीवन, अस्तित्व) अस्तित्व के लिये लज्जा जनक।

६ तेशः – कुदाल।

कोहकन – पहाड़ काटनेवाला, फ़रहाद।

सरगश्तः-ए-ख़ुमार-ए-रुसूम-ओ-क़ुयूद – (सरगश्तः–सरफिरा, भ्रांत, उद्विग्न। ख़ुमार–उतरा हुआ नशः, मदिरालस। रुसूम-ओ-क़ुयूद–रीति रिवाज का बंधन) रस्म-ओ-रिवाज का मारा हुआ।

४

१ **मुद्'आ** – मतलब, मंशा उद्देश्य।

२ **ज़ीस्त** – ज़िन्दगी, जीवन।

३ **दोस्तदार** – मित्र।

दुश्मन – शत्रु। (व्यंग से मा'शूक़ को दुश्मन कहा गया है, जो जान का ग्राहक है।)

ए'तिमाद – भरोसा।

नालः – आर्तनाद।

नारसा – न पहुँचनेवाला, बेअसर।

४ **पुरकारी** – चालाकी, 'अय्यारी।

बेख़ुदी – अपने आप से बेख़बर होना, आत्मविस्मृति।

तग़ाफ़ुल – उपेक्षा, असावधानी, लापरवाही।

जुरअत आज़मा – हिम्मत आज़मानेवाला, बढ़ावा देनेवाला, दिल को उकसाने वाला।

५ **ग़ुंचः** – कली।

६ **बारहा** – बार बार।

७ **शोर-ए-पन्द-ए-नासेह** – (शोर–ऊँची आवाज़, गुल, कड़वापन, खारीपन। पन्द–उपदेश। नासेह–उपदेशक) उपदेश की कटुता।

५

१ **सोज़-ए-निहाँ** – छुपी हुई जलन, अन्दर की आग।

बेमहाबा – (बिना लिहाज़, बिना मुरव्वत) बिल्कुल, यकसर।

आतश-ए-ख़ामोश – बुझी हुई आग, चुपके चुपके सुलगती हुई आग।

मानिन्द – तरह।

गोया – जैसे।

२ **ज़ौक़-ए-वस्ल** – (ज़ौक़–रस, मज़ा, चस्का, आनन्द। इनमें से किसी भी एक शब्द से ज़ौक़ का ठीक ठीक अर्थ नहीं निकलता। वस्ल–मिलन) मिलन का मज़ा।

याद-ए-यार – दोस्त की याद।

३ **'अदम** – अस्तित्वहीन।

ग़ाफ़िल – असावधान, निश्चेत।

आह-ए-आतशीं – आग से भरी हुई आह।

बाल-ए-'अन्क़ा – 'अन्क़ा का पर।

४ **'अर्ज़** – बयान, आवेदन।

जौहर-ए-अन्देशः – (जौहर–रत्न। अन्देशः–शंका) ख़याल या फ़िक्र का जौहर, चिन्तन की आत्मा।

वहशत – घबराहट।

सहरा – जंगल, बयाबान।

५ **चराग़ाँ** – दीपोत्सव, दीपमाला।

कारफ़रमा – मोहतमिम, कार्यकर्ता, प्रबन्ध करनेवाला (दिल)

अफ़सुर्दगी – कुम्हलाहट, मुरझा जाना।

आरज़ू – इच्छा, कामना, लालसा।

तर्ज़-ए-तपाक-ए-अहल-ए-दुनिया – (तर्ज़–पद्धति, स्वभाव। तपाक–आव-भगत, प्रीति) दुनियावालों का आव-भगत करने का तरीक़ः।

६

१ **हर रँग** – हर तरह, हर सूरत में, हर तरीक़े से।

रक़ीब-ए-सर-ओ-सामाँ – (रक़ीब–दुश्मन। सर-ओ-सामाँ–आवश्यक सामग्री) हर प्रकार की सज्जा व शृंगार का शत्रु।

क़ैस – मजनूँ का नाम।

'उरियाँ – नँगा, नग्न, विवसन।

२ **दाद न दी** – ख़याल न किया, लिहाज़ न किया, ता'रीफ़ न की, न्याय न किया।

यारब – अय ख़ुदा।

सीनः-ए-बिस्मिल – ज़ख़्मी का सीनः।

परअफ़शाँ – पर झाड़ता हुआ, पर फैलाये हुये, परीशान, सरासीमः।

३ **बू-ए-गुल** – फूल की ख़ुशबू या सुगंध।

नालः-ए-दिल – दिल का नालः, दिल की फ़रियाद।

दूद-ए-चराग़-ए-महफ़िल – महफ़िल के चराग़ का धुआँ।

बज़्म – महफ़िल, मज्लिस, सभा, गोष्ठी।

४ **दिल-ए-हसरतज़दः** – हसरतों का मारा हुआ दिल।

मायदः-ए-लज़्ज़त-ए-दर्द – दस्तरख़्वान जिस पर 'अिश्क़ का दर्द सजा हुआ है और उस दर्द में मज़ा है।

बक़द्र-ए-लब-ओ-दन्दाँ – होंटों और दाँतों की हैसियत के बराबर, या'नी बहुत थोड़ा।

५ **नौआमोज़-ए-फ़ना** – मौत के मु'आमले में नौसिखिया।

हिम्मत-ए-दुश्वार-पसन्द – मुश्किलों से ख़ुश होनेवाली हिम्मत।

गिरियः – रोना।

क़तरः – बूँद।

७

१ **बाब-ए-नबर्द** – लड़ाई के योग्य।

'अिश्क़-ए-नबर्द पेशः – 'अिश्क़ जिसे लड़ाई या कठिनाइयों में आनन्द आये

तलबगार-ए-मर्द – बहादुर को चाहनेवाला, बहादुर को ढूँढनेवाला।

२ **पेश्तर** – पहले।

ज़र्द – पीला।

३ तालीफ़-ए-नुस्ख़हा-ए-वफ़ा – 'अिश्क़ की किताब की तरतीब, सम्पादन।

मजमू'अः-ए-खयाल – कल्पना का संकलन।

फ़र्द फ़र्द – वरक़ वरक़, टुकड़े टुकड़े, बिखरा हुआ।

४ दिल ता जिगर – दिल से जिगर तक (दिल महब्बत की मंज़िल है और जिगर हिम्मत की)

साहिल-ए-दरिया-ए-ख़ूँ – खून के सागर का कनारः।

रहगुज़र – रास्ता, पथ, मार्ग।

जल्वः-ए-गुल – (जल्वः–दर्शन, छवि, कान्ति। गुल–फूल) फूलों की बहार।

आगे – पहले, गुज़रे हुये समय में, अतीत काल।

गर्द – धूल, हेच, बे'मानी, निरर्थक।

५ कशमकश – खेंच तान, मुसीबत, परीशानी।

अन्दोह-ए-'अिश्क़ – 'अिश्क़ का ग़म, 'अिश्क़ की मुसीबत।

६ अहबाब – दोस्त, मित्र।

चारः साज़ि-ए-वहशत – वहशत का इलाज।

ज़िन्दाँ – क़ैदखानः।

बयाबाँ नवर्द – जंगल जंगल घूमनेवाला।

७ असद-ए-ख़स्तः जाँ – असद–ग़ालिब का नाम। ख़स्तःजाँ–थकी माँदी जान।

हक़ – खुदा।

मग़फ़िरत – मोक्ष, मुक्ति।

८

१ शुमार-ए-सुब्हः (भूल से सब्हः छपा है) – (शुमार–गिनना। सुब्हः–सौ दाने की तस्बीह) माला जपना।

मर्ग़ूब-ए-बुत-ए-मुश्किल पसन्द – (मर्ग़ूब–पसन्दीदः। बुत-ए-मुश्किल पसन्द–मा'शूक़ जिसे मुश्किल काम अच्छे लगें) मुश्किलों से आनन्द लेनेवाले माशूक़ की पसन्द।

तमाशा-ए-बयक कफ़ बुर्दन-ए-सद्दिल – एक मुट्ठी में सौ दिल बन्द कर लेने का खेल।

२ बफ़ैज़-ए-बेदिली – उदासीनता की उदारता से।

नौमीदि-ए-जावेद – हमेशः के लिये मायूसी, चिरकालिक निराशा।

कशाइश – (भूल से कशायश छपा है) विस्तार, खोलने की क्रिया।

'अुक़दः-ए-मुश्किल – सख़्त गाँठ, गूढ़ गुत्थी, कठिन समस्या।

३ हवा-ए-सैर-ए-गुल – (हवा–ख्वाहिश, शौक़, इच्छा। सैर-ए-गुल–फूलों का तमाशा) फूलों की सैर करने की ख्वाहिश या शौक़।

आईनः-ए-बेमेह्रि-ए-क़ातिल – (आईनः–सुबूत, दलील। बेमेह्री–बेरहमी, बेमुरव्वती, निर्दयता। क़ातिल–मा'शूक़) मा'शूक़ की बेरहमी का सुबूत।

अन्दाज़-ए-बख़ूँ ग़ल्तीदन-ए-बिस्मिल – (अन्दाज़–तरीक़ः। बख़ूँ ग़ल्तीदन–खून में लिथड़ना। बिस्मिल–ज़ख़्मी) ज़ख़्मियों के खून में लोटने का तरीक़ः।

९

१ दह्र–काल, समय, दुनिया, जगत।

नक़्श-ए-वफ़ा – वफ़ा की तस्वीर, वफ़ा का लफ़्ज़।

वज्ह-ए-तसल्ली – संतोष का कारण।

लफ़्ज़ – शब्द।

शर्मिन्दः-ए-मा'नी – जिसका कोई मतलब हो, अर्थ हो, सार्थक।

२ सब्ज़ः-ए-ख़त – मुख-लोम।

काकुल-ए-सरकश – (काकुल–बल खाई हुई बालों की लट। सरकश–मग़रूर, बाग़ी) बालों की बाग़ी और घमंडी लटें।

ज़मर्रुद – हरे रंग का क़ीमती पत्थर (यहाँ सब्ज़ः-ए-ख़त को कहा गया है।)

हरीफ़-ए-दम-ए-अफ़'अी – (हरीफ़–मुक़ाबिलः करनेवाला, प्रतिद्वंदी, दुश्मन। दम-ए-अफ़'अी–साँप की साँस, फुंकार) लहराते हुये साँप का मुक़ाबिलः करनेवाला। (कहते हैं कि ज़मर्रुद को देखकर साँप अंधा हो जाता है।)

३ अन्दोह-ए-वफ़ा – वफ़ा की मुसीबत, वफ़ा का दिया हुआ ग़म, 'अिश्क़ का दुख।

सितमगर – सितम करनेवाला, ज़ुल्म ढानेवाला, अत्याचारी, मा'शूक़।

राज़ी न हुआ – खुश न हुआ, इजाज़त न दी।

४ गुज़रगाह-ए-ख़याल-ए-मै-ओ-साग़र – (गुज़रगाह–रास्तः, मार्ग। ख़याल–कल्पना। मै–शराब। साग़र–शराब का प्यालः) मै और साग़र के ख़याल से भरा हुआ मार्ग, जिसपर से मै और साग़र की कल्पना गुज़र रही हो।

नफ़स – साँस।

जादः-ए-सरमंज़िल-ए-तक़्वा – (जादः–रास्ता, पथ, पगडण्डी। तक़्वा–पारसाई, संयम, पवित्रता, त्याग) संयम-मार्ग।

५ राज़ी – खुश, मुतमइन, संतुष्ट।

गोश – कान।

मिन्नत कश-ए-गुलबाँग-ए-तसल्ली – (मिन्नत कश–एहसानमन्द, कृतज्ञ। गुलबाँग–खुश खबरी, मुज़्दः) ऐसे शुभ समाचार का एहसानमन्द जिस से संतोष हो।

६ महरूमि-ए-क़िस्मत – भाग्य से वंचित होना, भाग्य हीनता।

७ सदमः-ए-यक जुँबिश-ए-लब – (सदमः–चोट, ग़म। यक–एक। जुँबिश–हिलाना। लब–होंट) होंटों के हिलने का सदमः।

नातवानी – कमज़ोरी, दुर्बलता।

हरीफ़ – मुक़ाबिलः करनेवाला, विरोधी।

दम-ए-'अीसा – हज़रत 'अीसा की साँस या फूँक ('अीसा और मसीहा नफ़स मा'शूक़ के लिये भी इस्ति'माल होता है। इंजील के अनुसार हज़रत 'अीसा की फूँक से मुर्दे ज़िन्दः हो जाते थे)

१०

१ सताइशगर – (सिताइशगर) ता'रीफ़ करनेवाला, प्रशंसक।

ज़ाहिद – परहेज़गार आदमी, त्यागी, गुनाह से दूर रहनेवाला, संयमी। (उर्दू शा'अिरी में ज़ाहिद और मौलवी का हमेशः मज़ाक़ उड़ाया गया है)

बाग़-ए-रिज़्वाँ – रिज़्वाँ का बाग़, जन्नत, स्वर्ग। (रिज़्वाँ जन्नत की हिफ़ाज़त करनेवाले फ़रिश्ते का नाम है)

बेख़ुद – जो अपने होश में न हो, बेसुध, आत्मलीन।

ताक़-ए-निसियाँ – ताक़ जिसमें कुछ रखकर भूल जायें।

२ बेदाद – ज़ुल्म, अन्याय।

काविशहा-ए-मिशगाँ – (काविश–कोशिश। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त मिशगाँ–दृग-अंचल) पलकों की झपक, पलकों का हिलना।

क़तरः-ए-ख़ूँ – ख़ून की बूँद।

तस्बीह-ए-मरजाँ – मूँगे की तस्बीह, मूँगे की माला। (मूँगा क़ीमती है और तस्बीह पवित्र)

३ सतवत-ए-क़ातिल – क़ातिल (मा'शूक़) का रो'ब दाब।

न आई............माने'अ मेरे नालों को – मेरे नालों को रोक न सकी।

नयस्ताँ – नरकुल का जंगल (नयस्ताँ के रेशे से मतलब नै या'नी बाँसुरी है। उसकी आवाज़ 'आशिक़ की फ़रियाद है जो मा'शूक़ के लिये नग़्मः है)

४ दाग़-ए-दिल – दिल का दाग़।

तुख़्म – बीज।

सर्व-ए-चराग़ाँ – चराग़ों से जगमगाता हुआ पेड़।

५ आईनःख़ानः – घर जिसकी दीवारों में आईने जड़े हों।

नक़्शः – हालत।

जल्वः – नूर, नूर का ज़ुहूर, दर्शन, कान्ति, छवि।

परतव-ए-ख़ुर्शीद – सूरज की रौशनी, किरनें।

'आलम – हालत, दशा।

शबनमिस्ताँ – ओस की बूँदों से भरी हुई जगह।

६ ता'मीर – बनावट, रचना,

मुज़्मर – छुपी हुई।

हयूला – माद्दः, तत्व, धातु।

बर्क़-ए-ख़िरमन – खलियान पर गिरनेवाली बिजली।

दहक़ाँ – (दहक़ान) किसान

७ हर सू – हर तरफ़।

सब्ज़ः – घास।

तमाशा कर – तमाशा देख।

मदार – निर्भरता, आश्रय।

दरबाँ – घर का रखवाला, ड्योढ़ीवान।

८ ख़मोशी – ख़ामोशी, मौन।

निहाँ – छुपी हुई।

ख़ूँ गश्तः – जिनका ख़ून हो चुका हो।

चराग़-ए-मुर्दः – मरा हुआ चराग़, बुझा हुआ दीपक।

गोर-ए-ग़रीबाँ – क़ब्रिस्तान।

९ हनोज़ – अभी, अभी तक।

परतव-ए-नक़्श-ए-ख़याल-ए-यार – (परतव–परछाईं, अक्स, रौशनी, किरण, प्रकाश। नक़्श–तस्वीर। ख़याल–कल्पना, याद। यार–दोस्त, मा'शूक़) मा'शूक़ की याद की किरण।

दिल-ए-अफ़सुर्दः – बुझा हुआ दिल।

गोया – जैसे।

हुजरः – कोठरी।

यूसुफ़ – एक पैग़म्बर जिनको दुनिया का सब से सुन्दर व्यक्ति समझा जाता था। भाइयों ने जलन में उनसे दग़ा की। मिस्र के बाज़ार में ग़ुलाम की तरह बेचे गये। ज़ुलेख़ा उनपर 'आशिक़ हो गई। जीवन का एक बड़ा हिस्सः उन्होंने क़ैद में गुज़ारा।

ज़िन्दाँ – क़ैदख़ानः।

१० ग़ैर – दुश्मन, अजनबी, रक़ीब, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

तबस्सुमहा-ए-पिन्हाँ – छुपी हुई मुस्कुराहटें, हल्की मुस्कान।

११ क़यामत – प्रलय, अत्याचार, ज़ुल्म।

सरश्क आलूदः – आँसुओं से तर।

मिशगाँ – दृगांचल।

१२ जादः-ए-राह-ए-फ़ना – मौत का रास्तः।

शीराज़ः – बिखरी हुई चीज़ों की एकत्रता।

'आलम – दुनिया, संसार।

अज्ज़ा-ए-परीशाँ – बिखरे हुये टुकड़े।

११

१ यक बयाबाँ माँदगी – इतनी ज़्यादः थकन जो पूरे बयाबान (जंगल) में समा जाये, जिसके नापने के लिये बयाबान का पैमानः चाहिये।

ज़ौक़ – रस, मज़ा, चस्का, आनन्द (इनमें से कोई एक शब्द ज़ौक़ का पूरा अर्थ नहीं दे सकता।)

हबाब-ए-मौजः-ए-रफ़्तार – (हबाब–बुलबुला। मौज–लहर। रफ़्तार–चाल, गति) रफ़्तार की लहर पर तैरते हुये बुलबुले।

नक़्श-ए-क़दम – पैर का निशान, पदचिह्न।

२ बेदिमाग़ी – (बिदमाग़ी) बेज़ारी।

मौज-ए-बू-ए-गुल – फूल की महक जो लहर की तरह आती है।

१२

१ सरापा – सर से पाँव तक।

रहन-ए-'अिश्क़ – 'अिश्क़ के हाथ गिरवी।

नागुज़ीर – अनिवार्य, लाज़मी।

उल्फ़त-ए-हस्ती – ज़िन्दगी की महब्बत, जीवन की चाह।

'अिबादत – पूजा।

बर्क़ – बिजली।

अफ़सोस – ग़म, दुख।

हासिल – आय, आमदनी, नफ़'अ, खेती, खलियान।

२ बक़द्र-ए-ज़र्फ़ – (ज़र्फ़–पात्र, हृदय, मन, साहस) हौसले के मुताबिक़, साहस के अनुसार।

खुमार-ए-तश्नःकामी – (खुमार–मदिरालस। तश्नःकामी–प्यास) प्यास का खुमार।

दरिया-ए-मै – शराब का सागर।

ख़मियाज़ः – अँगड़ाई, जम्हाई, नतीजः।

साहिल – कनारः, (नशः उतरने में अँगड़ाई आती है और सागर का कनारः ऊँचा नीचा और लहराता हुआ होने की वजह से अँगड़ाई की तरह मा'लूम होता है। साक़ी को शराब का सागर इसलिये अपनी प्यास को सागर का कनारः कहा है, जिसकी प्यास कभी नहीं बुझती।)

१३

१ महरम – जाननेवाला, समझनेवाला, मर्मज्ञ, रहस्यवेत्ता।

नवाहा-ए-राज़ – (नवा–स्वर, आवाज़। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त। राज़–मर्म, भेद, छुपी हुई हक़ीक़त) राज़ के सुर, राज़ की आवाज़ें।

हिजाब – ओट, आड़, चिल्मन (पर्दः)

पर्दः – साज़ का पर्दः जिससे राग निकलते हैं।

साज़ – बाजा (जैसे–सारँगी, सितार, सरोद, वीना वग़ैरः)

२ रँग-ए-शिकस्तः – (शिकस्तः–टूटा हुआ) उड़ा हुआ रँग।

सुब्ह-ए-बहार-ए-नज़ारः – (नज़ारः–दर्शन, अवलोकन, दृश्य) नज़ारे की बहार की सुबह।

नाज़ – सौंदर्य गर्व, सौंदर्याभिमान।

शिगुफ़्तन-ए-गुलहा-ए-नाज़ – (शिगुफ़्तन–खिलना। गुल–फूल। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त। नाज़–इतराहट, फ़ख्र, बेपरवाई, सौंदर्य-गर्व, सौंदर्याभिमान) नाज़ के फूलों की मुस्कुराहट।

३ सू-ए-ग़ैर – ग़ैर (दुश्मन, रक़ीब) की तरफ़।

नज़रहा-ए-तेज़ तेज़ – (हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) तेज़ तेज़ नज़रें।

मिश़ःहा-ए-दराज़ – (हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) लम्बी पलकें।

४ सर्फ़ः – फ़ायदः।

ज़ब्त-ए-आह – आह का सहन (नियंत्रण)

वगरनः – वर्नः।

लो'मा– निवाला, ग्रास, कौर।

नफ़स-ए-जाँगुदाज़ – (नफ़स–साँस। जाँगुदाज़–जान को पिघला देनेवाला) जान लेनेवाली आह।

५ जोश-ए-बादः – शराब का उबाल, शराब का ज़ोर।

शीशः – शराब की बोतल।

गोशः-ए-बिसात – (बिसात–फ़र्श) महफ़िल का कोना कोना।

शीशःबाज़ – मदारी जो बोतलें उछालकर तमाशा दिखाता है।

६ काविश – कोशिश, कुरेद, खोज।

हनोज़ – अभी तक, अभी।

गिरह-ए-नीमबाज़ – अधखुली गाँठ।

७ ताराज-ए-काविश-ए-ग़म-ए-हिज्राँ – (ताराज–लूट, तबाही। हिज्राँ–प्रेमिका से जुदाई, विरह।) हिज्र के ग़मों का लूटा हुआ।

दफ़ीनः – ज़मीन में गड़ा हुआ धन या ख़ज़ानः।

गुहरहा-ए-राज़ – (गुहर–मोती। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त। राज़–भेद) राज़ के मोती।

१४

१ बज़्म-ए-शाहनशाह – बादशाह की महफ़िल, दरबार।

अश'आर – (शे'र का बहुवचन) कविता।

यारब – अय ख़ुदा।

दर-ए-गँजीनः-ए-गौहर – मोतियों के ख़ज़ाने का दरवाज़ः। दरबार।

२ शब – रात।

अंजुम-ए-रख़्शिन्दः – चमकदार तारे।

मंज़र – दृश्य।

तकल्लुफ़ – ख़ूबसूरत और मुहज़्ज़ब बनावट, सुसंस्कृत दिखावा।

बुतकदः – मूर्तियों का घर, मन्दिर।

३ दीवानः – पागल, खोया हुआ।

फ़रेब – धोका।

दश्नः – छुरी, कटारी।

पिन्हा – छुपा हुआ, छुपी हुई, निहित।

नश्तर – (निश्तर) बारीक और नाज़ुक छुरी।

४ परी पैकर – परी का सा आकार या चेहरः, परी की तरह सुन्दर।

५ ख़याल-ए-हुस्न – सुन्दरता की कल्पना।

हुस्न-ए-'अमल – कार्य की सुन्दरता।

ख़ुल्द – जन्नत, स्वर्ग।

दर – दरवाज़ः।

गोर – क़ब्र।

६ 'आलम – हालत, दशा।

ज़ुल्फ़ – बालों की लट।

शोख़ – तीखा, तेज़, शरीर, चंचल, चपल, हसीन (मा'शूक़)

७ 'अर्सः – मुद्दत, देर, वक़्त।

८ शब-ए-ग़म – ग़म की रात।

नुज़ूल – नीचे उतरना।

दीदः-ए-अख़्तर – तारों की आँख।

९ ग़ुर्बत – मुसाफ़िरत, बेवतनी, प्रवास।

हवादिस – दुर्घटनायें।

नामः – ख़त, पत्र, चिट्ठी।

नामःबर – चिट्ठी लानेवाला, डाकिया, पत्र-वाहक।

१० उम्मत – किसी को मानने वालों का गिरोह, अनुयायी, रसूल-ए-इस्लाम को मानने वाले।

शह – शाह, बादशाह (रसूल अल्लाह, हज़रत मुहम्मद)

गुँबद-ए-बेदर – बिना दरवाज़े का गुँबद (आस्मान)
(मुसलमान मानते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब आस्मान पर गये थे, इस को मे'राज कहते हैं।)

१५

१ शब – रात, रजनी, यामिनी।

बर्क़-ए-सोज़-ए-दिल – बिजली की तरह तड़पती हुई दिल की जलन।

ज़हरः-ए-अब्र – बादल का पित्ता।

आब – पानी।

शो'लः-ए-जव्वालः (शो'अलः अशुद्ध है) – नाचता हुआ शो'लः जैसे मश'अल के घुमाने से आग का चक्कर बन जाये।

हल्क़ः-ए-गिरदाब – भँवर का चक्कर।

२ करम – कृपा, करुणा। मतलब है करीम (कृपालु)

'उज़्र-ए-बारिश – पानी बरसने का बहानः।

'अिनाँगीर-ए-ख़िराम – ('अिनाँगीर–लगाम पकड़नेवाला, रोकने वाला। ख़िराम–मन्द गति) मा'शूक़ का रास्तः रोकनेवाला।

गिरियः – रोना।

पँबः-ए-बालिश – तकिये की रुई।

कफ़-ए-सैलाब – पानी का झाग।

३ ख़ुद आराई – अपने आप को सजाना, शृंगार।

हुजूम-ए-अश्क – आँसुओं का तूफ़ान।

तार-ए-निगह – नज़र का डोरा (जिसमें आँसुओं के मोती हों)

नायाब – अप्राप्य, अलभ्य।

४ जल्वः-ए-गुल – (जल्वः–दर्शन, कान्ति, छबि) फूलों की बहार।

चराग़ाँ – दीपोत्सव, दीपावली।

आब-ए-जू (आब जू ग़लत है) – जल धारा।

रवाँ – बहता हुआ, प्रवहमान।

मिश़गान-ए-चश्म-ए-तर – भीगी हुई आँखों की पलकें, आँसू भरी पलकें।

ख़ून-ए-नाब – खालिस ख़ून।

५ सर-ए-पुरशोर – उन्माद से भरा हुआ सर।

बेख़्वाबी – उन्निद्रा।

दीवार जू – दीवार की तलाश में।

फ़र्क़-ए-नाज़ – मा'शूक़ का सर।

महव-ए-बालिश-ए-कमख़्वाब – कमख़्वाब के तकिये में खोया हुआ, या धँसा हुआ।

६ नफ़स – साँस (अर्थात् ऐसा साँस जिससे चिनगारियाँ निकल रही हों)

शम्'-ए-बज़्म-ए-बेख़ुदी (शम'अ अशुद्ध है) – (बेख़ुदी–किसी ख़याल में खो जाना, अपने आप में न रहना, आत्म-विस्मृति) बेख़ुदी की महफ़िल का चराग़।

जल्वः-ए-गुल – फूलों की बहार।

बिसात-ए-सोहबत-ए-अहबाब – दोस्तों की महफ़िल का फ़र्श।

७ फ़र्श – बिछाने की चीज़, ज़मीन।

'अर्श – आकाश।

मौज-ए-रँग – रँग की लहर।

सोख़्तन का बाब – जलने की हालत।

८ नागहाँ – अचानक।

रँग – तरह, प्रकार।

ख़ूँनाबः – ख़ून।

ज़ौक़-ए-काविश-ए-नाख़ुन – (ज़ौक़–स्वाद, आनन्द। काविश–प्रयत्न, प्रयास)

लज़्ज़तयाब – मज़ः पानेवाला, आनन्द लेनेवाला।

१६

१ नालः-ए-दिल – (नालः–आर्तनाद) दिल का नालः।

शब – रात, यामिनी, रजनी।

अन्दाज़-ए-असर – (अन्दाज़–शैली। असर–प्रभाव) मतलब सिर्फ़ असर है।

नायाब – अप्राप्य, अलभ्य।

सिपन्द-ए-बज़्म-ए-वस्ल-ए-ग़ैर – (सिपन्द–काला दाना जिसे टोने टोटके के लिये आग में फेंकते हैं।)

२ मक़्दम-ए-सैलाब – (मक़्दम–आगमन, आमद। सैलाब–जलप्लावन, बाढ़।

नशात आहँग (निशात अशुद्ध है) – (नशात–हर्ष। आहँग–संगीतमय, स्वर) उल्लसित।

ख़ानः-ए-'आशिक़ – 'आशिक़ का घर।

मगर – शायद।

साज़-ए-सदा-ए-आब – बहते पानी की आवाज़ का साज़–जलतरँग।

३ नाज़िश-ए-अय्याम-ए-ख़ाकिस्तर नशीनी – (नाज़िश–गर्व। अय्याम–दिन, ज़मानः। ख़ाकिस्तर नशीनी–राख या ख़ाक पर बैठना) विनय के दिनों का गर्व।

पहलु-ए-अन्देशः – कल्पना की करवट।

वक़्फ़-ए-बिस्तर-ए-संजाब – (वक़्फ़–समर्पण। संजाब–एक जानवर की

मुलायम बालों की खाल) संजाब की कोमल सेज पर समर्पित।

४ **जुनून-ए-नारसा** – कच्चा उन्माद, नाक़िस 'अिश्क़।

रूकश-ए-ख़ुर्शीद-ए-'आलम ताब – दुनिया को चमका देनेवाले सूरज की तरह चमकदार।

५ **असीरों** – असीर का बहुवचन, क़ैदियों।

मेहर-ओ-वफ़ा का बाब – प्रेम और निबाह का अध्याय।

६ **हल्क़ः** – जाल का फन्दा।

दाम – जाल।

इन्तिज़ार-ए-सैद – शिकार का इन्तिज़ार।

दीदः-ए-बेख़्वाब – उन्निद्र नयन।

७ **बगरनः** – वर्नः।

सैल-ए-गिरियः – अश्रु-प्लावन।

गर्दूं – गगन, आकाश।

कफ़-ए-सैलाब – जलप्लावन से उत्पन्न झाग।

१७

१ **वदी'अत-ए-मिश़गान-ए-यार** – यार (मा'शूक़) की पलकों की दी हुई अमानत, धरोहर।

२ **मातम-ए-यक शहर-ए-आर्ज़ू** – कामना नगरी के उजड़ने का मातम। (यक शहर-ए-आर्ज़ू – इतनी कामनायें जिनसे एक शहर बस जाये)।

तिमसालदार – चित्रमय (तिमसालदार आईनः–चित्रमय दर्पण)

३ **ना'श** (न'अश ग़लत है) – लाश।

जाँदादः-ए-हवा-ए-सर-ए-रह गुज़ार – (जाँदादः-दिलदादः आसक्त। हवा–कामना, आर्ज़ू। सर-ए-रह गुज़ार–मार्ग, पत्थर) गली गली, डगर डगर घूमने की कामना का मारा हुआ।

४ **मौज-ए-सराब-ए-दश्त-ए-वफ़ा** – (मौज–लहर। सराब–मृगजल। दश्त–मरुस्थल। वफ़ा–प्रेम का निर्वाह) प्रेम निर्वाह के मरुस्थल में मृगजल की लहर।

मिस्ल-ए-जौहर-ए-तेग़ – तलवार के जौहर की तरह।

आबदार – चमकता हुआ, तेज़ धार वाला।

५ **ग़म-ए-'अिश्क़** – प्रेम का दुख, प्रेम की चिन्ता।

ग़म-ए-रोज़गार – दुनिया का दुख, दुनिया की चिन्ता।

१८

१ **मुश्किल** – दुश्वार, कठिन।

२ **गिरियः** – रोना।

काशानः – घर।

बयाबाँ – जंगल, वीरानः।

३ **वाय दीवानगि-ए-शौक़** – (वाय–हाय) शौक़ का दीवानःपन।

अभिलाषा की अधिकता।

हर दम – हर घड़ी, हर वक़्त।

हैराँ – चकित।

४ **जलवः** – दर्शन, कान्ति, छवि।

अज़बसाकि – बहुत शिद्दत से, अतिशय।

तक़ाज़ा-ए-निगह – निगाह का तक़ाज़ा। देखे जाने की इच्छा।

जौहर-ए-आइनः – आईने का जौहर (फ़ौलाद के आईने साफ़ कर के काम में लाये जाते थे। इस तरह उन पर जो लकीरें पड़ती थीं उन्हें जौहर कहते थे)

मिश़गाँ – पलकें, दृगाँचल।

५ **'अिश्रत-ए-क़त्ल गह-ए-अह्ल-ए-तमन्ना** – ('अिश्रत–आनन्द। क़त्ल गह – वधस्थल। अह्ल-ए-तमन्ना – अभिलाषी, वह लोग जिन के सामने जीवन का कोई आदर्श हो) वधस्थल में अभिलाषियों का आनन्द।

'ओद-ए-नज़्ज़ारः – नज़्ज़ारे की 'ओद। अवलोकन का त्यौहार।

शमशीर – तलवार। [तलवार 'ओद के चाँद की तरह होती है]

'अुरियाँ – नँगा।

६ **दाग़-ए-तमन्ना-ए-नशात** (निशात ग़लत है) (दाग़ – दिल पर असफलता का काला निशान, दुख की जलन का चिह्न) हर्ष की कामना का दुख।

बसद रँग – सैकड़ों रँग से। सैकड़ों तरहसे।

गुलिस्ताँ – बाग़, हरा भरा, फला फूला।

७ **'अिश्रत-ए-पारः-ए-दिल** – दिल के टुकड़ों का आनन्द।

ज़ख़्म-ए-तमन्ना – कामना का घाव (जो कामना पूरी न हो वह ख़ुद एक घाव है।)

लज़्ज़त-ए-रीश-ए-जिगर – जिगर के ज़ख़्म का स्वाद।

ग़र्क़-ए-नमकदाँ – नमकदान में डूबना।

८ **जफ़ा** – निर्दयता, अन्याय। [इस शे'र में बा'द, ग़लती से ब'अद छपा है]

तौबः – किसी अनुचित काम को भविष्य में न करने की प्रतिज्ञा।

ज़ूद पशेमाँ – शीघ्र लज्जित होजानेवाला।

९ **हैफ़** – पश्चाताप, अफ़सोस।

१९

१ **शब** – रात, रजनी, यामिनी।

ख़ुमार-ए-शौक़-ए-साक़ी – वह मदिरालस जो साक़ी को न पाकर पैदा हुआ और इसलिये साक़ी का शौक़ और बढ़ गया।

रस्तख़ेज़ अन्दाज़ः – क़यामत का नमूनः।

ताम़ुहीत-ए-बादः – मदिरा की परिधि तक।

सूरत ख़ानः-ए-ख़मियाज़ः – अँगड़ाइयों का तस्वीर-घर।

२ **यक क़दम वहशत** – वहशत का एक या पहला क़दम।

दर्स-ए-दफ़्तर-ए-इम्काँ – सम्भावनारूपी पुस्तक का पाठ [संसार को आलम-ए-इम्काँ या'नी सम्भावना का जगत कहते हैं]

जादः – रास्तः, मार्ग।

अज्ज़ा-ए-दो 'आलम दश्त – दो दुनियाओं का अंश, एक दश्त के दो भाग, दो संसार।

शीराज़ः – बिखरी हुई चीज़ों की एकत्रता, बन्धन।

३ माने'-ए-वहशत खिरामीहा-ए-लैला (मानें अ अशुद्ध है) – (मानें– बाधक निषेधक। वहशत खिरामी–शौक़ और चाव की अधिकता, दीवानों की तरह चलना। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) लैला को वहशत खिरामी से रोकनेवाला।

ख़ानः-ए-मजनून-ए-सहरा गर्द – जंगल में आवारा घूमने वाले मजनूँ का घर।

बे दरवाज़ः – जिसमें दरवाज़ः न हो। पास्बाँ या द्वारपाल न हो।

४ रुस्वाइ-ए-अन्दाज़-ए-इस्तिग़ना-ए-हुस्न – (रुस्वाई–अनादर, तिरस्कार। अन्दाज़–शान। इस्तिग़ना–निस्पृहता। ए–इज़ाफ़त। हुस्न– सौन्दर्य, मा'शूक़) सौन्दर्य की निस्पृहता की शान का तिरस्कार।

दस्त – हाथ।

मरहून-ए-हिना – मेंहदी का आभारी।

रुख़्सार – गाल, कपोल।

रेहून-ए-ग़ाज़ः – ग़ाज़ः (पावडर) का आभारी।

५ नालः-ए-दिल – (नालः–आर्तनाद) दिल का नालः।

औराक़-ए-लख़्त-ए-दिल – दिल के टुकड़ों के वर्क़ (पृष्ठ)

ब बाद – हवा को।

यादगार-ए-नालः – आर्तनाद की स्मृति।

दीवान-ए-बेशीराज़ः – बिखरा हुआ संकलन।

२०

१ ग़म ख़्वारी – सहानुभूति, तीमारदारी।

स'अ्इ – कोशिश, प्रयत्न, प्रयास (सहायता)

२ बे नियाज़ी – निस्पृहता।

बन्दः परवर – दीन पालक, महोदय।

३ हज़रत-ए-नासेह – उपदेशक महाशय ("हज़रत" में व्यंग है)

दीदः-ओ-दिल – नयन और मन।

फ़र्श-ए-राह – रास्ते में बिछे हुए।

४ जुनून-ए-'अिश्क़ – प्रेम का उन्माद, प्रेमोन्माद।

अन्दाज़ – तरीक़े।

५ ख़ानः ज़ाद-ए-ज़ुल्फ़ – (खानः ज़ाद–गृहजात, गृह-पालित। ज़ुल्फ़– अलक) ज़ुल्फ़ों का बन्दी।

गिरफ़्तार-ए-वफ़ा – (वफ़ा–प्रेम निर्वाह) प्रेम के निर्वाह में फँसे हुए।
ज़िन्दाँ – क़ैदखाना।

६ मा'मूरे (म'अमूरे अशुद्ध है) – बस्ती, आबादी, नगरी।

क़हत-ए-ग़म-ए-उल्फ़त – प्रेम के दुखों का अकाल।

२१

१ विसाल-ए-यार – पिया मिलन। प्रिय-मिलन।

२ वा'दे – (व'अदे ग़लत है) वचन।

ए'तिबार ('एतिबार ग़लत है) विश्वास।

३ 'अहद – प्रतिज्ञा, इक़रार, वचन।

बोदा – कच्चा, कमज़ोर।

उस्तुवार – मज़बूत, दृढ़, पुष्ट।

४ तीर-ए-नीम कश – आधा खिंचा हुआ तीर, वह तीर जिसे चलाने में धनुष आधा खींचा गया हो, कमज़ोर तीर।

ख़लिश – खटक, चुभन, वेदना।

५ चारःसाज़ – उपचारक, चिकित्सक।

ग़म गुसार – सहानुभूतिकर्ता, हितैषी, दुख बँटानेवाला।

६ रग-ए-संग – पत्थर की नस।

शरार – चिनगारी।

७ जाँ गुसिल – कष्टदायक, दुखदायी, जान लेवा।

ग़म-ए-'अिश्क़ – प्रेम का दुख, चिन्ता, संताप।

ग़म-ए-रोज़गार – दुनिया का दुख, चिन्ता, संताप।

८ शब-ए-ग़म – ग़म की रात।

९ रुस्वा – निन्दित, ज़लील, बदनाम।

ग़र्क़-ए-दरिया – (गर्क़–निमज्जित। दरिया–समुद्र) पानी में डूबा हुआ।

१० यगानः – अनुपम।

यक्ता – अद्वितीय।

दुई – द्वैत।

दुचार – आमना-सामना।

११ मसाइल-ए-तसव्वुफ़ – तसव्वुफ़ (भक्ति) की समस्याएँ।

बयान – वर्णन।

वली – ऋषि, मुनि।

बादःख़्वार – शराबी, मद्यप।

२२

१ हवस – तृष्णा, लालसा (आकांक्षा)

नशात-ए-कार – (निशात ग़लत है) (नशात–हर्ष। कार–काम) कार्य– आनन्द, काम करने की उमँग।

२ तजाहुल-पेशगी – जान बूझकर अनजान बनना।

मुद्द'आ – मतलब, उद्देश्य।

सरापानाज़ – रूपगर्विता (मा'शूक़)

३ **नवाज़िशहा-ए-बेजा** – (नवाज़िश–अनुकम्पा, कृपा। हा–बहुवचन। ए-इज़ाफ़त) अनुचित कृपाएँ।

शिकायतहा-ए-रंगीं – (हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) रँगीन शिकायतें।

गिला – शिकवः, उलाहना।

४ **निगाह-ए-बेमहाबा** – निःसंकोच या बेधड़क दृष्टि।

तग़ाफ़ुलहा-ए-तम्कीं आज़मा – सन्तोष की परीक्षा लेनेवाली गफ़लत।

५ **फ़रोग़-ए-शो'लः-ए-ख़स** – (शो'अलः अशुद्ध है) घास फूस के शो'ले की चमक।

यक नफ़स – एक साँस या'नी पलभर।

पास-ए-नामूस-ए-वफ़ा – (पास–आदर। नामूस–सतीत्व। वफ़ा–प्रेम का निर्वाह) प्रेम के सतीत्व का आदर।

६ **नफ़स** – साँस।

मौज-ए-मुहीत-ए-बेख़ुदी – आत्मविस्मृति की व्यापकता (समुद्र) की लहर।

तग़ाफ़ुलहा-ए-साक़ी – साक़ी की ग़फ़लत।

७ **दिमाग़-ए-'अित्र-ए-पैराहन** – (दमाग़) वस्त्र में लगे हुये 'अित्र की संज्ञा और सहन।

ग़म-ए-आवारगीहा-ए-सबा – (आवारगी–कुचाल, निरुद्देश्य भ्रमण) प्रभात समीर की आवारगी का सताप।

८ **दिल-ए-हर क़तरः** – हर बूँद का दिल।

साज़-ए-अनल बह्र – (साज़–आवाज़, नाद। अनल बह्र–मैं सागर हूँ) "मैं सागर हूँ" का संगीत।

९ **महाबा** – लिहाज़, मुरव्वत, शील संकोच। यहाँ मतलब है–फ़िक्र, चिन्ता।

ज़ामिन – प्रतिभू, ज़मानतदार।

शहीदान-ए-निगह – निगाहों के क़त्ल किये हुए, निगाहों के मारे हुए लोग।

ख़ूँबहा – ख़ून की क़ीमत (पुराने ज़माने में प्रथा थी कि ख़ून की क़ीमत देकर ख़ून मु'आफ़ कराया जा सकता था।

१० **ग़ारतगर-ए-जिन्स-ए-वफ़ा** – प्रेम निर्वाह का लूटनेवाला, प्रेम विनाशक।

शिकस्त-ए-क़ीमत-ए-दिल – (क़ीमत–क़द्र, मूल्य) दिल की क़ीमत का टूटना, दिल का टूटना।

सदा – ध्वनि, आवाज़।

११ **जिगरदारी** – सहनशीलता।

शिकेब-ए-ख़ातिर-ए-'आशिक़ – (शिकेब–धैर्य। ख़ातिर–दिल, मन) प्रेमी के मन का धैर्य।

१२ **क़ातिल** – जान लेवा।

वा'दः-ए-सब्र आज़मा – सब्र (संतोष) की परीक्षा लेनेवाला वा'दः।

काफ़िर – जो किसी मूल्य और आदर्श को न माने।

फ़ित्नः-ए-ताक़त रुबा – शक्ति छीन लेनेवाली आपत्ति।

१३ **बला-ए-जाँ** – (बला–विपत्ति। जान–प्राण) जान की मुसीबत।

'अिबारत – लिखने का ढँग, लेख–शैली।

इशारत – इशारः, संकेत।

अदा – वर्णन, हाव–भाव।

२३

१ **दरख़ुर-ए-क़ह्र-ओ-ग़ज़ब** – प्रकोप और आपत्ति के योग्य।

२ **बन्दगी** – ईश–वन्दना।

आज़ादः-ओ-ख़ुदबीं – मन मौजी और अभिमानी।

दर-ए-का'बः – का'बे का दरवाज़ः।

वा – खुला।

३ **मक़बूल** – स्वीकृत।

यक्ताई – अद्वितीयता।

रूबरू – सन्मुख।

बुत-ए-आइनः-सीमा – दर्पण की तरह चमकते हुये मुखड़ेवाला हसीन (बुत–हसीन, रूपसी)

४ **नाज़िश-ए-हमनामि-ए-चश्म-ए-ख़ूबाँ** – (नाज़िश–गर्व। हमनामी–समनामता। चश्म-ए-ख़ूबाँ–मा'शूक़ की आँख) मा'शूक़ की आँख के समान होने का गर्व। (मा'शूक़ की आँख को अधखुली होने की वजह से बीमार कहा जाता है।)

५ **दाग़** – दुख की जलन का चिह्न, दिलपर असफलता का काला निशान।

नालः – आर्तनाद।

लब – होंट, अधर।

ख़ाक – मिट्टी।

रिज़्क़ – (जीविका, रोज़ी) खाने की चीज़।

क़तरः – बूँद।

दरिया – समुद्र।

६ **फ़ित्नः** – उपद्रव।

बरपा – उपस्थित।

७ **बुन-ए-मू** – बाल की जड़।

ख़ून-ए-नाब – ख़ालिस ख़ून, ख़ून की धार।

हम्ज़ः का क़िस्सः – एक लम्बी कहानी जो दास्तान-ए-अमीर हम्ज़ः के नाम से प्रसिद्ध है।

८ **दज्लः** – 'अिराक़ की एक नदी का नाम, मतलब कोई भी नदी।

जुज़्व – अंश, व्यष्टि।

कुल – सम्पूर्ण, समष्टि।

दीदः-ए-बीना – द्रष्टा नयन।

२४

१ **जुनूँ जौलाँ** – पागलपन में मारा मारा फिरनेवाला।

गदा-ए-बेसर-ओ-पा – (गदा–फ़क़ीर। ए-इज़ाफ़त) बे ठिकाना फ़क़ीर।

सर पंजः-ए-मिशगान-ए-आहू – हिरन की पलकों का पंजः।

पुश्त खार – (पुश्त-ए-खार ग़लत है) पीठ खुजाने के लिये हाथ के पंजे की आकृति की लकड़ी।

२५

१ पै-ए-नज़्र-ए-करम – (नज़र ग़लत है) (नज़्र–उपहार। करम–कृपा, करुणा, दानशीलता। यहाँ मतलब है–कृपालु) कृपालु या'नी खुदा के लिये भेंट।

शर्म-ए-नारसाई – पास न पहुँच सकने की लज्जा।

बखूँ ग़ल्तीदः-ए-सदरँग – खून में सौ तरह लिथड़ा हुआ। खून में लतपत।

पारसाई – पवित्रता।

२ हुस्न-ए-तमाशा दोस्त – तमाशे को पसन्द करनेवाला हुस्न (मा'शूक़)

रुस्वा – निन्दित, बदनाम।

बमुहर-ए-सद नज़र – सैकड़ों निगाहों की मुहर से।

३ ज़कात-ए-हुस्न – सुन्दरता का दान।

अय जल्वः-ए-बीनिश – (बीनश ग़लत है) अय आँखों के नूर। दृष्टि को अपनी ज्योति से चमकानेवाले।

मेहर आसा – सूरज की तरह।

चराग़-ए-खानः-ए-दर्वेश – भिखारी के घर का दिया।

कासः – प्यालः।

गदाई – फ़क़ीरी, भिखमँगापन।

४ बेजुर्म – निर्दोष।

क़ातिल – क़त्ल करनेवाला, (मा'शूक़)

मानिन्द-ए-खून-ए-बेगुनह – निष्पाप के खून की तरह।

आश्नाई – दोस्ती। (तूने मुझे निर्दोष समझ कर मेरा खून नहीं किया मगर दोस्ती के हक़ का खून कर दिया और यह खून तेरी गर्दन पर है।)

५ तमन्ना-ए-ज़बाँ – ज़बान की कामना (वाक शक्ति की इच्छा)

महव-ए-सिपास-ए-बेज़बानी – मूकता की प्रशसा में रत।

तक़ाज़ा – अभियाचन।

शिकवः-ए-बेदस्त-ओ-पाई – मजबूरी और चालाकी की शिकायत।

६ नफ़स – साँस।

नकहत-ए-गुल – फूल की खुशबू, पुष्प-सौरभ।

जल्वः – दर्शन, कान्ति, छवि।

बा'इस – कारण।

रँगीं नवाई – स्वर-मोहकता (रँगीन का शब्द चमन के सम्बन्ध से है)

७ दहान-ए-हर बुत-ए-पैग़ाराजू – हर ता'नः देने वाले और लड़ाका मा'शूक़ का मुंह।

ज़ंजीर-ए-रुस्वाई – निन्दा और बदनामी की ज़ंजीर।

'अदम – यमलोक, अनस्तित्व, दूसरी दुनिया।

बेवफ़ा – जो मित्रता का निर्वाह न करे।

८ नामे – नामः, खत, चिट्ठी।

तूल – विस्तार।

मुख्तसर – सक्षिप्त।

हस्रत संज – आर्जूमन्द, इच्छुक।

अर्ज़-ए-सितमहा-ए-जुदाई – विरह के अत्याचार की शिकायत।

२६

१ अन्दोह-ए-शब-ए-फ़ुर्क़त – विरह-यामिकी व्यथा।

बयाँ – वर्णन।

दाग़-ए-मह – चन्द्र-कलंक।

मुहर-ए-दहाँ – मुँह की मुहर।

२ ज़हरः – पित्ता।

शाम-ए-हिज्र – विरह-संध्या।

आब – पानी।

परतव-ए-महताब – चाँद की आभा या'नी चाँदनी।

सैल-ए-खानमाँ – घर में घुस आने वाला सैलाब।

३ बोसः – चुम्बन।

काफ़िर – मा'शूक़ के लिये प्यार का शब्द, तीखा, किसी को न मानने वाला।

बदगुमाँ – सन्देहशील।

४ हर्फ़-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह में काम आने वाला।

नज़्र-ए-इम्तिहाँ – परीक्षक की भेंट।

६ निगाह-ए-गर्म – तप्त दृष्टि, रोष की दृष्टि।

फ़रमाती रही – देती रही।

ता'लीम-ए-ज़ब्त – सहनशीलता की शिक्षा।

खस – तृण।

निहाँ – निहित।

७ गुल-ए-तर – ओस में भीगा हुआ फूल।

चश्म-ए-खूँफ़िशाँ – खून के आँसू बरसाती हुई आँख।

८ वाय – हा हन्त।

महशर – प्रलय, क़यामत।

तवक़्क़ो'अ – उम्मीद, आशा।

९ दाना – ज्ञानी।

नादाँ – अज्ञानी।

ज़ियाँ – हानि, नुक़सान।

२७

१ मिन्नत कश-ए-दवा – दवा का आभारी।

२ रक़ीब – प्रतिद्वन्दी, दुश्मन।

गिला – शिक़्वः, शिकायत, उलाहना।

३ खंजर आज़्मा – खंजर आज़्माने वाला, खंजर चलाने वाला।

४ शीरीं – मीठा, मीठे।

लब – होंट, अधर।

६ नमरूद – एक पुराना बादशाह जो अपने आप को खुदा कहता था।

बन्दगी – ईश वन्दना।

८ रवा – जारी।

९ रहज़नी – लूटमार, डकैती।

दिलसितानी – मा,शूक़ी।

दिलसिताँ – मा'शूक़।

१० ग़ज़ल सारा – ग़ज़ल सुनाने वाला।

२८

१ तँगि-ए-जा – जगह की कमी।

गुहर – मोती।

महव – गुम, लीन।

इज़्तिराब – तड़प, बेचैनी।

२ पासुख़-ए-मक्तूब – खत का जवाब, पत्रोत्तर।

सितमज़दः – अत्याचार का मारा हुआ।

ज़ौक़-ए-ख़ामः फ़रसा – क़लम चलाने का शौक़। लिखने की लत।

३ हिना-ए-पा-ए-ख़ज़ाँ – (खिज़ाँ ग़लत है)(ख़ज़ाँ–हेमन्त ऋतु, पतझड़) ख़ज़ाँ के पाँव की मेंहदी।

दवाम – हमेशः, नित्य, शाश्वत।

कुल्फ़त-ए-ख़ातिर – मन का क्लेश।

'ऐश – आनन्द, विलास।

४ ग़म-ए-फ़िराक़ – विरह-संताप।

तकलीफ़-ए-सैर-ए-बाग़ – बाग़ में घूमने की तकलीफ़।

दिमाग़ – बर्दाश्त, सह्रा, सहन।

ख़न्दःहा-ए-बेजा – (ख़न्दः–हँसी। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) बेतुकी हँसी।

५ हनोज़ – अभी, अभी तक।

महरमि-ए-हुस्न – सौन्दर्य से परिचय।

बुन-ए-मू – बाल की जड़, रोम-कूप।

चश्म-ए-बीना – देखनेवाली आँख, द्रष्टा नयन।

७ गिरियः – रोना, रुदन।

अ मिक़्दार-ए-हस्रत-ए-दिल – हार्दिक कामना का परिमाण।

निगाह – आँख।

जम'-ओ-ख़र्च – जम'अ और खर्च या'नी हिसाब।

दरिया – समुद्र।

८ फ़लक – आसमान, आकाश, तक़्दीर, भाग्य।

जफ़ा – निर्दयता, निर्मोह।

अन्दाज़ – हावभाव।

कारफ़र्मा – हाकिम, मा'शूक़।

२९

१ क़तरः-ए-मै – शराब की बूँद।

हैरत – आश्चर्य, विस्मय।

नफ़स परवर – रूह परवर, जीवनदाता।

ख़त्त-ए-जाम-ए-मै – शराब के प्याले की रेखा।

सरासर – एक सिरे से दूसरे सिरे तक, अत्यन्त, बिल्कुल।

रिश्तः-ए-गौहर – मोतियों की लड़ी, जिस धागे में मोती पिरोये गये हों।

२ ए'तिबार-ए-'इश्क़ – प्रेम का विश्वास, प्रेम की साख।

ख़ानः ख़राबी – गृहविनाश, तबाही।

ग़ैर – दुश्मन, रक़ीब।

३०

१ बतक़रीब-ए-सफ़र – सफ़र के लिये, यात्रा के लिये।

यार – दोस्त, मित्र, मा'शूक़।

महमिल – ऊँट की काठी।

तपिश-ए-शौक़ – आकांक्षा की गर्मी, शौक़ की ज़्यादती।

२ अहल-ए-बीनिश – आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

ब हैरतकदः-ए-शोख़ि-ए-नाज़ – (हैरतकदः–विस्मय और आश्चर्य की मंज़िल। शोखि-ए-नाज़–हुस्न की चंचलता) हुस्न की चंचलता से उत्पन्न विस्मय की स्थिति में पहुँचकर।

जौहर-ए-आइनः – (लोहे के आइने को माँझकर चमकाया जाता है। उसकी चमक को जौहर कहते हैं। इसमें हल्की सी हरियाली होती है) आइने का जौहर।

तूति-ए-बिस्मिल – ज़ख़्मी तूती (छोटी जात का तोता) जिसे आइने के सामने बिठाकर बोलना सिखाते हैं।

(यह तसव्वुफ़ (भक्ति) का शे'र है। ग़ालिब ने हुस्न को आइनः और उसके गुण को जौहर (आइने की चमक) कहा है और ग़मों से चूर दुनिया को ज़ख़्मी तूती)

३ यास-ओ-उम्मीद – आशा और निराशा।

यक 'अरबदः मैदाँ – ('अरबदः–युद्ध, लड़ाई) इतना बड़ा मैदान जिसमें लड़ाई हो सके।

'अिज्ज़-ए-हिम्मत – ('अज्ज़) साहस की नम्रता।

तिलिस्म-ए-दिल-ए-साइल – हाथ फैलानेवाले के दिल का इन्द्रजाल।

४ तश्नगि-ए-ज़ौक़ – जौक़ (रस, आनन्द, अभिलाषा) की प्यास।

मज़मूं – विषय।

साहिल – कनारः, तट।

३१

१ बज़्म-ए-मै – शराब की महफ़िल, मैखानः, मदिरालय।

तश्नःकाम – प्यासा।

२ जुदा – अलग।

३ दर्मान्दगी – बेचारगी, परीशानी, क्लेश, दुख।

रिश्तः – सूत्र, सम्बन्ध।

बेगिरह – बिना गाँठ का।

गिरह कुशा – गाँठ खोलनेवाला।

३२

१ वीरानः – निर्जन, उजाड़।

बहूर – समुद्र।

बयाबाँ – जँगल, रेगिस्तान, उजाड़ मैदान।

२ तँगि-ए-दिल – ग़म, परीशानी।

३ बा'द-ए-यक'अुम्र-ए-वर'अ – जीवनभर की निस्पृहता और सँयम के बा'द।

बार देता – अन्दर जाने की इजाज़त देता।

बारे – अल्बत्तः, अवश्य।

रिज़्वाँ – जन्नत के दरबान का नाम।

दर-ए-यार – मा'शूक़ का दरवाज़ः।

३३

२ बेहिस – स्तब्ध, सुन्न।

ज़ानू – घुटना।

३ मुद्दत – समय।

३४

१ यक ज़र्रः-ए-ज़मीं – धरती का एक भी ज़र्रः (कण)

जादः – पथ, मार्ग।

फ़तीलः – बत्ती।

लाले – सुर्ख रँग का कटोरे की तरह का फूल जिसमें काला धब्बा होता है। अहि पुष्प।

२ बे मै – शराब के बिग़ैर, बिना मदिरा के।

ताक़त-ए-आशोब-ए-आगही – चिन्ता की दी हुई अशान्ति को सहन करने की शक्ति।

'अिज्ज़-ए-हौसलः – ('अज्ज़) साहस की नम्रता।

ख़त – लकीर, रेखा।

अयाग़ – प्यालः।

३ ख़न्दःहा-ए-गुल – (ख़न्दः–हँसी। हा–बहुवचन। ए–इज़ाफ़त) फूल की हँसी।

ख़लल – ख़राबी।

४ ताज़ः – नया।

नश्शः-ए-फ़िक्र-ए-सुख़न – कविता की कल्पना का नशः।

तिरियाकि-ए-क़दीम – पुराना अफ़ीमची।

दूद-ए-चराग़ – चराग़ का धुआँ।

५ बन्द-ए-'अिश्क़ – प्रेम–बन्धन।

'अदू – दुश्मन, शत्रु।

फ़राग़ – मुक्ति।

६ बेखूँन-ए-दिल – दिल के ख़ून के बिग़ैर।

चश्म – आँख।

मौज-ए-निगह – निगाह की लहर। दृष्टि-तरंग, दृष्टि-हिलोल।

गुबार – धूल, गर्द, उड़ती हुई मिट्टी।

मैकदः – मदिरालय, शराब खानः।

ख़राब – निकृष्ट, दुर्दशाग्रस्त।

मै के सुराग़ का – शराब के कारण, शराब के होने से।

७ बाग़-ए-शिगुफ़्तः तेरा – तेरा खिला हुआ बाग़, तेरा फूलों से भरा हुआ बाग़, तेरा हुस्न।

बिसात-ए-नशात-ए-दिल – (निशात ग़लत है) मन के हर्ष की बुनियाद हृदय की प्रफुल्ता का आधार।

अब्र-ए-बहार – बहार का बादल, वसन्तऋतु का बादल।

ख़ुम कदः – शराब के मटके रखने की जगह। शराबखानः, मदिरालय।

३५

१ चीन-ए-जबीं – माथे का बल।

ग़म-ए-पिन्हाँ – छुपा हुआ ग़म, दिल का ग़म।

राज़-ए-मक्तूब – ख़त का भेद।

बबेरब्ति-ए-'अुन्वाँ – शीर्षक और विषय की कर्म-हीनता से।

२ यक अलिफ़ – (अलिफ़–उर्दू का पहिला अक्षर) एक अलिफ़।

बेश – ज़्यादः, अधिक।

सैक़ल-ए-आईनः – दर्पण को चमकाने के लिये माँजने की क्रिया।

हनोज़ – अभी, अभी तक।

चाक – फाड़ना।

३ शरह-ए-अस्बाब-ए-गिरफ़्तारि-ए-ख़ातिर – (शरह–व्याख्या अस्बाब–सबब का बहुवचन, कारण। गिरफ़्तारि-ए-ख़ातिर–मन का फँसना या'नी परीशानी, व्याकुलता) मन की व्याकुलता के कारण की व्याख्या।

ज़िन्दाँ – क़ैद ख़ानः।

४ बदगुमानी – मिथ्या-सन्देह।

सरगर्म-ए-ख़िराम – मन्दगतिलीन।

रुख़ – मुखड़ा, चेहरः।

हर क़तरः 'अरक़ – पसीने की एक-एक बूँद।

दीदः-ए-हैराँ – चकित नयन।

५ 'अिज्ज़ – ('अज्ज़) नम्रता।

बदख़ू – दुष्प्रकृति, दुःशील।

नब्ज़-ए-ख़स – (नब्ज़–नाड़ी) तृण।

तपिश-ए-शो'लः-ए-सोज़ाँ – ज्वलन्त शो'ले की तपन।

६ सफ़र-ए-'अिश्क़ – प्रेमयात्रा।

ज़ो'फ़ – दुर्बलता, अशक्ति।

राहत तलबी – सुख प्रियता, आलस्य प्रियता।

शबिस्ताँ – शयनागार।

७ गुरेज़ाँ – पलायित।

मिशः-ए-यार – प्रेयसी का दृगांचल।

तादम-ए-मर्ग – मरते समय तक।

दफ़्'-ए-पैकान-ए-क़ज़ा – मौत के तीर की नोक से बचना।

३६

१ दीदः-ए-तर – भीगे नयन।

जिगर तश्नः-ए-फ़रियाद – आर्तनाद का प्यासा।

२ क़यामत – (क़ियामत) प्रलय।

हनोज़ – अभी, अभी तक।

३ सादगीहा-ए-तमन्ना – कामना की सरलता।

नैरंग-ए-नज़र – दृष्टि पर पड़ा हुआ इन्द्रजाल या'नी मा'शूक़ जो सर से पाँव तक जादू ही जादू है–मायाविनी।

४ 'अुज़्र-ए-वामान्दगी – थकावट का बहाना।

हसरत-ए-दिल – हृदय की अभिलाषा।

५ राहगुज़र – रास्तः, मार्ग, पथ।

६ रिज़्वाँ – जन्नत का द्वारपाल।

ख़ुल्द – जन्नत, बिहिश्त, स्वर्ग।

७ जुरअत-ए-फ़रियाद – आर्तनाद का साहस, फ़रियाद करने की हिम्मत।

८ कूचे – (कूचः) गली।

ख़याल – कल्पना।

दिल-ए-गुमगश्तः – खोया हुआ दिल।

९ वीरानी – उजाड़पन।

दश्त – जँगल, उजाड़ मैदान।

१० सँग – पत्थर।

३७

१ ताख़ीर – देर।

बा'अिस-ए-ताख़ीर – देर की वजह, कारण।

'अिनाँगीर – लगाम पकड़ने वाला, रास्तः रोकने वाला।

२ शाइबः-ए-ख़ूबि-ए-तक़दीर – सौभाग्य की झलक।

३ फ़ितराक – शिकार या सामान रखने का थैला। (व्यँग है)

नख़्चीर – शिकार की हुई चीज़।

४ रँज-ए-गिराँ बारि-ए-ज़ंजीर – ज़ंजीर के भारी बोझ का दुख।

५ लब तश्नः-ए-तक़रीर – (लब तश्नः–प्यासे अधरों वाला) बातों का प्यासा।

६ यूसुफ़ – एक पैग़म्बर (अवतार) का नाम जो बहुत ख़ूबसूरत थे, सुन्दर, मनोहर, मा'शूक़।

लाइक़-ए-ता'ज़ीर – सज़ा के योग्य।

७ ग़ैर – दुश्मन, रक़ीब।

तालिब-ए-तासीर – प्रभाव का अभिलाषी।

८ फ़रहाद – एक 'आशिक़ जो अपनी मा'शूक़ः शीरीं के लिये पहाड़ काटने गया था।

आशुफ़्तःसर – हतबुद्धि।

जवाँमीर – जवानी में मरनेवाला।

९ तरकश – तूणीर, तीर रखने का चोंगा।

१० दम-ए-तहरीर – लिखते समय (कहते हैं कि फ़रिश्ते आदमी का कर्मपत्र लिखते रहते हैं)

११ रेख़्ते – (रेख़्तः) उर्दू भाषा का पुराना नाम – यहाँ मतलब उर्दू शा'अिरी से है।

३८

१ लब-ए-ख़ुश्क दर तश्नगी मुर्दगाँ – (दीवान में तश्नगी और मुर्दगाँ के बीच में जो उल्टा कामा लग गया है वह ग़लत है।) प्यास से मरनेवालों का सूखा हुआ होंट।

ज़ियारत कदः – (ज़ियारत–दर्शन। कदः–स्थान) तीर्थ स्थान।

दिल आज़ुर्दगाँ – दुखित चित्त।

२ हमः नाउमीदी – पूर्ण निराशा।

हमः बदगुमानी – पूर्ण मिथ्या सन्देह।

फ़रेब-ए-वफ़ा ख़ुर्दगाँ – जो प्रेम निर्वाह का धोका खाचुके हैं।

३९

मह-ए-नख़शब – नखशब का चाँद। नखशब तुर्किस्तान का एक शहर है जो हज़ार वर्ष पहिले ईरान का उत्तरी भाग था। वहाँ के किसानों के विद्रोह का एक बहुत बड़ा नेता अल् मुक़न्न'अ था जो अपने समय का बड़ा वैज्ञानिक भी था। उसने एक कृत्रिम चाँद बनाया था जो एक कुएँ से निकलता था और उसी में डूब जाता था। कहते हैं उसकी रौशनी मीलों तक फैलती थी। कुछ समय के बा'द वह चाँद खुद जल बुझा। इसलिये मह-ए-नखशब का मतलब है–निकृष्ट चाँद। ग़ालिबने मा'शूक़ के चेहरे के हुस्न के मुक़ाबिले में सूरज को नखशब का चाँद कहा है।

दस्त-ए-क़ज़ा – तक़दीर (ईश्वर-आज्ञा) का हाथ।

ख़ुर्शीद – सूरज।

हनोज़ – अभी, अभीतक।

उसके – मा'शूक़ के।

३ **तौफ़ीक़** – शक्ति, सामर्थ्य।

ब अन्दाज़ः-ए-हिम्मत – साहस के अनुमान के बराबर।

अज़ल – अनादिकाल, सृष्टिकाल।

गौहर – मोती।

४ **क़द-ए-यार** – यार (मा'शूक़) का क़द।

'आलम – शोभा, दशा, अवस्था।

मो'तक़िद-ए-फ़ितनः-ए-महशर – क़यामत की चपल आपत्ति का अनुयायी।

५ **सादः दिल** – सरल हृदय, सीधा सादः, भोला भाला।

आज़ुर्दगि-ए-यार – दोस्त (मा'शूक़) की उदासी।

सबक़-ए-शौक़ – प्रेम और चाव का पाठ।

मुकर्रर – दुबारः।

६ **दरिया-ए-म'आसी** – पाप का सागर।

तुनुक आबी – पानी की कमी।

ख़ुश्क – सूखा हुआ, शुष्क।

सर-ए-दामन – दामन का सिरा, दामन का कनारः।

तर – गीला, आर्द्र।

७ **जारी** – प्रवाहित, बहता हुआ।

तहसील – मालगुज़ारी, आमदनी।

आतशकदः – अग्निशाला, पूजा की आग रखने का स्थान, अगियारी, अग्निकुंड, अग्नि–मंदिर।

जागीर-ए-समन्दर – (समन्दर–एक कल्पित कीड़ा जो आग में पैदा होता है और आग में रहता है) अग्नि–कीट की जागीर।

४०

१ **शब** – रात्रि, रजनी, यामिनी।

मज्लिस फ़रोज़-ए-ख़ल्वत-ए-नामूस – (मज्लिस फ़रोज़ – महफ़िल को चमकानेवाला, महफ़िल की शोभा, ख़ल्वत–एकान्त, तन्हाई। नामूस–सतीत्व, 'अिस्मत) अपने शयनागार के एकान्त की शोभा।

रिश्तः-ए-हर शम्'अ – हर शम'अ की बत्ती।

ख़ार-ए-किस्वत-ए-फ़ानूस – (ख़ार-ए-किस्वत–कपड़े में चुभे हुए काँटे। फ़ानूस–शीशे की क़न्दील या झाड़ जिसमें बहुतसी मोमबत्तियाँ जलती हैं।) फ़ानूस के बदन में चुभता हुआ काँटा।

(महबूब के हुस्न के सामने फ़ानूस की रौशनी भी रश्क और हसद (ईर्ष्या) से बेचैन होगई जैसे उसके बदन में काँटे चुभने लगे हों)

२ **मशहद-ए-'आशिक़** – (मशहद–शहीद होने की जगह, बलिवेदी.) 'आशिक़ का मशहद।

हिना – मेंहदी।

यारब – अय ख़ुदा।

हलाक-ए-हस्रत-ए-पाबोस – पैर चूमने की अभिलाषा का मारा हुआ।

३ **हासिल-ए-उल्फ़त** – प्रेम का लाभ।

जुज़ शिकस्त-ए-आर्ज़ू – कामना की पराजय के सिवा।

दिल बदिल पैवस्तः – दिल से मिला हुआ दिल।

गोया – जैसे।

लब-ए-अफ़सोस – रंज और पछतावे के कारण बन्द होंट।

४ **बीमारि-ए-ग़म** – ग़म की बीमारी।

फ़राग़त – निश्चिन्तता।

बेमिन्नत-ए-कैमूस – (कीमूस ग़लत है) (कैमूस – पाचनक्रिया में जिगर का काम) पाचनक्रिया का अनाभारी।

४२

१ **'अर्ज़-ए-नियाज़-ए-'अिश्क़** – (नियाज़–आकांक्षा, श्रद्धा) प्रेमाकांक्षा की अभिव्यक्ति।

नाज़ – गर्व, अभिमान।

२ **दाग़-ए-हस्रत-ए-हस्ती** – जीवन की अभिलाषाओं का दाग़।

शम्'-ए-कुश्तः – बुझा हुआ चराग़।

दरख़ुर-ए-महफ़िल – महफ़िल के योग्य।

३ **शायान-ए-दस्त-ओ-बाज़ू-ए-क़ातिल** – क़ातिल के हाथों और भुजाओं द्वारा क़त्ल किये जाने के योग्य।

४ **बर रू-ए-शश जिहत** – (शश जिहत–छः दिशायें) ज़मीन और आस्मान के मुखपर (सामने)

दर-ए-आईनः – आइने का दरवाज़ः या'नी आइने का रुख (मुख)

बाज़ – खुला हुआ।

इम्तियाज़-ए-नाक़िस-ओ-कामिल – पूर्ण और अपूर्ण का फ़र्क़ (भेद)

५ था – उद्‌घटित, खुला हुआ।

शौक़ – अभिलाषा, चाव, प्रेमाकांक्षा।

बन्द-ए-निक़ाब-ए-हुस्न – (नक़ाब ग़लत है) हुस्न (मा'शूक़) की निक़ाब के बन्धन।

ग़ैर अज़ निगाह – दृष्टि के सिवा।

हाइल – बाधक।

६ गो – यद्यपि, अगरचे।

रहीन-ए-सितमहा-ए-रोज़गार – संसार के ज़ुल्म और अत्याचार का शिकार।

ख़याल – कल्पना, याद।

ग़ाफ़िल – असावधान।

७ हवा-ए-किश्त-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह की खेती लगाने की कामना।

हासिल – प्राप्ति, लाभ।

हसरत-ए-हासिल – लाभ की अभिलाषा।

बेदाद-ए-'अिश्क़ – प्रेम का ज़ुल्म (अत्याचार)

४३

१ रश्क – ईर्ष्या।

ग़ैर – रक़ीब, प्रेमक्षेत्र का प्रतिद्वन्दी।

इख़्लास – निस्वार्थता, मैत्री।

हैफ़ – पश्चात्ताप, धिक।

बे मेहर – निर्मोही।

आश्ना – दोस्त।

२ साग़र-ए-मैख़ानः-ए-नैरंग – इन्द्रजाल के पैदा किये हुये मदिरालय का प्यालः।

गर्दिश-ए-मजनूँ – मजनूँ की आवारागर्दी, मारे-मारे फिरना।

बचश्मकहा-ए-लैला – लैला की आँख के इशारे से।

आश्ना – वाक़िफ़, जाननेवाला, परिचित।

३ शौक़ – आकांक्षा।

सामाँ तराज़-ए-नाज़िश-ए-अर्बाब-ए-'अिज्ज़ – (सामाँतराज़–प्रबन्ध करनेवाला। नाज़िश–गर्व। अरबाब-ए-अिज्ज़–विनयशीलता के मालिक) विनयशील लोगों के गर्व का सामान करनेवाले।

ज़र्रः सहरा दस्तगाह-ओ-क़तरः दरिया आश्ना – हर कण अपनी जगह मरुस्थल का विस्तार लिये हुए है, और हर बूँद सागर की विशालता।

४ दिल-ए-वहशी – (वहशी–जंगली) बेताब (न ठहरनेवाला) दिल।

'आफ़ियत – शान्ति, कुशलता।

आवारगी – मारे मारे फिरना।

५ शिकवासँज-ए-रश्क-ए-हमदिगर – एक दूसरे से ईर्ष्या के कारण शिकायत करना।

ज़ानू – घुटना।

मूनिस – दोस्त, मित्र।

६ कोहकन – पहाड़ काटनेवाला–फ़रहाद, जिसकी माशूक़ः का नाम शीरीं था।

नक़्क़ाश-ए-यक तिम्साल-ए-शीरीं – शीरीं की छवि अंकित करनेवाला चित्रकार।

सँग – पत्थर।

४४

१ ज़िक्र – चर्चा, यशगान।

परीवश – परी चेहरः, ख़ूबसूरत, मा'शूक़।

बयाँ – वर्णन।

राज़दाँ – राज़ जाननेवाला, दोस्त, ग़मख़्वार।

२ बज़्म-ए-ग़ैर – दुश्मन की महफ़िल, रक़ीब का घर।

मंज़ूर – स्वीकृत।

इम्तिहाँ – परीक्षा।

३ मंज़र – दृश्य।

'अर्श – आकाश।

४ ज़िल्लत – तिरस्कार, अपमान।

बारे – आख़िरकार, अन्ततः।

आश्ना – जाननेवाला, दोस्त।

पास्बाँ – प्रहरी, दरबान, द्वारपाल।

५ फ़िगार – ज़ख़्मी, घायल।

ख़ामः – क़लम।

ख़ूँचकाँ – जिस से ख़ून टपक रहा हो।

६ 'अबस – बेकार, अकारण।

नँग-ए-सिज्दः – (सिजदः–माथा टेक कर प्रणाम करना (सिजदे का कलंक (सिजदे से पड़ा दाग़)

सँग-ए-आस्ताँ – देहलीज़ का पत्थर, दरवाज़े की चौखट।

७ ग़म्माज़ी – चुग़ली।

हम ज़बाँ – सहमत, सम्मिलित।

८ दाना – चतुर, बुद्धिमान।

हुनर – शिल्प, गुण।

यकता – अद्वितीय, बेमिस्ल।

४५

१ सुर्मः-ए-मुफ़्त-ए-नज़र – आँखों को मुफ़्त (बिना मूल्य) मिलनेवाला सुर्मः।

क़ीमत – मूल्य।

चश्म-ए-ख़रीदार – मोल लेनेवाले की आँख।

एहसान – उपकार, कृतज्ञता।

२ रुख़्सत-ए-नाल: – आर्तनाद की अनुमति (इजाज़त)

मबादा – ऐसा न हो।

ग़म-ए-पिन्हाँ – छुपा हुआ ग़म, दिल का दुख।

४६

१ ग़ाफ़िल – असावधान, निश्चेत।

ब वहम-ए-नाज़ – गर्व के भ्रम से।

ख़ुद आरा – स्वयं को बनाने सँवारनेवाला।

बे शानः-ए-सबा – प्रभात-समीर की कँघी के बिना।

तुर्रः – अलक, कलग़ी।

गियाह – घास।

२ बज़्म-ए-क़दह – प्यालों की महफ़िल, शराब नोशी (मदिरापान) की महफ़िल।

'ऐश-ए-तमन्ना – कामना-विलास।

रँग – वर्ण, मनोरंजन।

सैद-ए-ज़िदाम जस्तः – जाल से छूटकर भागा हुआ शिकार।

दामगाह – वह जगह जहाँ जाल बिछा हो।

३ रहमत – कृपा, दया। (ख़ुदा)

क़ुबूल – स्वीकार।

ब'औन् – दूर।

शर्मिन्दगी – लज्जाशीलता।

'उज़्र – क्षमायाचना।

गुनाह – पाप।

४ मक़्तल – वध-स्थल, बलिवेदी।

नशात – हर्ष।

पुर गुल – फूलों से भरा हुआ।

ख़याल-ए-ज़ख़्म – घाव की कल्पना।

दामन निगाह का – दृष्टि की गोद।

५ जाँ – जान, प्राण, मन।

दर हवा-ए-यक निगह-ए-गर्म – एक गर्म दृष्टि की आर्ज़ू में।

परवानः – आग में जलनेवाला पतँगा।

दाद ख़्वाह – न्याय माँगनेवाला।

४७

१ जौर – ज़ुल्म, अन्याय।

बाज़आना – किसी काम से हाथ खींचना, रुकजाना, त्यागना।

२ गर्दिश – चक्कर।

४ नामःबर – पत्र-वाहक।

५ मौज-ए-ख़ूँ – ख़ून की लहर।

आस्तान-ए-यार – दोस्त (मा'शूक़) की चौखट।

४८

१ लताफ़त – मृदुलता।

कसाफ़त – मलिनता।

जल्वः – दर्शन, छवि।

ज़ँगार – हरिकि (ताँबे का कसाव)

आईनः-ए-बाद-ए-बहारी – बहार की हवा का दर्पण।

२ हरीफ़-ए-जोशिश-ए-दरिया – समुद्र के ज्वार का मुक़ाबिलः करने वाला।

ख़ुद्दारि-ए-साहिल – तट का स्वाभिमान।

बातिल – मिथ्या।

पारसाई – संयम।

४९

१ 'इश्रत-ए-क़तरः – बूँद का ऐश्वर्य।

फ़ना – नष्ट, विलीन।

२ सूरत-ए-क़ुफ़्ल-ए-अबजद – (अबजद–वर्णमाला) अक्षरों के मेल से खुलने वाले ताले के समान।

जुदा – अलग।

३ कशमकश-ए-चारः-ए-ज़ेहमत – दिल के दर्द के उपचार का प्रयास।

तमाम – ख़त्म, मृत।

'उक़्दः – गाँठ।

वा – खुलना, खुला हुआ।

४ जफ़ा – निर्दयता, अत्याचार।

महरूम – वंचित।

दुश्मन-ए-अर्बाब-ए-वफ़ा – प्रेम का निर्वाह करने वालों ('आशिक़ों) का दुश्मन।

५ ज़ो'फ़ – निर्बलता, कमज़ोरी।

गिरियः – रोना, आँसू।

मुबद्दल बदम-ए-सर्द – ठण्डी आह में तब्दील (परिवर्तित)।

बावर – यक़ीन, विश्वास।

६ अँगुश्त-ए-हिनाई – मेंहदी लगी हुई उँगली।

७ अब्र-ए-बहारी – बहार की रुत का बादल, वसंत-मेघ।

ग़म-ए-फ़ुर्क़त – विरह का दुख, विरह-व्यथा।

फ़ना – नष्ट।

८ नक़्हत-ए-गुल – फूल की ख़ुशबू, पुष्प-सौरभ।

कूचः – गली।

हवस – लालसा।

गर्द-ए-रह-ए-जौलान-ए-सबा – पवन के रास्ते की धूल।

९ ए'जाज़-ए-हवा-ए-सैक़ल – परिष्कृति की अभिलाषा का चमत्कार।

सब्ज़ – हरा।

१० जल्वः-ए-गुल – फूल की छवि, फूल की बहार।

ज़ौक़-ए-तमाशा – अवलोकन का चाव।

चश्म – आँख।

वा – खुलना।

५०

१ बाल कुशा – उड़ने के लिए पर खोलना।

मौज-ए-शराब – मदिरा की तरंग।

बत-ए-मै – मदिरा की बतख (इससे मतलब है शराब की सुराही। एक भाष्यकारने लिखा है कि प्राचीन ईरान में अंगूरी शराब बनाने का यह तरीक़ा था कि अंगूरों को कुचल कर हौज़ में डाल दिया जाता था। सूरज की गर्मी से जब रस निकलने लगता और खमीर पैदा होजाता तो मिट्टी की मुँहबंद सुराहियाँ हौज़ में छोड़ दीजाती थीं। अंगूर का रस उनके छिद्रों में से छन-छन कर अंदर जमा होता रहता था और सुराहियाँ अंगूरी शराब से भर जाती थीं। इन सुराहियों को बत-ए-मै कहते थे)

दिल-ओ-दश्त-ए-शना – (दिल–साहस, हौसलः, दश्त–शक्ति) तैरने का साहस और शक्ति।

२ वज्ह-ए-सियह मस्ति-ए-अर्बाब-ए-चमन – (सियह मस्ती या बदमस्ती–अत्यधिक नशे की हालत) चमनवालों की सियह मस्ती का कारण।

सायः-ए-ताक – अंगूर-वेलि की छाँह।

३ ग़र्क़ः-ए-मै – शराब में डूबा हुआ।

बख़्त-ए-रसा – ख़ुश नसीब, सौभाग्य।

बाल-ए-हुमा – (हुमा–एक कल्पित पक्षी का नाम। कहते हैं कि उसके परों की छाया किसी के सर पर पड़ जाय तो वह बादशाह होजाता है) हुमा के फैले हुए पंख।

४ मौज-ए-हस्ती – जीवन की तरंग।

फ़ैज़-ए-हवा – हवा की उदारता।

५ तूफ़ान-ए-तरब – हर्ष का तूफ़ान।

हरसू – चारों ओर।

मौज-ए-गुल – फूलों की तरंग।

मौज-ए-शफ़क़ – अरुणोदय की तरंग।

मौज-ए-सबा – प्रभात समीर की तरंग।

६ रूह-ए-नबाती – वनस्पतियों की आत्मा।

जिगर तश्नः-ए-नाज़ – (नाज़–दर्प-गर्व–यहाँ मतलब है उगने और फलने-फूलने की उमंग) उगने और फलने-फूलने की प्यासी।

तस्कीं – संतोष, तृप्ति।

ब दम-ए-आब-ए-बक़ा – अमृत का घूँट।

७ रग-ए-ताक – अंगूर की नसें।

शह्पर-ए-रंग – रंग के पंख।

८ मौजः-ए-गुल – फूलों की तरंग।

चरागाँ – दीपों से सजा हुआ।

गुज़रगाह-ए-ख़याल – कल्पना का पथ।

तसव्वुर – अनुध्यान।

जल्वःनुमा – छविमान।

९ मह्व-ए-तमाशा-ए-दिमाग़ – मनोजगत की सैर में लीन।

सर-ए-नश्व-ओ-नुमा – (नशव अशुद्ध है) उगने और बढ़ने की उमंग।

१० 'आलम – संसार।

तूफ़ानि-ए-कफ़ीयत-ए-फ़स्ल – (फ़स्ल–ऋतु) ऋतु की मत्तता का तूफ़ान।

मौजः-ए-सब्ज़ः-ए-नौख़ेज़ – नवोदित हरियाली की तरंग।

ता – तक, तलक।

११ शर्ह-ए-हंगामः-ए-हस्ती – अस्तित्व की धूमधाम और हलचल की व्याख्या।

ज़िहे – प्रशंसासूचक शब्द जैसे वाह-वाह।

मौसम-ए-गुल – फूलों की ऋतु या'नी बहार।

रह्बर-ए-क़तरः बदरिया – बूँद को सागर तक लेजानेवाला मार्गदर्शक।

ख़ुशा – प्रशंसासूचक शब्द जैसे वाह-वाह।

५१

१ दन्दाँ – दाँत।

रिज़्क़ – ख़ुराक, भोजन।

फ़लक – आकाश, भाग्य।

दरख़ुर-ए-'अिक़्द-ए-गुहर – (दरख़ुर–क़ाबिल, योग्य। 'अिक्द-ए-गुहर–मोतियों की लड़ी) मोतियों की लड़ी के योग्य।

अँगुश्त – उँगली।

२ ब वक़्त-ए-सफ़र – यात्रा के समय।

३ सोज़िश-ए-दिल – दिल की तपन।

सुख़न-ए-गर्म – गर्म कविता। (कविता जिसमें दिल की गर्मी और असर हो)

ता – ताकि।

हर्फ़ – अक्षर (हर्फ़ पर उँगली रखना–दोष निकालना, आपत्ति करना)

५२

१ ता क़यामत – (क़यामत–प्रलय) संसार के ख़ात्मे तक, सृष्टि के

अंत तक।

सलामत – सुरक्षित, जीवित।

हज़रत सलामत – (हज़रत – श्रीमान, महाशय।) यह आदरसूचक संबोधन है।

२ 'अिश्क़-ए-ख़ूनाबः मशरब – ख़ून पीनेवाला 'अिश्क़।

ख़ुदावन्द-ए-ने'मत सलामत – मालिक, आक़ा, स्वामी।

३ 'अलर्रग़्म-ए-दुश्मन – (……… रग़म अशुद्ध है) दुश्मन के बर ख़िलाफ़ (विरुद्ध, विपरीत)

शहीद-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह की प्रतिज्ञा का मारा हुआ।

४ सर-ओ-बर्ग-ए-इदराक-ए-मा'नी (मा'ना) – (मा'नी–अर्थ, तत्त्व, आंतरिक सौंदर्य) संसार के तत्त्व को समझने का सामान।

तमाशा-ए-नैरंग-ए-सूरत – (नैरंग–इन्द्रजाल) रूप की जादूगरी का तमाशा।

५३

१ बाजीं – सिरहाने।

५४

१ आमद-ए-ख़त – सुखज़ोम का आना।

सर्द – ठण्डा।

बाज़ार-ए-दोस्त – दोस्त का बाज़ार [माँग में कमी होना]

दूद-ए-शम्'-ए-कुश्तः – बुझे हुए दीप का धुआँ।

ख़त-ए-रुख़सार-ए-दोस्त – दोस्त के कपोलों की रोमावलि।

२ अय दिल-ए-ना 'अ.क़िबत अन्देश – अय परिणाम को न सोचनेवाले दिल।

ज़ब्त-ए-शौक़ – शौक़ का नियंत्रण।

ताब-ए-जलवः-ए-दीदार-ए-दोस्त – (ताब लाना–शक्ति रखना, सहन करना) दोस्त के सौन्दर्य (आलोक) के दर्शन की ताब।

३ ख़ानः वीराँ साज़ि-ए-हैरत – आश्चर्य (विस्मय) के कारण घर की बरबादी।

तमाशा कीजिये – देखिये।

सूरत-ए-नक़्श-ए-क़दम – पदचिह्न के समान।

रफ़्तः-ए-रफ़्तार-ए-दोस्त – (रफ़्तः–वारफ़्तः–संज्ञाहीन, बेसुध, मोहित) दोस्त की मंथरगति पर मोहित।

४ बेदाद-ए-रश्क़-ए-ग़ैर – प्रतिद्वंदी के प्रति ईर्ष्या से पैदा होनेवाला अन्याय।

कुश्तः-ए-दुश्मन – दुश्मन का मारा हुआ।

बीमार-ए-दोस्त – दोस्त के प्रेम का रोगी।

५ चश्म-ए-मा रौशन – मेरी आँख प्रकाशमान है।

शाद – प्रसन्न।

दीदः-ए-पुरख़ूँ – लहू भरी आँख।

साग़र-ए-सरशार-ए-दोस्त – दोस्त का परिपूर्ण मधुचषक (प्यालः) जिस से वह तृप्त होता है।

६ पुरसिश – हाल पूछना, परिपृच्छा।

हिज्र – विरह।

ग़मख़्वार-ए-दोस्त – दोस्त का दुख बँटाने वाला।

७ रसाई – पहुँच।

पयाम-ए-वा'द-ए-दीदार-ए-दोस्त – दोस्त के दर्शन देने के वा'दे का सँदेसा।

८ शिकवः-ए-ज़ो'फ़-ए-दिमाग़ (दमाग़) – दिमाग़ की कमज़ोरी की शिकायत।

सर करे है – शुरू करता है।

हदीस-ए-'ज़ुल्फ़-ए-'अंबर बार-ए-दोस्त – दोस्त की अंबर-सुगंधित अलकों का प्रवचन।

९ बयान-ए-शोख़ि-ए-गुफ़्तार-ए-दोस्त – दोस्त के शोख़ वार्तालाप का वर्णन।

१० मेहरबानीहा-ए-दुश्मन – (हा – बहुवचन) दुश्मन की मेहरबानियाँ (व्यंग है)।

सिपास-ए-लज़्ज़त-ए-आज़ार-ए-दोस्त – दोस्त के दिये हुए दुख के रस व आनंद की प्रशंसा :

११ रदीफ़-ए-शे'र – शे'रों की रदीफ़ (ग़ज़ल के शे'रों में क़ाफ़िये के बा'द बार-बार आने वाला शब्द जैसे इस ग़ज़ल में 'दोस्त')

५५

१ बन्द-ओ-बस्त – बंदोबस्त।

बरँग-ए-दिगर – दूसरे रँग से, दूसरी तरह।

क़ुमरी – फ़ाख़्तः जाति की एक चिड़िया जिसके गले में एक काली कण्ठी होती है। ग़ालिब ने उसे तौक़ कहा है जो हँसुली की तरह का आभूषण भी होता है और अपराधियों के गले में डाला जाने वाला लोहे का भारी कड़ा भी।

हल्क़ः-ए-बेरून-ए-दर – (हल्क़ः–परिधि) दरवाज़े के बाहर का हल्क़ः (मतलब है क़ुमरी का तौक़ बाग़ के बाहर है और पक्षी आज़ाद है)।

२ पारः-ए-दिल – दिल का टुकड़ा।

फ़ुग़ाँ – आह, नालः, आर्त्तनाद।

तार-ए-नफ़स – साँस की डोरी।

कमन्द-ए-शिकार-ए-असर – प्रभाव को शिकार करनेवाली कमन्द (पाश, फन्दा)

३ 'आफ़ियत – शांति, कुशलता।

किनारः कर – (कनारः)–अलग हटजा।

सैलाब-ए-गिरियः – रोने का तूफ़ान (आँसुओं की बाढ़)

दरपै-ए-दीवार-ओ-दर – घरबार को ढा देने पर तुला हुआ।

५७

१ [खैंच – खैंच, खींच]

नफ़स – साँस, श्वास।

अंजुमन-ए-आरज़ू –अरमानों की अंजुमन (महफ़िल, मज्लिस, बज़्म, परिषद, मंडली इन सबका एक ही अर्थ है। इनमें सजावट का भाव भी निहित है)।

२ कमाल-ए-गर्मि-ए-स'अ्इ-ए-तलाश-ए-दीद – (कमाल–पराकाष्ठा, आखिरी हद। गर्मी–उग्रता। स'अ्इ–प्रयत्न। दीद–दर्शन) मा'शूक़ के दर्शन की खोज में प्रयत्न की पराकाष्ठा।

बरंग-ए-ख़ार – काँटे की तरह।

जौहर – ताँबे के दर्पण को रगड़ कर चमकाने से जो लकीरें पड़ती हैं। (आइने के जौहर–पैर के काँटे या निगाहें जो काँटों की तरह इसलिए चुभ रही हैं क्योंकि वे 'आशिक़ और मा'शूक़ के बीच में हाइल हैं। देखिये ४२ वीं ग़ज़ल का ५ वाँ शे'र)

३ बहानः-ए-राहत – चैन और आराम का बहाना।

नाज़-ए-बिस्तर खेंच – बिस्तर के नाज़ उठा, बिस्तर पर आराम कर।

४ ब हसरत – लालसापूर्वक।

नज़ारः-ए-नरगिस – (नरगिस एक फूल है जिसकी आँख से उपमा दी जाती है) नरगिस की दृष्टि।

बकोरि-ए-दिल-ओ-चश्म-ए-रक़ीब – प्रतिद्वंदी (नरगिस) के अंधे दिल और अंधी आँख के नाम पर।

साग़र खेंच – साग़र (मधुपात्र) उठा, (मेरे साथ शराब पी)

५ ब नीम ग़मज़ः – (ग़मज़ः–आँख का इशारः, सैन) आँखों के आधे इशारे से।

अदा कर हक़्क़-ए-वदी'अत-ए-नाज़ – (वदी'अत–अमानत; नाज़–सौन्दर्य का गर्व) नाज़ का हक़ अदा कर, पूरी तरह नाज़ कर।

नियाम-ए-पर्दः-ए-ज़ख़्म-ए-जिगर – जिगर का ज़ख़्म जो तलवार की म्यान की तरह है।

ख़ंजर – कटार (मा'शूक़ की दृष्टि)
[ज़ख़्म से कटार खेंचने से ज़ख़्म और बढ़ जाता है]

६ क़दह – प्यालः, मधुपात्र।

सह्बा-ए-आतश-ए-पिन्हाँ – (पिन्हाँ–गुप्त) दिल की आग की शराब।

बरू-ए-सफ़रः – (सुफ़रः अशुद्ध है) दस्तरख़्वान पर।

कबाब-ए-दिल-ए-समन्दर – (समन्दर–अग्निकीट) समन्दर के दिल के कबाब।

(ग़ालिब ने इस ग़ज़ल में दूसरे और पाँचवें शे'र के अतिरिक्त–'खेंच' शब्द का जिस तरह प्रयोग किया है वह उर्दू में प्रचलित नहीं है)

५८

१ हुस्न – रूप, सौन्दर्य (मा'शूक़)।

ग़म्ज़े – (ग़म्ज़ः) सैन, नयन–कटाक्ष।

कशाकश – कष्ट।

अह्ल-ए-जफ़ा – अन्याय करनेवाले (मा'शूक़)।

२ मन्सब-ए-शेफ़्तगी – आसक्ति का पद।

मा'ज़ूलि-ए-अन्दाज़-ओ-अदा – मा'शूक़ के हाव-भाव (नखरों) का बरतरफ़ (अपदस्थ) होना।

३ सियह पोश – काला।

४ ख़ाक में – मट्टी के नीचे, क़ब्र में।

अह्वाल-ए-बुताँ – (बुत–मूर्त्ति, सुन्दर व्यक्ति, मा'शूक़; 'बुताँ' बहुवचन है) मा'शूक़ों की दशा।

मोह्ताज-ए-हिना – मेंहदी के आभारी।

५ दरख़ुर-ए-अर्ज़ – निवेदन के योग्य, प्रकट करने योग्य।

जौहर-ए-बेदाद – अन्याय का रत्न (मा'शूक़ की दृष्टि)

जा – जगह।

निगह-ए-नाज़ – गर्व भरी दृष्टि, मा'शूक़ की निगाह, गर्वित नयन।

६ जुनूँ – उन्माद, उन्मत्तता, दीवानगी, पागलपन (उर्दू काव्य में यह 'अिश्क़ की वह स्थिति है जब इंसान महबूब (प्रिय) की कल्पना में इतना खोजाता है कि वह सारे संसार से बेखबर और निस्पृह होजाता है। महबूब एक व्यक्ति भी हो सकता है, विचार भी और आदर्श भी)।

अह्ल-ए-जुनूँ – जुनूनवाले, दीवाने, 'आशिक़।

आग़ोश-ए-विदा'अ – विदाई की गोद, विदा होने के लिए गले मिलना।

चाक – फटा, फटा हुआ (चाक यहाँ संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है)

गरीबाँ – कुर्ते का गला।
[गरीबान फाड़ना जुनून का लक्षण है, जब गरीबान फटना बंद हो गया तो जुनून भी खत्म होगया]।

जुदा – अलग, विलग।

७ हरीफ़-ए-मै-ए-मर्द अफ़गन-ए-'अिश्क़ – (हरीफ़–मुक़ाबिलः करनेवाला, सह-उद्योगी। मै-ए-मर्द अफ़गन–मर्दों को पछाड़ देनेवाली शराब) प्रेम की तीव्र मदिरा को सहन करनेवाला।

मुकर्रर – बार-बार।

लब-ए-साक़ी – साक़ी के अधर।

सला – आवाहन, निमंत्रण।

८ ता'ज़ियत-ए-मेह्र-ओ-वफ़ा – (ता'ज़ियत – मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना, मातम-पुरसी) प्रेम और प्रेम-निर्वाह की ता'ज़ियत।

९ बेकसि-ए-'अिश्क़ – 'अिश्क़ की असहायता।

सैलाब-ए-बला – विपत्तियों की बाढ़ (तूफ़ान)

५९

१ पेश-ए-नज़र – आँख के सामने।

दर-ओ-दीवार – दरवाज़े और दीवारें।

निगाह-ए-शौक़ – अभिलाषा भरी दृष्टि।

बाल-ओ-पर – पंख।

२ वुफ़ूर-ए-अश्क – आँसुओं की बहुलता।

काशाने – (काशानः) घर।

३ नवेद-ए-मक़्दम-ए-यार – यार (मा'शूक़) के आगमन का शुभ-समाचार।

चन्द क़दम पेश्तर – दो-चार पग आगे।

४ अरज़ानि-ए-मै-ए-जल्वः – दर्शन रूपी मदिरा की अल्प-मूल्यता (अधिकता)

५ सर-ए-सौदा-ए-इन्तिज़ार – प्रतीक्षा की लगन।

दुकान-ए-मता'-ए-नज़र – निगाहों के लिए सामान से भरी-पूरी दुकान।

६ हुजूम-ए-गिरियः – रोने (आँसुओं) की अधिकता।

७ हमसाये में – (हमसायः) पड़ोस में।

फ़िदा – निछावर।

८ बेख़ुदि-ए-'ऐश-ए-मक़दम-ए-सैलाब – सैलाब के आगमन की ख़ुशी से उत्पन्न आत्मविस्मृति।

(बा'ज़ संस्करणों में यह शे'र ६ठे शे'र के बाद आता है, इस तरह सैलाब का मतलब आँसुओं का सैलाब हो जाता है)।

१० हरीफ़-ए-राज़-ए-महब्बत – प्रेम का भेद दिल में रखनेवाले (छुपानेवाले)।

६०

२ ताक़त-ए-सुख़न – बात करने की शक्ति।

५ बुत-ए-काफ़िर – (बुत–मूर्ति, मा'शूक़। काफ़िर–शब्दार्थ नास्तिक है, लेकिन प्यार में मा'शूक़ को इसलिए काफ़िर कह देते हैं कि वह अपने सौन्दर्य-गर्व के सामने किसी को कुछ नहीं समझता) अत्यंत सुन्दर और गर्वीला मा'शूक़।

ख़ल्क़ – दुनियावाले।

६ मक़सद – उद्देश्य।

नाज़-ओ-ग़मज़ः – मा'शूक़ का रूप-गर्व और हाव-भाव।

वले – लेकिन।

दश्नः-ओ-ख़ंजर – कटार और छुरी।

७ मुशाहदः-ए-हक़ – (मुशाहिदः) (हक़–यथार्थ, परमसत्य, ईश्वर, ब्रह्मरूप) हक़ का अवलोकन।

बादः-ओ-साग़र – मदिरा और मधुपात्र।

८ इल्तिफ़ात – आकृष्टि, कृपा, प्रेम।

मुकर्रर – दुबारः, बार-बार।

६१

१ ताब-ए-रुख़-ए-यार – मा'शूक़ के मुखड़े की चमक-दमक।

ताक़त-ए-दीदार – दर्शन शक्ति।

२ आतश परस्त – अग्नि पूजक।

अह्ल-ए-जहाँ – दुनियावाले।

सरगर्म-ए-नालःहा-ए-शररबार – चिनगारियाँ बरसानेवाले आर्तनाद में संलग्न।

३ आबरू-ए-'इश्क़ – प्रेम की प्रतिष्ठा।

जफ़ा – ज़ुल्म, अन्याय।

बेसबब आज़ार – अकारण दुख पहुँचाने वाला।

४ जोश-ए-रश्क – ईर्ष्या की अधिकता।

५ गर्दन-ए-मीना – सुराधानी की गर्दन।

ख़ून-ए-ख़ल्क़ – दुनियावालों का ख़ून।

लरज़े है – काँपती है।

मौज-ए-मै – मदिरा की लहर।

रफ़्तार – चाल, गति।

६ वा हसरता – हाय रे दिलकी हसरत (अभिलाषा)

हरीस-ए-लज़्ज़त-ए-आज़ार – दुख-दर्द के स्वाद पर ललचाया हुआ।

७ मता'-ए-सुख़न – काव्य की दौलत।

'अयार-ए-तब'-ए-ख़रीदार – ग्राहक के स्वभाव की कसौटी।

८ ज़ुन्नार – जनेऊ।

सुब्हः-ए-सद-दानः – सौ मनकों वाली माला (तसबीह)।

रहरौ – पथिक, राही।

हमवार – समतल।

९ आबलों – (आबलः का बहुवचन) छाले।

पुरख़ार – काँटों भरी, कंटकाकीर्ण।

१० बदगुमाँ – मिथ्या संदेह से भरा हुआ।

तूती – छोटी ज़ात का तोता जिसे आइने के सामने बिठाकर बोलना सिखाते हैं।

ज़ंगार – ज़ंग (दर्पण को चमकाने के लिए)

११ बर्क़-ए-तजल्ली – आकाश ज्योति की बिजली।

तूर – एक पर्वत का नाम।

बादः – मदिरा।

ज़र्फ़-ए-क़दह ख़्वार – शराब का प्यालः पीनेवाले का साहस (पात्र)। [ईसाइयों और मुसलमानों के एक पैग़म्बर हज़रत मूसा ने तूर पर खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना की कि वह ज्योति दिखा दे। जब ज्योति की बिजली चमकी तो हज़रत मूसा बेसुध होगए और तूर जल कर राख हो गया। यह क़िस्सः इंजील और क़ुरआन दोनों में है]।

१२ ग़ालिब-ए-शोरीदः-ए-हाल – विकल ग़ालिब।

६२

१ लरज़ता है – काँपता है।

ज़हमत-ए-मेहर-ए-दरख़्शाँ – चमकते हुए सूरज का कष्ट।

क़तरः-ए-शबनम – ओस की बूँद।

ख़ार-ए-बयाबाँ – जंगल का काँटा, वन-कंटक।

२ हज़रत-ए-यूसुफ़ – एक पैग़म्बर (देखिये ग़ज़ल ३७, शे'र ६)

ख़ानः आराई – घर की सजावट, गृहसज्जा।

सफ़ेदी दीदः-ए-या'क़ूब की – या'क़ूब की आँखों की ज्योति [हज़रत

यूसुफ़ के बाप हज़रत या'क़ूब भी पैग़म्बर थे। जब यूसुफ़ मिस्र में आकर क़ैद हुए तो रोते-रोते बाप की आँखें अंधी होगईं। या'नी यह ज्योति यूसुफ़ के साथ क़ैदख़ाने (ज़िंदाँ) में आगई]।

३ फ़ना ता'लीम-ए-दर्स-ए-बेख़ुदी – आत्म विस्मृति के पाठ से मृत्यु की शिक्षा।

लाम अलिफ़ – उर्दू का संयुक्ताक्षर जो लाम और अलिफ़ से मिलकर बना है। (ﻻ)

दीवार-ए-दबिस्ताँ – पाठशाला की दीवार।

४ फ़राग़त – अवकाश।

तशवीश-ए-मरहम – मरहम की चिंता।

बहम – आपस में।

पारःहा-ए-दिल – दिल के टुकड़े।

५ इक़्लीम-ए-उल्फ़त – प्रेम का साम्राज्य (सल्तनत)

तूमार-ए-नाज़ – नाज़ (सौन्दर्याभिमान) की रामकहानी, नाज़ का दफ़्तर, दिल जिसपर मा'शूक़ के नाज़-ओ-अदा की रामकहानी लिखी है।

पुश्त-ए-चश्म – फिरी हुई आँखें, बेवफ़ाई, निर्मोही पन।

'उन्वाँ – शीर्षक, प्रसंग। (प्रेम के जगत में हर दिल पर बेवफ़ाई की मुहरें लगी हुई हैं)।

६ अब्र-ए-शफ़क़ आलूदः – लालिमा-रंजित बादल।

फ़ुर्क़त – विरह, जुदाई।

आतश – आग।

गुलिस्ताँ – फुलवारी, बाग़।

७ बजुज़ परवाज़-ए-शौक़-ए-नाज़ – (बजुज़–सिवाय। परवाज़–उड़ना। शौक़–चाव। नाज़–सौंदर्याभिमान अर्थात हुस्न या'नी मा'शूक़) प्रेम के शौक़ में उड़ने (मारे-मारे फिरने) के सिवा।

क़यामत – प्रलय जब सूर (दुंदुभी) फूँका जायगा और तेज़ हवाएँ चलेंगी और मरे हुए लोग दुबारः ज़िन्दः होंगे।

हवा-ए-तुंद – तेज़ हवा, झक्कड़, प्रभंजन।

ख़ाक-ए-शहीदाँ – शहीदों की मिट्टी।

८ नासेह – उपदेशक।

शिद्दत – ज़्यादती, अत्याचार, कठोरता।

६३

१ इशारे – (इशारः) अदा, अंदाज़, हाव-भाव।

निशाँ – मा'नी, अर्थ, मतलब।

और – दूसरा, उल्टा, अन्यथा।

गुमाँ – विचार, भ्रांति।

३ अबरू – भौंह।

निगह-ए-नाज़ – गर्वीली दृष्टि, मा'शूक़ की निगाह।

पैवन्द – रिश्तः, संबंध।

मुक़र्रर – ज़रूर, अवश्य।

कमाँ – धनुष।

५ हरचन्द – यद्यपि, अत्यधिक।

सुबुक दस्त – (सुबुक–हल्का। दस्त–हाथ) सिद्ध हस्त, चालाक, मश्शाक़।

बुत शिकनी – मूर्त्ति-खंडन (असत्य-खंडन)

संग-ए-गिराँ – भारी पत्थर, राह के रोड़े।

६ दीदः-ए-ख़ूनाबःफ़िशाँ – खून टपकाने (रोने) वाली आँखें।

८ ख़ुर्शीद-ए-जहाँ ताब – संसार को आलोकित करनेवाला सूर्य।

दाग़-ए-निहाँ – छुपा हुआ दाग़, दिल का दाग़।

९ आह-ओ-फ़ुग़ाँ – ठंडी साँसें और आर्त्तनाद [ग़ालिबने जैसे शब्दों को आगे-पीछे रखा है यह फ़ारसी कविता में गुण माना जाता है, मगर उर्दू कविता में दोष]

१० नाले – (नालः का बहुवचन) आर्त्तनाद।

तब्'अ – स्वभाव, प्रकृति।

रवाँ – गतिमान।

११ सुख़नवर – कवि।

अन्दाज़-ए-बयाँ – वर्णन-शैली।

६४

१ सफ़ा-ए-हैरत-ए-आईनः – दर्पण की परिष्कृति जो विस्मय के रूप में दिखाई देती है, अर्थात दर्पण की स्थिरता।

सामान-ए-ज़ँग – (रँग ग़लत छपा है) ज़ँग लगने का कारण।

तग़य्युर – परिवर्तन, विकार।

आब-ए-बर जा माँदः – ठहरा हुआ पानी।

२ सामान-ए-'ऐश-ओ-जाह – वैभव और ऐश्वर्य का सामान।

तद्बीर वहशत की – घबराहट, भय और उन्माद का इलाज। ('तदबीर' शब्द का ग़ालिबने इलाज के अर्थों में प्रयोग किया है। इसका शब्दार्थ उपाय है)

जाम-ए-ज़मर्रुद – (ज़मुर्रद) पन्ने का मधुपात्र।

दाग़-ए-पलँग – चीते की खाल के धब्बे।

[मैं ऐश्वर्य और वैभव के सामान से ऐसे ही भय खाता हूँ जैसे हिंस्र पशु से]

६५

१ जुनूँ – पागलपन, दीवानगी, उन्माद।

दस्तगीरी – सहायता, मदद, हाथ का सहारा।

'उरियानी – नग्नता।

गरीबाँ चाक – (चाक-ए-गरीबाँ) कुर्ते का फटा हुआ गला (नग्नता)

२ बरँग-ए-काग़ज़-ए-आतश ज़दः – आग में जलते हुए काग़ज़ की तरह।

नैरँग-ए-बेताबी – बेताबी (व्याकुलता) का इंद्रजाल, बेताबी का जादू।

बाल-ए-यक तपीदन – तड़प का एक पंख।

(मेरी बेताबी ऐसी है जैसे आग में जलता हुआ काग़ज़ जिसपर चिनगारियों के अनगिनत सितारे झिलमिलाते हैं। मेरा दिल तड़प के हर पंख पर हज़ारों आईने बाँध देता है। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि बेताबी का जादूगर हर तड़प के पंख पर आईने की तरह चमकते हुए हज़ारों दिल बाँध देता है)

३ फ़लक – आकाश, भाग्य।

'ऐश-ए-रफ़्तः – अतीत ऐश्वर्य।

मता'-ए-बुर्दः – लुटा हुआ माल।

रहज़न – डाकू।
४ **बेसबब रँज** – अकारण रूठनेवाला (मा'शूक़)
आश्ना दुश्मन – दोस्त का दुश्मन।
शु'आ'-ए-मेहर – सूर्य-किरण।
तुहमत – लांछन।
निगह – (निगाह) दृष्टि।
चश्म-ए-रौज़न – खिड़की की आँख।
५ **फ़ना** – मृत्यु, विनाश।
मुश्ताक़ – उत्सुक।
हक़ीक़त – वास्तविकता, मर्म।
फ़रोग़-ए-ताले'-ए-ख़ाशाक – घास-फूस के भाग्य की चमक।
मौक़ूफ़ – निर्भर।
गिलख़न – (गुलखन) भाड़, भट्टी।
६ **असद** – ग़ालिब का नाम।
बिस्मिल – घायल, ज़ख़्मी।
मश्क़-ए-नाज़ कर – रूप-गर्व की तलवार चला।
ख़ून-ए-दो 'आलम – दोनों लोकों का ख़ून।

६६

१ **सितम कश** – अन्याय सहन करनेवाला।
मस्लिहत – अप्रकट शुभ हेतु।
ख़ूबाँ – ख़ूबसूरत लोग, मा'शूक़।
तकल्लुफ़ बरतरफ़ – तकल्लुफ़ से दूर।
रक़ीब – प्रतिद्वंदी।

६७

१ **लाज़िम** – ज़रूरी, आवश्यक। (देखो ग़लती से देखो छप गया है)
तन्हा – अकेले।
२ **दर** – दरवाज़ः, चौखट।
नासियः फ़रसा – माथा रगड़नेवाला।
५ **फ़लक-ए-पीर** – बूढ़ा आकाश।
'आरिफ़ – ग़ालिब के भांजे ज़ैनुल 'आबदीन का उपनाम जिन्हें ग़ालिबने गोद ले लिया था। १८५२ में ३६ वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। उनके मरने पर यह ग़ज़ल कही गई थी।
६ **माह-ए-शब-ए-चारदहुम** – चौदहवीं रात के चाँद।
७ **दाद-ओ-सितद** – लेन-देन।
मलकुल मौत – यमराज।
९ **बहरहाल** – हर हाल में।
मुद्दत – समय।
जवाँमर्ग – युवा-मृत।
१० **नादाँ** – मूर्ख।

६८

१ **फ़ारिग़** – निवृत्त और निश्चिंत।
मानिन्द-ए-सुबह-ओ-मेहर – प्रातःकाल और सूर्य की तरह।
ज़ीनत-ए-जैब-ए-कफ़न – कफ़न के गरीबान की शोभा।
हनोज़ – अभी तक।
२ **नाज़-ए-मुफ़्लिसाँ** – ग़रीबों का गर्व।
ज़र-ए-अज़दस्त रफ़्तः – हाथ से निकला हुआ सोना, खोया हुआ धन।
गुलफ़रोश-ए-शोख़ि-ए-दाग़-ए-कुहन – पुराने दाग़ों की सुन्दरता को फूल समझकर बेचनेवाला (मूल्य माँगनेवाला)
३ **मैख़ानः-ए-जिगर** – जिगर का मदिरालय ('इश्क़ में जिगर का ख़ून होता है इसलिए मैख़ानः)
ख़मियाज़ः खेंचे है – अँगड़ाई लेता है।
बुत-ए-बेदाद फ़न – मा'शूक़ जिसने अत्याचार को कला बना लिया है, अत्याचारी मा'शूक़।
(अँगड़ाई मदिरालय की निशानी है, या'नी मा'शूक़ मैख़ानः-ए-जिगर से और शराब माँग रहा है)

६९

१ **हरीफ़-ए-मतलब-ए-मुश्किल** – (हरीफ़ मुक़ाबिलः करनेवाला, काम बनानेवाला) कठिन काम को बनानेवाला।
फ़ुसून-ए-नियाज़ – श्रद्धा और विनम्रता का मंत्र।
'उम्र-ए-ख़िज़्र दराज़ – ख़िज़्र की उम्र लम्बी हो (ख़िज़्र एक पैग़म्बर का नाम है जो कहा जाता है कि जीवित और अमर हैं। इसलिए उनकी दीर्घायु की दु'आ माँगना व्यंग है–और कोई प्रार्थना तो स्वीकृत होती नहीं शायद यही हो जाय।)
२ **बहरज़ः** – नादानी से, मूर्खतावश।
बयाबाँ नवर्द-ए-वहम-ए-वुजूद – अस्तित्व के भ्रम के जंगल में मारे-मारे फिरना।
हनोज़ – अभी।
तसव्वुर – कल्पना, विचार, अनुध्यान।
नशेब-ओ-फ़राज़ – ऊँच-नीच।
३ **विसाल** – मिलन, दोस्त से मुलाक़ात।
जल्वः तमाशा – दर्शन देनेवाला, दर्शन देने का काम।
दिमाग़ कहाँ – सहन की शक्ति कहाँ।
आइनः-ए-इन्तिज़ार – प्रतीक्षा का दर्पण (दिल)
परवाज़ – उड़ान (किसी-किसी दीवान में परदाज़ है जिसका अर्थ है परिष्कृत करना)।
४ **ज़र्रः-ए-'आशिक़** – 'आशिक़ की ख़ाक का ज़र्रः (कण)
आफ़्ताब परस्त – सूर्य-पूजक।
हवा-ए-जल्वः-ए-नाज़ – सौन्दर्य-दर्शन की अभिलाषा।
५ **वुस'अत-ए-मैख़ानः-ए-जुनूँ** – उन्माद के मदिरालय का विस्तार।
कासः-ए-गर्दूं – आकाश का प्यालः।
ख़ाक अन्दाज़ – कूड़ा-करकट उठाने की टोकरी।

७०

१ **वुस'अत-ए-स'इ-ए-करम** – करुणा और दानशीलता की अत्यधिक

कोशिश।

सर ता-सर-ए-ख़ाक – धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

आबलः पा – जिसके पैरों में छाले पड़ गये हों।

अब्र-ए-गुहर बार – मोती बरसाने वाला बादल।

हनोज़ – अभी तक।

२ **यक क़लम** – बिल्कुल।

काग़ज़-ए-आतश ज़दः – आग में जलता हुआ कागज़।

सफ़्हः-ए-दश्त – मैदान का पृष्ठ।

नक़्श-ए-पा – पद चिन्ह।

तप-ए-गर्मि-ए-रफ़्तार – प्रवाह की तीव्रता से उत्पन्न गर्मी।

७१

१ **बुत** – मूर्ति, हसीन, मा'शूक़।

जान 'अज़ीज़ रखना – जान बचा कर रखना ('अज़ीज़–प्रिय)।

२ **पैकान** – तीर की नोक, फलक।

३ **ताब लाना** – सहन करना।

वाक़ि'अः – घटना।

७२

१ **गुल-ए-नग़मः** – सगीत का फूल, संगीत की प्रफुल्लता।

पर्दः-ए-साज़ – साज़ का पर्दः जिस से सुर (स्वर) निकलते हैं।

शिकस्त – भंग, पराजय, हार।

२ **आराइश-ए-ख़म-ए-काकुल** – अलकों का शृंगार, केश-विन्यास।

अन्देशःहा-ए-दूर-ओ-दराज़ – दूर-दूर (तरह-तरह) की शंकाएँ (अंदेशह: अशुद्ध है)।

३ **लाफ़-ए-तमकीं** – सहन करने का दा'वा।

फ़रेब-ए-सादः दिली – सरल हृदयता का धोका।

राज़हा-ए-सीनः गुदाज़ – दिल को फूँक देने वाले भेद।

४ **गिरफ़्तार-ए-उल्फ़त-ए-सय्याद** – (गिरिफ़्तार) शिकारी के प्रेम में बंदी।

ताक़त-ए-परवाज़ – उड़ने की शक्ति।

५ **सितमगर** – अत्याचारी।

नाज़ खेंचूँ – नाज़ करूँ, नाज़ उठाऊँ।

बजाय हसरत-ए-नाज़ – नाज़ करने या नाज़ उठाने की अभिलाषा के बजाय।

६ **क़तरः-ए-ख़ूँ** – ख़ून की बूँद।

मिशगाँ – पलकें, दृग-अंचल।

गुल बाज़ – फूलों से खेलने वाला (गुलबाज़ी) एक खेल का नाम है जिस में गुलाब और गेंदे के फूल एक दूसरे पर फेंके जाते हैं)।

७ **ग़मज़ः** – सैन, नयन-कटाक्ष, हाव-भाव, नख़रा।

यक क़लम – बिल्कुल, पूरी तरह।

अंगेज़ – मनो भाव को उभारने वाला, सहन करने योग्य।

सर ब सर – पूर्णतया, सर से पाँव तक।

अन्दाज़ – अदा, हाव-भाव, नख़रा।

८ **जल्वःगर** – प्रकट।

रेज़िश-ए-सिजदः-ए-जबीन-ए-नियाज़ – श्रद्धा और विनम्रता के मस्तक से सिजदों की वर्षा।

तमाम हुआ – मर गया।

१० **अय दरेग़ा** – हाय अफ़सोस, खेद है।

रिन्द-ए-शाहिद बाज़ – (रिन्द–शराबी, मनमौजी, उर्दू कविता में स्वतंत्र-विचारक के लिए प्रयुक्त होता है) शराबी और मनमौजी रूपासक्त (मा'शूक़ों से खेलने वाला)।

७३

१ **मुज़्दः** – शुभ-समाचार, धन्यवाद।

ज़ौक़-ए-असीरी – बन्दी होने का चाव और आनन्द।

दाम – जाल।

क़फ़स-ए-मुर्ग़-ए-गिरफ़्तार – बन्दी पंछी का पिंजरः।

२ **जिगर-ए-तश्नः-ए-आज़ार** – दुखों का प्यासा जिगर।

तसल्ली न हुआ – शांत न हुआ, सांत्वना न मिली।

जू-ए-ख़ूँ – रक्त की नहर, रक्त धारा।

बुन-ए-हर ख़ार – हर काँटे की जड़।

४ **दश्नः** – कटार।

ग़मख़्वार – सहानुभूतिकर्ता, हमदर्द।

५ **दहन-ए-शेर** – शेर का मुँह।

ख़ूबान-ए-दिल आज़ार – दिल दुखाने वाले हसीन (मा'शूक़)

६ **नमू** – विकास, बढ़ाव।

गोशः-ए-दस्तार – पगड़ी का कोना (पेच)

७४

१ **ख़स-ए-जौहर** – (जौहर–फ़ौलादी आईने को चमकाने से पड़ी लकीरें) जौहर के तृण।

तरावत – तरी, ताज़गी।

सब्ज़ः-ए-ख़त – मुखलोम।

ख़ानः-ए-आईनः – आईने का घर (दिल)

रू-ए-निगार – मा'शूक़ का चेहरः।

आतश – आग।

२ **फ़रोग़-ए-हुस्न** – सौन्दर्य की कान्ति।

हल्ल-ए-मुश्किल-ए-'आशिक़ – 'आशिक़ की कठिनाइयों का समाधान

शम्'अ – मोम बत्ती।

पा – पैर।

ख़ार – काँटा।

७५

१ **जादः-ए-रह** – राह का निशान, पथ-चिन्ह।

ख़ुर – ख़ुर्शीद, सूरज।

तार-ए-शु'आ'अ – किरण का तार।

चर्ख़ – आकाश, गगन।
वा – उद्घटित, अनावृत।
माह-ए-नौ – नया चाँद।
आग़ोश-ए-विदा'अ – विदाई की गोद (बाहें)

७६

१ रुख़-ए-निगार – मा'शूक़ का चेहरः, मा'शूक़ की कान्ति।
सोज़-ए-जाविदानि-ए-शम्'अ – शम्'अ की अमर तपन।
आतश-ए-गुल – फूल की आग (मा'शूक़ की कान्ति)
आब-ए-ज़िन्दगानि-ए-शम्'अ – शम्'अ के लिए अमृत।
२ ज़बान-ए-अह्ल-ए-ज़बाँ – भाषाविदों की भाषा।
मर्ग – मृत्यु, मौत।
बज़्म – महफ़िल, गोष्ठी।
रौशन हुई – प्रकट हुई।
ज़बानि-ए-शम्'अ – शम्'अ की ज़बान से।
३ सिर्फ़ – (सर्फ़ ग़लत छपा है) केवल।
ब ईमा-ए- शो'लः – शो'ले के इशारे से।
क़िस्सः तमाम – अपने जीवन का अंत।
बतर्ज़-ए-अह्ल-ए-फ़ना – (अह्ल-ए-फ़ना तसव्वुफ़ का पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ मृत्यु के चाहनेवाले, या'नी खुदा के 'आशिक़) अह्ल-ए-फ़ना की तरह।
फ़सानः ख़्वानि-ए-शम्'अ – शम्'अ की कथा-वर्णन-शैली।
४ हसरत-ए-परवानः – पतंगे की अभिलाषा।
लरज़ने से – काँपने से।
नातवानि-ए-शम्'अ – (नातुवानी) शम्'अ की अशक्ति।
५ रुह – (रूह) आत्मा।
ख़याल – कल्पना, याद।
एहतिज़ाज़ – नृत्य, हर्ष भरी तड़प।
ब जल्वः रेज़ि-ए-बाद-ओ-ब परफ़िशानि-ए-शम्'अ – (जल्वः रेज़ी–छवि दिखलाना। परफ़िशानी–पर फड़फड़ाना) हवा के चलने और शम्'अ के झिलमिलाने की सौगंध (जैसे हवा नाचती है और शम्'अ नृत्य करती है)
६ नशात-ए-दाग़-ए-ग़म-ए-'इश्क़ – (निशात अशुद्ध है) प्रेम-संताप के दाग़ का हर्ष।
शिगुफ़्तगी – फूल खिलना (प्रफुल्लता)
शहीद-ए-गुल-ए-ख़ज़ानि-ए-शम्'अ – (गुल फूल को भी कहते हैं और मोमबत्ती की जली हुई बत्ती को भी। शहीद का अर्थ यहाँ मुग्ध और आसक्त है) शम्'अ के हेमंतकालीन फूल पर आसक्त।
७ बालीन-ए-यार – मा'शूक़ का सिरहाना।
दाग़-ए-बदगुमानि-ए-शम्'अ – शम्'अ के मिथ्या संदेह का दाग़।

७७

१ बीम-ए-रक़ीब – प्रतिद्वंद्वी का भय।
विदा'-ए-होश – चेतना खोना।
इख़्तियार – शक्ति, सामर्थ्य।
हैफ़ – पश्चात्ताप, अफ़सोस, धिक्।
२ नातमामि-ए-नफ़स-ए-शो'लःबार – शो'ले बरसानेवाले श्वास की अपूर्णता।

७८

१ तिफ़्लान-ए-बेपरवा – बेपरवा बच्चे।
२ गर्द-ए-राह-ए-यार – दोस्त के पथ की धूल।
सामान-ए-नाज़-ए-ज़ख़्म-ए-दिल – दिल के घाव के गर्व (ख़ुशी) का सामान।
३ अरज़ानी – सस्तापन, अधिकता।
नालः-ए-बुलबुल – बुलबुल का आर्त्तनाद।
ख़न्दः-ए-गुल – फूल की हँसी।
४ शोर-ए-जौलाँ – आगमन की धूमधाम।
कनार-ए-बह्र – सागर के कनारे।
गर्द-ए-साहिल – सागर-तट की रेत।
ब ज़ख़्म-ए-मौजः-ए-दरिया – सागर की तरंगों के घाव के लिए।
५ दाद – न्याय, प्रशंसा (दाद देना उर्दू का महावरः है जिसका अर्थ है न्याय करना, प्रशंसा करना)
६ तन-ए-मजरूह-ए-'आशिक़ – 'आशिक़ का घायल तन।
तलब करता है – माँगता है।
आ'ज़ा – अंग-प्रत्यंग।
७ मिन्नत खेंचना – प्रार्थना करना, आभारी होना।
पै-ए-तौक़ीर-ए-दर्द – (किसी-किसी दीवान में तौफ़ीर भी छपा है जिसका अर्थ है अधिकता। तौक़ीर का अर्थ है सम्मान और महिमा) दर्द की अधिकता के लिए, दर्द के सम्मान के लिए।
मिस्ल-ए-ख़न्दः-ए-क़ातिल – क़ातिल की हँसी की तरह।
सर ता पा – सर से पैर तक।
८ वज्द-ए-ज़ौक़ – आनंद और रस की मत्तता।

७९

१ इक 'उम्र – एक आयु, एक मुद्दत, एक लम्बा समय।
ज़ुल्फ़ के सर होने तक – (ज़ुल्फ़–अलक) ज़ुल्फ़ के खुलने तक, ज़ुल्फ़ के सुलझने तक, ज़ुल्फ़ के जीत लिये जाने तक, 'इश्क़ के सफल होने तक।
२ दाम-ए-हर मौज – लहरों का जाल।
हल्क़ः-ए-सद काम-ए-निहंग – मगरमच्छों के सैकड़ों खुले हुए जबड़े।
गुज़रे है – गुज़रती है, बीतती है।
क़तरे प – बूँद पर।
गुहर – मोती।
३ सब्र तलब – संतोष-याचक।
तमन्ना – कामना।
बेताब – व्याकुल।
रंग – हाल, दशा।
ख़ून-ए-जिगर होने तक – जिगर का ख़ून होने तक, प्रेम के सफल होने तक।

४ **तग़ाफ़ुल** – उपेक्षा।
५ **परतव-ए-ख़ुर** – सूर्य-प्रकाश।
शबनम – ओस।
फ़ना की ता'लीम – मिट जाने की शिक्षा, नश्वरता का पाठ।
'अिनायत की नज़र – कृपादृष्टि।
६ **यक नज़र बेश नहीं** – एक नज़र (पल) से अधिक नहीं।
फ़ुर्सत-ए-हस्ती – अस्तित्व का अवकाश।
ग़ाफ़िल – असावधान।
गर्मि-ए-बज़्म – महफ़िल की गर्मी, मानव-जीवन की चहल-पहल।
रक़्स-ए-शरर – चिनगारी का नृत्य।
७ **ग़म-ए-हस्ती** – जीवन-संताप।
जुज़ मर्ग – मौत के सिवा।
सहर – उषाकाल।

८०

१ **यक़ीन-ए-इजाबत** – स्वीकृति का विश्वास।
या'नी – अर्थात।
बिग़ैर-ए-यक दिल-ए-बेमुद्द'आ – निष्काम हृदय के बिना।
२ **दाग़-ए-हसरत-ए-दिल** – दिल की अपूर्ण कामनाओं का दाग़।
शुमार – गिनती।
गुनह – गुनाह, पाप।

८१

१ **हलाक-ए-फ़रेब-ए-वफ़ा-ए-गुल** – इस धोखे में गिरफ़्तार कि फूल वफ़ा करेंगे।
ख़न्दःहा-ए-गुल – फूलों की हँसी।
२ **आज़ादि-ए-नसीम** – समीर की स्वतंत्रता।
हल्क़ः-ए-दाम-ए-हवा-ए-गुल – (हवा-इच्छा, कामना) फूलों की चाहत के जाल।
३ **मौज-ए-रँग** – रँग की तरंग।
अय वाये – हा हंत।
नालः-ए-लब-ए-ख़ूनीं नवा-ए-गुल – फूलों के रक्त-रंजित अधरों से निकला आर्त्तनाद।
४ **ख़ुश** – अच्छा, शुभ।
हरीफ़-ए-सियह मस्त – (हरीफ़–सहकर्मी, सहोयोगी, इसलिए मित्र और प्रतिद्वंदी दोनों अर्थ निकलते हैं) नशे में धुत हरीफ़।
मिस्ल-ए-सायः-ए-गुल – फूल की छाया की तरह।
सर ब पा-ए-गुल – फूल के पाँव पर सर (पहले गुल का अर्थ फूल है और दूसरे गुल का मतलब मा'शूक़)।
५ **नफ़स-ए-'अित्र सा-ए-गुल** – फूल के 'अित्र से सुरभित श्वास, कुसुम-सुरभित-समीर।
६ **मीना-ए-बे शराब-ओ-दिल-ए-बे हवा-ए-गुल** – मदिरा रहित मधुपात्र (ख़ाली) और कुसुम की कामना से रहित दिल (बुझा हुआ दिल)।
७ **सतवत** – आतंक, दबदबा, धाक।
जल्वः-ए-हुस्न-ए-ग़यूर – स्वाभिमानी सौन्दर्य की छवि।
रँग-ए-अदा-ए-गुल – फूलों की अदा का रँग, फूलों का रँग।
८ **जल्वे** – (जल्वः) छवि, कान्ति, दर्शन।
गुल दर क़फ़ा-ए-गुल – फूल के पीछे फूल।
९ **हम आग़ोशी** – आलिंगन।
गुल-ए-जैब-ए-क़बा-ए-गुल – फूल के गरीबान में लगा हुआ फूल (ऐसा सौन्दर्य जो फल के रूप की भी शोभा बढ़ा दे)।

८२

१ **बेश अज़ यक नफ़स** – एक साँस (पल भर) से अधिक।
बर्क़ – बिजली।
रौशन – आलोकित, प्रकाशित।
शम्'-ए-मातम ख़ानः – (शाम'अ-ए-ग़लत छपा है) शोकगृह का दीपक।
२ **बरहम करना** – बिखेरना, बिगाड़ना, उलट-पुलट करना।
गंजफ़ःबाज़-ए-ख़याल – (गँजफ़ः-एक खेल जो गोल ताशों से खेला जाता है) कल्पना का गँजफ़ः बाज़ (खिलाड़ी)।
वरक़ गर्दानि-ए-नैरँग-ए-यक बुतख़ानः – (नैरँग-इंद्रजाल, चित्रों की पुस्तक) चित्रों की पुस्तक के उलटते हुए पृष्ठ जिनपर स्वयं एक-एक मूर्तिशाला अंकित है।
३ **बावुजूद-ए-यक जहाँ** – एक दुनिया के बावुजूद, तरह-तरह की चीज़ों के बावुजूद।
हंगामः पैदाई – हंगामे का प्रत्यक्ष प्रकट होना।
चराग़ान-ए-शबिस्तान-ए-दिल-ए-परवानः – पतिंगे के दिल के अँधेरे में जलते हुए दीप।
४ **ज़ो'फ़** – दुर्बलता, कमज़ोरी।
क़ना'अत – निस्पृहता।
तर्क-ए-जुस्तुजू – खोज का त्याग (हाथ पर हाथ रख कर बैठना)।
वबाल-ए-तकियःगाह-ए-हिम्मत-ए-मर्दानः – पुरुषोचित साहस के लिए आपत्ति (या'नी बेहिम्मत, साहसहीन)।
५ **दाइमुल हब्स** – आजीवन कारावास।
सीनः-ए-पुरख़ूँ – ख़ून में लिथड़ा (घावों से भरा) हुआ सीनः।
ज़िन्दाँ ख़ानः – बन्दीगृह।

८३

१ **बनालः** – आर्त्तनाद से, फ़रियाद से।
हासिल-ए-दिल बस्तगी – दिल लगाने का सामान, ख़ुश रहने का सामान।
फ़राहम कर – प्राप्त कर, इकट्ठा कर।
मता'-ए-ख़ानः-ए-ज़ंजीर – ज़ंजीर घर की दौलत।
जुज़ सदा – आवाज़ (झनकार) के सिवा।
मा'लूम – कुछ नहीं (मालूम का यह प्रयोग उर्दू मुहावरः है)।

८४

१ **दयार-ए-ग़ैर** – पराया घर (परदेश)।
२ **हल्क़ःहा-ए-ज़ुल्फ़** – ज़ुल्फ़ के छल्ले (ज़ुल्फ़ों की ज़ंजीर के हल्क़े)।

कर्मी – घात, ताक।

दा'वः-ए-वारस्तगी – आज़ाद होने का दा'वा।

८५

१ धाम (दाम ग़लत छपा है) – उधार।

बख़्त-ए-ख़ुफ़्तः – सोये हुए भाग्य।

यक ख़्वाब-ए-ख़ुश – एक सुख स्वप्न।

वले – लेकिन।

८६

१ फ़िराक़ – विरह।

विसाल – मिलन।

शब-ओ-रोज़-ओ-माह-ओ-साल – रात और दिन और माह और वर्ष (ज़मानः, समय)।

२ फ़ुर्सत-ए-कार-ओ-बार-ए-शौक़ – जगत के व्यापार के लिए अवकाश।

ज़ौक़-ए-नज़्ज़ारः-ए-जमाल – सौन्दर्य का तमाशा देखने का आनन्द।

३ शोर-ए-सौदा-ए-ख़त्त-ओ-ख़ाल – (सौदा–पागलपन, उन्माद, ख़त्त-ओ-ख़ाल–रूप, हुस्न) रूप की कल्पना की धूमधाम।

४ रा'नाइ-ए-ख़याल – कल्पना की शृंगार।

६ क़िमार ख़ानः-ए-'अिश्क़ – प्रेम का जुआघर।

८ मुज़महिल – शिथिल, श्रांत।

क़ुवा – (क़ुव्वत का बहुवचन) शक्तियाँ।

'अनासिर – तत्त्व (बहुवचन), पंचभूत।

ए'तिदाल – संतुलन।

८७

२ परीशानि-ए-ख़ातिर – दिल की परिशानी, मन की व्यथा।

३ मै-ओ-नग़मः – मदिरा और संगीत।

अन्दोह रुबा – ग़म दूर करनेवाला।

४ रसा – पहुँचनेवाला, असर करनेवाला।

५ सरहद-ए-इदराक – ज्ञान की सीमा।

मस्जूद – जिसको सिजदा किया जाय (ख़ुदा)

क़िबले (क़िब्लः) – का'बः जिसकी ओर मुसलमान सिजदः करते हैं।

अहल-ए-नज़र – नज़रवाले, पारखी।

क़िब्लःनुमा – क़िबले की दिशा दिखानेवाला (दिग्दर्शक यंत्र)

६ पा-ए-अफ़गार – घायल पैर।

ख़ार-ए-रह – पथ के कंटक।

मेहर गिया (ह) – एक प्रकार की घास (कहते हैं कि यह बूटी जिसके पास हो लोग उस पर मेहरबान होजाते हैं)

७ शरर – चिनगारी।

मतलूब – अभीष्ट।

८ शोख़ – चंचल।

नख़्वत – दर्प, अभिमान, ग़ुरूर।

९ वह्शत-ओ-शेफ़्तः – ग़ालिब के समकालीन दो कवि ग़ुलाम 'अली ख़ाँ 'वह्शत' और नवाब मुस्तफ़ा ख़ाँ 'शेफ़्तः'।

ग़ालिब-ए-आशुफ़्तःनवा – मिथ्यावादी ग़ालिब।

८८

१ नंग-ए-पैराहन – वस्त्रों को लज्जित करनेवाला (गरीबान के दामन में होने का अर्थ है उन्माद की दशा में कपड़ों का तार-तार होना)

२ ज़ो'फ़ – दुर्बलता, कमज़ोरी।

गिरियः – रुदन।

३ अज्ज़ा-ए-निगाह-ए-आफ़ताब – सूर्य की दृष्टि के कण अर्थात् टूटी हुई किरणें।

रौज़न – रोशनदान।

४ तारीकि-ए-ज़िन्दान-ए-ग़म – ग़म के कारागृह का अंधकार।

पंबः – रुई (प्रकाश को रोकने के लिए कभी-कभी रुई के गदेले रौशनदान में लगा दिये जाते हैं)।

नूर-ए-सुब्ह – प्रभात का आलोक।

५ रौनक़-ए-हस्ती – अस्तित्व की शोभा।

'अिश्क़-ए-ख़ानःवीराँ साज़ – घर को वीरान कर देनेवाला प्रेम।

अंजुमन – महफ़िल।

बे शम'अ – बे चराग़, दीप रहित।

बर्क़ – बिजली।

ख़िरमन – खलियान (बिजली खलियान को जलाती है और 'अिश्क़ दिल को)

६ चारःजूई – 'अिलाज करवाना।

ता'न – ताना, कटाक्ष।

ज़ख़्म-ए-सोज़न (सूज़न अशुद्ध है) – सुई चुभने का घाव।

७ बहार-ए-नाज़ – बहुत हसीन मा'शूक़, अनन्य रूपसी।

जल्वः-ए-गुल – फूलों की छवि (बहार)

गर्द – धूल।

मदफ़न – क़ब्र।

८ हयूला – मूल पदार्थ।

ज़ौक़-ए-दर्द – वेदना का चाव।

फ़ारिग़ – निश्चिंत, प्राप्तवकाश, अन्यस्त।

९ नख़्वत – दर्प, अभिमान।

क़ुल्ज़ुम आशामी – सागर को पी जाना, बलानोशी, बहुत शराब पीना।

मौज-ए-मै – मदीरा की तरंग।

मीना – मदीरा पात्र।

१० फ़िशार-ए-ज़ो'फ़ – दुर्बलता का दबाव।

नातवानी – (नातुवानी) दुर्बलता, कमज़ोरी।

नुमूद – प्रकटन।

११ ग़ुर्बत – प्रदेश।

क़द्र – इज़्ज़त, सम्मान।

मुश्त-ए-ख़स – मुट्ठी भर घास।
गुलख़न (गिलख़न) – आग की मट्टी।

८९

१ 'ओह्दे ('ओह्दः) – पद।
मद्ह-ए-नाज़ – सौन्दर्य की प्रशंसा।
अदा –हाव-भाव।
क़ज़ा – मौत, मृत्यु।
(पद से बाहर न आसका का अर्थ है कर्तव्य पालन न कर सका, या'नी जान एक है और मा'शूक़ की अदाएँ हज़ारों)।
२ हल्क़े – बालों के छल्ले।
चश्महा-ए-कुशादः – खुली हुई आँखें, उन्मीलित नयन।
ब सू-ए-दिल – मेरे दिल की ओर।
हर तार-ए-ज़ुल्फ़ – एक-एक बाल।
निगह-ए-सुर्मः सा – सुर्मे से अलंकृत दृष्टि।
३ सद हज़ार – एक लाख, असंख्य।
नवा-ए-जिगर ख़राश – जिगर को घायल करने वाला स्वर।
न शनीदन (शुनीदन ग़लत है) – न सुनना।
४ गुमाँ – भ्रम, विचार।
मुनफ़'इल न चाह – लज्जित न कर।
खुदा न करदः – खुदा न करे।

९०

२ ज़ो'फ़ – दुर्बलता, कमज़ोरी।
ता'नः-ए-अग़यार – शत्रुओं का ता'नः।
शिकवः – शिकायत।

९१

१ ब वक़्त-ए-मै परस्ती – शराब पीते वक़्त।
'उज़्र-ए-मस्ती – मस्ती का बहाना।
२ ग़ुरूर-ए-औज-ए-बिना-ए-'आलम-ए-इम्काँ – ('आलम-ए-इम्काँ–संभावनाओं का संसार, अखिल विश्व) यह गर्व कि संसार अत्यंत महान है।
बलन्दी – ऊँचाई।
पस्ती – नीचाई, ज़वाल, पतन।
३ फ़ाक़ः मस्ती – भूख में भी मस्त रहना।
४ नग़मःहा-ए-ग़म – वेदना के गीत।
बेसदा – निःस्वर, स्वरहीन।
साज़-ए-हस्ती – अस्तित्व का साज़, प्राणवीणा।
५ सरापा नाज़ – सर से पाँव तक गर्व, अभिमान की मूर्ति।
शेवः – व्यवहार।
पेशदस्ती – पहल करना, हाथ डालना।

९२

१ जफ़ा – अन्याय, अत्याचार, निर्ममता।
तर्क-ए-वफ़ा – बेवफ़ा होजाना।
गुमाँ – सदेह।
वगरनः – वर्नः, अन्यथा।
मुराद – अभिप्राय।
२ लुत्फ़-ए-ख़ास – विशेष कृपा।
पुरसिश – पूछ-गछ, कुशलक्षेम पूछना।
पा-ए-सुख़न – वार्त्ता-चरण (शब्द)।
दरमियाँ – बीच में, मध्य।
३ 'अज़ीज़ – प्रिय।
४ दुश्नाम – गाली।
दहाँ – मुँह (मा'शूक़ के छोटे दहाने पर व्यंग है)।
५ हरचन्द – यद्यपि।
जाँगुदाज़ि-ए-क़हर-ओ-'इताब – क्रोध और रोष जनित कष्ट।
पुश्त गर्मि-ए-ताब-ओ-तवाँ – (पुश्त गर्मी–सहारा) संतोष का सहारा।
६ जाँ – प्राण।
मुतरिब-ए-तरानः-ए-हल मिन मज़ीद – "क्या कुछ और है" के गीत का गायक।
लब – होंठ, अधर।
पर्दः संज-ए-ज़मज़मः-ए-अलअमाँ – (अलअमाँ–त्राहिमाम) त्राहिमाम के गीत को गाने वाले (पाँचवाँ और छठा शे'र दोनों मिलकर पूरा अर्थ देते हैं, या'नी दुख और अत्याचार जितने बढ़ते हैं उतना ही अधिक आनंद मिलता है और मैं और दुख माँगने लगता हूँ)।
७ दुनीम – दो टुकड़े।
मिश़ः – पलकें, दृग-अंचल।
खूँचकाँ – रक्त रंजित।
८ नँग-ए-सीनः – वक्ष के लिए लज्जा।
आतश कदः – अग्निशाला।
'आर-ए-दिल – दिल के लिए लज्जा।
नफ़स – साँस।
आज़र फ़िशाँ – अग्निवर्षक।
९ जुनूँ – उन्माद।
बयाबाँ – जंगल, अरण्य।
गिराँ – मँहगा।
१० सरनविश्त – भाग्य।
जबीं – माथा, मस्तक।
सिजदः-ए-बुत – (सजदः) मूर्त्ति (मा'शूक़) को सिजदः करना।
११ दाद – प्रशंसा।
कलाम – रचना, कविता।
रूहुलक़ुदुस – जिब्रील, एक फ़रिश्ते का नाम जो खुदा का संदेश लेकर आता है।
हमज़बाँ – समभाषी।
१२ बहा-ए-बोसः – चुम्बन का मूल्य।
नीमजाँ – अधमुआ, अर्धमृत।

१ माने'-ए-दश्त नवर्दी – जंगल-जंगल भटकने से रोकनेवाली।
तद्बीर – युक्ति।
२ शौक़ – कामना, आकांक्षा।
दश्त – मैदान।
जाद: – पथ, रास्ता।
ग़ैर अज़ निगह-ए-दीद:-ए-तस्वीर – चित्र में अंकित नयनों की दृष्टि से अलग।
३ हसरत-ए-लज़्ज़त-ए-आज़ार – दुखों से आनंद प्राप्त करने की लालसा।
जाद:-ए-राह-ए-वफ़ा – प्रेम-मार्ग।
जुज़ दम-ए-शमशीर – तलवार की धार के सिवा।
४ रंज-ए-नौमीदि-ए-जावेद – शाश्वत निराशा का शोक।
गवारा – रुचिकर।
नाल: – आर्त्तनाद।
ज़बूनी कश-ए-तासीर – प्रभाव के आभार की लज्जा उठानेवाला।
५ लज़्ज़त-ए-संग – पत्थर का मज़ा, पत्थर की चोट खाने का आनंद।
ब अन्दाज़-ए-तक़रीर नहीं – वर्णनातीत, वर्णन से परे।
६ करम – कृपा, मेहरबानी (मा'शूक़ जो कृपा की मूर्ति है)
रुख़्सत-ए-बेबाकि-ओ-गुस्ताख़ी – उद्दत और निर्भय होने की अनुमति।
तक़सीर – अपराध।
ब जुज़ ख़ज्लत-ए-तक़सीर – अपराध पर लज्जित होने के सिवा।
७ 'अक़ीद: – विश्वास।
ब क़ौल-ए-नासिख़ – नासिख (एक कवि) के कथानुसार।
८ बेबहर: – मूर्ख।
मो'तिक़द-ए-मीर – मीर के प्रति श्रद्धा रखनेवाला।
(मीर को उर्दू काव्य का ख़ुदा माना जाता है)

९४

१ मर्दुमक-ए-दीद: – आँखों की पुतली।
सुवैदा-ए-दिल-ए-चश्म – (सुवैदा दुखों से पड़नेवाला दिल का दाग़) आँखों के दिल का दाग़ (पुतली)

९५

१ बर्शकाल-ए-गिरियः-ए-'आशिक़ – 'आशिक़ के रुदन का वर्षाकाल।
मानिन्द-ए-गुल – फूल की तरह।
जा – जगह
दीवार-ए-चमन – बाग़ की दीवार।
२ उल्फ़त-ए-गुल – फूल का प्रेम।
दा'व:-ए-वारस्तगी – आज़ाद होने का दा'वा।
सर्व – एक वृक्ष जिसकी हरियाली सदाबहार है लेकि उसमें फूल व फल नहीं आते और वह हेमंत से बचा रहता है इसलिए उसको आज़ाद कहते हैं।
बा वस्फ़-ए-आज़ादी – आज़ादी के बावजूद।
गिरफ़्तार-ए-चमन – (गिरिफ़्तार) उद्यान का बन्दी।

९६

१ तासीर – प्रभाव।
नौमीद – निराशा।
जाँसुपारी – प्राण किसी के हवाले करना, प्राण देना।
शजर-ए-बेद – बेंत का वृक्ष (जिसमें फल-फूल नहीं होते), निष्फल।
२ दस्त बदस्त – हाथों हाथ।
जाम-ए-मै – मधुपात्र।
ख़ातम-ए-जमशेद – जमशेद की अँगूठी (जमशेद प्राचीन ईरान का महान सम्राट था; उसका शराब का प्याला प्रसिद्ध है। सम्राट की अँगूठी पर उसका नाम होता है और उसे केवल वह ही पहन सकता है। शराब का प्याला किसी सम्राट की अँगूठी नहीं है कि जिसे कोई दूसरा छू न सके)
३ तजल्ली – ज्योति, प्रभा, आलोक।
सामान-ए-वुजूद – अस्तित्व का कारण।
ज़र्र: – कण।
बे परतव-ए-ख़ुर्शीद – सूर्य के आलोक के बिना।
४ राज़-ए-मा'शूक़ – प्रेयसी का रहस्य।
रुस्वा – बदनाम।
५ गर्दिश-ए-रंग-ए-तरब – हर्ष की अवस्था की संक्रांति।
ग़म-ए-महरूमि-ए-जावेद – शाश्वत महरूमी (वंचित होने) का ग़म।

९७

१ नक़्श-ए-क़दम – पदचिह्न।
ख़ियाबाँ ख़ियाबाँ – क्यारी-क्यारी, रविश रविश।
इरम – स्वर्गोद्यान नंदन कानन (एक पुराने बादशाह शद्दाद का बनाया हुआ कृत्रिम स्वर्ग)
२ दिल आशुफ़्तगाँ – (उद्विग्न हृदयवाले) 'आशिक़।
ख़ाल-ए-कुँज-ए-दहन – अधरों के कोने में स्थित तिल।
सुवैदा – काला दाग़।
(मा'शूक़ का छोटा दहाना जो न होने के बराबर है अनस्तित्व का नमूना है)।
सैर-ए-'अदम – अनस्तित्व का तमाशा।
३ सर्व क़ामत – सर्व वृक्ष का सा आकार।
क़द्-ए-आदम – आदमी के क़द के बराबर।
क़यामत – (क़ियामत) प्रलय।
फ़ितने – (फ़ितन:) उपद्रव, विपत्ति।
४ तमाशा कर – हमारा तमाशा देख।
महव-ए-आईनादारी – आत्म-शृंगार में लीन।
तमन्ना – अभिलाषा, कामना, चाव, शौक़।
५ सुराग़-ए-तुफ़-ए-नाल: – आर्त्तनाद की तपन और द्रवण की खोज।
शब रौ – रात का राही।
६ तमाशा-ए-अहल-ए-करम – कृपालुओं (दानियों) का तमाशा।

९८

१ खू-ए-यार – मित्र का स्वभाव।
नार – आग (नरक)
इल्तिहाब (इल्तहाब ग़लत है) – ज्वाला, लपट, धधक।
राहत – सुख, चैन, आराम।
'अज़ाब – यमयातना, पाप का दण्ड।
२ जहान-ए-ख़राब – दुखमय संसार।
शबहा-ए-हिज्र – विरह की रातें।
४ क़ासिद – पत्रवाहक।
५ दौर-ए-जाम – घूमता हुआ मधुपात्र।
६ मुन्किर-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह से मुकरनेवाला।
फ़रेब – धोखा।
बदगुमाँ – संदेहशील।
दुश्मन के बाब में – शत्रु के संबंध में।
७ मुज़्तरिब – विकल, अधीर।
वस्ल – प्रिय-मिलन।
ख़ौफ़-ए-रक़ीब – प्रतिद्वंदी का भय।
वह्म – शंका।
पेच-ओ-ताब – कुढ़न में बल खाना।
८ हज़्ज़-ए-वस्ल – प्रिय-मिलन का आनंद।
ख़ुदासाज़ बात – ईश्वर की देन।
जाँ – प्राण।
नज़्र – उपहार।
इज़्तिराब – व्याकुलता, घबराहट, आतुरता।
९ तर्फ़-ए-निक़ाब – नक़ाब का कोना।
१० 'अिताब – ग़ुस्सा, क्रोध।
११ ख़स – तृण।
शिगाफ़ – दरार।
आफ़ताब – सूर्य।
१२ सेह्र – जादू।
मुद्'आ तलबी – उद्देश्यपूर्ति।
सफ़ीनः – नाव, कश्ती, नौका।
रवाँ हो – चले।
सराब – मृगजल।
१३ रोज़-ए-अब्र-ओ-शब-ए-माहताब – घटाओं घिरे दिन और चाँदनी रातें।

९९

१ ख़िस्सत – कंजूसी, कृपणता।
सू-ए-ज़न – दुर्भावना।
साक़ि-ए-कौसर के बाब में – कौसर के साक़ी के संबंध में (मुसलमानों का विश्वास है कि स्वर्ग में पवित्र मदिरा की एक नहर, कौसर, है और स्वर्ग में जानेवालों को हज़रत 'अली अपने हाथ से पिलायेंगे। इसलिए उनको साक़ि-ए-कौसर कहा जाता है)
२ ज़लील – अपमानित।
गुस्ताख़ि-ए-फ़रिश्तः – फ़रिश्तों की अशिष्टता।
हमारी जनाब में – हमारी ड्योढ़ी पर, हमारी उपस्थिति में (शैतान पहले एक बहुत बड़ा फ़रिश्तः, देवदूत, था। जब ख़ुदा ने आदम को बनाया और फ़रिश्तों को सिजदः करने का हुक्म दिया तो सब फ़रिश्तों ने आदम को सिजदः किया लेकिन 'अिज़्राईल ने इन्कार कर दिया। इसपर ख़ुदा ने उसे सज़ा दी और आसमानों से बाहर निकाल दिया। अब वही 'अिज़्राईल दुनिया में शैतान है)
३ दम-ए-समा'अ – गाना सुनते समय (समा'अ–श्रवण, राग, गान)
सदा – आवाज़, ध्वनि, नाद।
चंग-ओ-रबाब – वाद्य यंत्रों के नाम।
४ रौ – गति।
रख़्श-ए-उम्र – जीवन-अश्व।
५ हक़ीक़त – वास्तविकता।
बो'द – दूरी।
वह्म-ए-ग़ैर – अन्य का भ्रम।
पेच-ओ-ताब – कुढ़न में बल खाना।
६ अस्ल-ए-शुहूद-ओ-शाहिद-ओ-मशहूद – शुहूद (उपस्थित) शाहिद (प्रत्यक्षदर्शी) और मशहूद (अवलोकनीय) का मूल।
हैराँ – चकित।
मुशाहिदः – अवलोकन।
७ मुश्तमिल – सम्मिलित।
नुमूद-ए-सुवर – रूप का प्रकटन।
वुजूद-ए-बह्र – सागर का अस्तित्व।
क़तरः-ओ-मौज-ओ-हबाब – बूँद, लहर और बुलबुला।
८ शर्म – लज्जा।
अदा-ए-नाज़ – सौन्दर्याभिमान की अदा।
बेहिजाब – बेपर्दः।
९ आराइश-ए-जमाल – सौन्दर्य का शृंगार।
फ़ारिग़ – निवृत्त, निश्चिंत।
हनोज़ – अभी तक।
पेश-ए-नज़र – दृष्टि के सामने।
दाइम – सदैव, हमेशः।
१० ग़ैब-ए-ग़ैब – परोक्ष का परोक्ष।
शुहूद – उपस्थित।
११ नदीम-ए-दोस्त – मित्र का साथी।
बू-ए-दोस्त – मित्र की गंध।
मशग़ूल-ए-हक़ – ख़ुदा की 'अिबादत में व्यस्त।
बन्दगि-ए-बूतुराब – हज़रत 'अली की वन्दना।
(पाँचवें से लेकर ११ वें तक सब शे'र तसव्वुफ़ के हैं। लेकिन ८ वाँ और ९ वाँ शे'र तसव्वुफ़ से अलग भी अर्थ देता है)

१००

१ मक़दूर – सामर्थ्य।
नौहःगर – शोक मनानेवाला।
२ रश्क – ईर्ष्या।
३ रक़ीब – प्रतिद्वंदी।
रहगुज़र – पथ, राह।
५ बे नँग-ओ-नाम – बेआबरू, अनादृत।
६ तेज़ रौ – तीव्र गामी, तेज़ चलनेवाला।
राहबर – मार्गदर्शक।
७ परस्तिश – पूजा।
बुत-ए-बेदादगर – ज़ालिम मा'शूक़।
८ बे ख़ुदी – आत्मविस्मृति।
राह-ए-कू-ए-यार – यार की गली की राह।
वगरनः – वर्नः।
९ क़ियास – अनुमान।
अह्ल-ए-दह्र – दुनियावाले, संसारी।
दिल पिज़ीर – मनोहर, मूल्यवान।
मता'-ए-हुनर – कला की संपत्ति।
१० सवर-ए-समन्द-ए-नाज़ – गर्व के अश्व पर आरोहित, गर्वित।
'अली बहादुर-ए-'आली गुहर – कुलीन 'अली बहादुर (ग़ालिब के एक रईस दोस्त का नाम)

१०१

१ ज़िक्र – चर्चा।
बबदी – बुराई के साथ।
मंज़ूर – पसंद, स्वीकृत।
२ वा'दः-ए-सैर-ए-गुलिस्ताँ – उद्यान की सैर का वा'दः।
ख़ुशा – वाह-वाह, क्या कहना।
ताले'-ए-शौक़ – शौक़ (अभिरुचि) का भाग्य।
मुश्दः-ए-क़त्ल – क़त्ल की ख़ुशख़बरी।
मुक़द्दर – भाग्य।
मज़कूर – चर्चित, वर्णित।
३ शाहिद-ए-हस्ति-ए-मुतलक़ – परम पुरुष (ब्रह्म)
'आलम – विश्व।
(ग़ालिब ने अतिशयोक्ति से काम लिया है जहाँ उसने मा'शूक़ की पतली कमर को इतना पतला कर दिया है कि वह अस्तित्वहीन होगई है। ऐसी ही अतिरंजना ग़ज़ल १००, शे'र ४ में है)
४ क़तरः – बूँद।
हक़ीक़त में – वास्तव में।
दरिया – सागर।
तक़लीद-ए-तुनुक ज़रफ़ि-ए-मंसूर – मन्सूर के ओछेपन का अनुकरण [मन्सूर एक सूफ़ी था जिसको अनलहक़, मैं सत्य हूँ, मैं ब्रह्म हूँ (अहमस्मि) कहने पर सूली चढ़ा दिया गया था]
५ हसरत – हाय रे मेरी अभिलाषा।
ज़ौक़-ए-ख़राबी – बर्बाद होने का चाव।
'अिश्क़-ए-पुर'अर्बदः – जंगजू 'अिश्क़।
गौं – योग्य।
तन-ए-रँजूर – दुख भरा शरीर, रोगी तन।
६ र'अनत – अहंकार, घमंड।
हूर – अप्सरा।
७ लुत्फ़ दरेग़ आता हो – कृपा करने को मन न करता हो।
तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।
मा'ज़ूर – विवश।
८ दुर्दीकश-ए-पैमानः-ए-जम – (जम जमशेद का संक्षिप्त नाम जो प्राचीन ईरान का महान सम्राट था। उसका मधुपात्र बहुत बड़ा था) जमशेद के मधुपात्र की तलछट तक पी जानेवाले।
वाय, वह बादः – उस शराब पर ला'नत।
अफ़शुर्दः-ए-अँगूर – अंगूर का सत्त्व, अंगूरी शराब।
९ ज़ुहूरी (ज़हूरी अशुद्ध है) – एक फ़ारसी कवि (अर्थ, प्रकट होनेवाला)
मुक़ाबिल में – सामने, तुलना में।
ख़िफ़ाई – छिपा हुआ, गुमनाम।
हुज्जत – सुबूत।

१०२

१ नालः – आर्त्तनाद।
. जुज़ – सिवाय, अतिरिक्त।
हुस्न-ए-तलब – ख़ूबसूरती से माँगना, बिनमाँगे माँगना।
सितमईजाद – ज़ालिम, अत्याचारी।
तक़ाज़ा-ए-जफ़ा – अत्याचार करने का तक़ाज़ा।
शिकवः-ए-बेदाद – अत्याचार की शिकायत।
२ 'अिश्रतगह-ए-ख़ुसरु (ख़ुसरौ) – ख़ुसरौ का विलास-भवन
तसलीम – स्वीकृत।
निकुनामि-ए-फ़रहाद – फ़रहाद की नेकनामी (ख़ुसरौ ईरान का बादशाह था जिसने धोखे से फ़रहाद की प्रेयसी शीरीं से शादी करली थी। फ़रहाद शीरीं के महल, क़स्र-ए-शीरीं, का मज़दूर था)।
३ वुस'अत – विस्तार, फैलाव।
दश्त – जंगल, मैदान।
४ अह्ल-ए-बीनिश – आँखवाले, अक़्लमंद, बुद्धिमान।
तूफ़ान-ए-हवादिस – विपत्तियों की अधिकता।
मकतब – पाठशाला।
लतमः-ए-मौज – लहरों का थपेड़ा।
कम अज़ सेलि-ए-उस्ताद – गुरु के तमाचे से कम।
५ वाये – हाय अफ़सोस।
महरूमि-ए-तसलीम – हमारी स्वीकृति जो मा'शूक़ की कृपा से वंचित है।
वदा हाल-ए-वफ़ा – वफ़ा की दुर्गति।
ताक़त-ए-फ़रियाद – आर्त्तनाद की शक्ति।

६ रंग-ए-तमकीन-ए-गुल-ओ-लालः-(तमकीन का अर्थ शक्ति और सहन है किन्तु ग़ालिब ने यहाँ शान और अहंकार के अर्थ में प्रयोग किया है) फूलों के अहंकार का रंग।
चराग़ान-ए-सर-ए-रहगुज़र-ए-बाद – पवन के पथ के दीपक।
७ **सबद-ए-गुल** – फूलों की टोकरी।
गुलचीं – फूल तोड़ने वाला।
मुज़्दः – शुभ समाचार।
मुर्ग़ – चिड़िया, बुलबुल।
सय्याद – व्याध।
८ **नफ़ि** – नकार।
इस्बात – सकार।
तराविश – स्राव।
गोया – जैसे, मानो।
जा-ए-दहन – मुँह की जगह।
दम-ए-ईजाद – सृष्टि के समय:
९ **जल्वःगरी** – रौनक़, शोभा।
कूचे (कूचः) – गली।
वले – लेकिन, किन्तु।
१० **ग़ुर्बत** – प्रवास।
बेमेहूरि-ए-यारान-ए-वतन – देशवासी मित्रों की बेवफ़ाई।

१०३

२ **नाचार** – लाचार, मजबूर।
३ **हवाख़्वाह** – हमदर्द, मित्र।
अह्ल-ए-बज़्म – महफ़िल वाले।
जाँ गुदाज़ – प्राण को पिघलाने वाला, जान लेवा।
ग़मख़्वार – हमदर्द।

१०४

१ **ग़ैर** – रक़ीब, प्रतिद्वंदी।
शीरीं बयानी – मधुभाषिता।
कारगर – प्रभावकर।
गुमाँ – शंका।

१०५

१ **दश्त-ए-क़ैस** – मजनूँ का जंगल (मजनूँ लैला के प्रेम में जंगल-जंगल मारा-मारा फिरता था)।
२ **दिल-ए-नाज़ुक** – कोमल हृदय।
सरगर्म – संलग्न।
उल्फ़त – प्रेम।

१०६

१ **तन्हा** – अकेला।
बारे – अन्ततः।
बेकसी – निस्सहायता, असहायता।
दाद – न्याय, प्रशंसा।
२ **ज़वाल आमदः** – पतनोन्मुख, ह्रासोन्मुख।
अज्ज़ा – अंश का बहुवचन।
आफ़रीनिश – सृष्टि।
मेहूर-ए-गर्दूं – आकाश का सूर्य।
चराग़-ए-रहगुज़ार-ए-बाद – पवन के पथ का दीप।

१०७

१ **हिज्र** – विरह।
सबा – हवा, समीर।
नामःबर – पत्रवाहक।
३ **दस्त-ओ-बाज़ू** – हाथ और बाँहें।
४ **जवाहिर-ए-तर्फ़-ए-कुलाह** – टोपी में टँके हुए रत्न।
औज-ए-ताले'-ए-ला'ल-ओ-गुहर – (औजे ग़लत छपा है) हीरे-मोती के भाग्य की ऊँचाई।

१०८

१ **क़ियामत** – (क़यामत) प्रलय।
ए'तिक़ाद – विश्वास।
शब-ए-फ़िराक़ – विरह-यामिनी।
रोज़-ए-जज़ा – अंतिम न्याय का दिन।
ज़ियाद – ज़्यादा (अधिक कठोर)
२ **शब-ए-मह** – चाँदनी रात।
अब्र-ओ-बाद – घटाएँ और हवाएँ।
३ **मरहबा** – शुभागमन, सुस्वागतम्।
ख़ैरबाद – ख़ुदा हाफ़िज़, विदाई के समय शुभ-संबोधन।
४ **फ़ितः-ओ-फ़साद** – गड़बड़, धमा-चौकड़ी, उपद्रव।
५ **गदा-ए-कूचः-ए-मैख़ानः** – मदिरालय की गली का भिक्षुक।
नामुराद – अपूर्णकाम।
६ **ग़म-ओ-शादी** – दुख और सुख।
बहम – एक साथ।
शाद – ख़ुश, सुखी।

१०९

१ **तौसन** – अश्व, घोड़ा।
सबा – हवा, पवन।
(उर्दू में वर्णन करने को मज़मून (विषय) बाँधना कहते हैं। बाँधने का अर्थ उपमा देना और लिखना भी है)।
मज़मूँ – विषय।
हवा बाँधना – मुहावरा जिसका अर्थ है धाक बाँधना।
३ **फ़ुर्सत** – अवकाश (यहाँ अवधि अर्थ है)

मुक़ाबिल – सामने, तुलना में।
बर्क़ – बिजली।
पा ब हिना – मेंहदी लगे पाँव (गतिहीन)
४ **क़ैद-ए-हस्ती** – जीवन-पाश, जीवन की क़ैद।
अश्क – आँसू।
बे सर-ओ-पा – बिना सर और पैर (आदि-अंत रहित)
५ **नश्शः-ए-रँग** – रंग का नशा।
वाशुद-ए-गुल – फूलों का खिलना।
बन्द-ए-क़बा (क़िबा अशुद्ध है) – (क़बा–अँगरखे की तरह का एक वस्त्र) क़बा की डोरियाँ।
६ **ग़लतीहा-ए-मज़ामीं** – (हा–बहुवचन) विषयों की ग़लतियाँ।
नाले (नालः) – आर्त्तनाद।
रसा – पहुँचा हुआ, सफल, प्रभावपूर्ण।
७ **अहल-ए-तदबीर** – बुद्धिमान लोग।
यामान्दगियाँ – थकन, लाचारी, मजबूरी।
आबलों (आब्लः) – छाला)
हिना – मेंहदी।
८ **सादः पुरकार** – देखने में कमसमझ और भोले, किन्तु वास्तव में चतुर और कपटी।
ख़ूबाँ – ख़ूबसूरत लोग, मा'शूक़।
पैमान-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह की प्रतिज्ञा।

११०

१ **ज़मानः** – समय, संसार।
सख़्त कम आज़ार – बहुत कम दुख पहुँचानेवाला।
ब जान-ए-असद – असद की जान की सौगंध।
वगरनः – वर्नः। वर्ना
तवक़्क़ो'अ – आशा।

१११

१ **दाइम** – हमेशा, सदैव।
दर – द्वार, चौखट।
२ **गर्दिश-ए-मुदाम** – (गर्दिश–चक्कर) हमेशा की परेशानी।
पियालः-ओ-साग़र – पुराने ज़माने में एक ही प्याले या पात्र से शराब पी जाती थी, इसलिये वह घूमता था।
३ **यारब** – ऐ ख़ुदा।
लौह-ए-जहाँ – संसार का पृष्ठ।
हर्फ़-ए-मुक़र्रर – दूसरी बार लिखा हुआ अक्षर, फ़ालतू या अधिक अक्षर।
४ **'उक़ूबत** – तकलीफ़, कष्ट, दुख।
काफ़िर – अनास्थावादी।
५ **'अज़ीज़** – प्रिय।
ला'ल-ओ-ज़मर्रुद-ओ-ज़र-ओ-गौहर – (ज़ुमुर्रुद) ला'ल, पन्ना, सोना और मोती।
६ **दिरेग़** – (दरेग़ अशुद्ध है) शोक, संकोच (ग़ालिब ने इस शब्द का अंतर के अर्थ में प्रयोग किया है)
रुतबः – पद।
मेहर-ओ-माह – चाँद और सूरज।
७ **मन'-ए-क़दम बोस** – पैर चूमने से मना करना।
८ **वज़ीफ़ःख़्वार** – वज़ीफ़ा खाने (पाने) वाले।

११२

१ **लालः-ओ-गुल** – लाले और गुलाब के फूल (फूल, बाग़ और बहार तीनों के लिए प्रयुक्त होता है)
नुमायाँ – प्रकट।
पिन्हाँ – विलीन।
२ **रँगारँग** – बहुरंगी, विविधरूप।
बज़्म आराइयाँ – हर्ष और ऐश्वर्य की महफ़िलें गर्म करना।
नक़्श-ओ-निगार-ए-ताक़-ए-निसियाँ – विस्मृति के ताक़ में सजे बेल बूटे।
३ **बनातुन्ना'श-ए-गर्दूं** – सप्तर्षि मंडल।
निहाँ – गुप्त, छिपी हुई।
शब – रात।
उरियाँ – नग्न, निरावरण।
४ **या'क़ूब** – एक पैग़म्बर का नाम। (यूसुफ़ उनके बारहवें बेटे थे जो अत्यंत सुन्दर थे। उनके भाइयों ने ईर्ष्यावश उन्हें एक कुएँ में फेंक दिया जहाँ से व्यापारियों का एक क़ाफ़िला उन्हें निकाल लेगया और मिस्र में ग़ुलाम के रूप में बेच दिया। ज़ुलैख़ा ने उनके रूप पर मोहित हो उन्हें ख़रीद लिया। लेकिन यूसुफ़ को ज़ुलैख़ा से कोई लगाव नहीं था इसलिए उसने अपने पति 'अज़ीज-ए-मिस्र से झूठी शिकायत करके उन्हें क़ैद करा दिया। यूसुफ़ के शोक में रोते-रोते या'क़ूब की आँखें अंधी होगईं। इन आँखों को ग़ालिब ने रौज़न-ए-दीवार-ए-ज़िंदाँ (कारागृह की दीवार का छेद) कहा है। जैसे रौज़न हर समय यूसुफ़ को तकता रहता था वैसे ही या'क़ूब की आँखें कल्पना में यूसुफ़ को देखती रहती थीं, या रौज़न की तरह सफ़ेद होगई थीं)
५ **रक़ीब** – प्रतिद्वंदी।
ज़नान-ए-मिस्र – मिस्र की नारियाँ।
महव-ए-माह-ए-कन'आँ – कन'आँ (यूसुफ़ का देश) के चाँद में लीन (जब मिस्र की नारियाँ ज़ुलैख़ा पर हसीं कि वह अपने ग़ुलाम पर आसक्त होगई है तो ज़ुलैख़ा ने उनकी दा'वत की और उनको फल और छुरी दे दी और हुक्म दिया कि जब मैं कहूँ तब फल काटना। फिर यूसुफ़ को इशारा किया कि वह उन महिलाओं के बीच से गुज़र जायें। वे औरतें यूसुफ़ के रूप में ऐसी खोगईं कि फल के बजाय अपनी उँगलियाँ काट बैठीं और कहने लगीं कि यूसुफ़ इन्सान नहीं हैं फ़रिश्ता हैं)।
६ **जू-ए-ख़ूँ** – रक्त की धारा।
शाम-ए-फ़िराक़ – विरह की संध्या।
फ़ुरोज़ाँ – प्रज्वलित।
७ **परिज़ाद** – परी, अप्सरा, रूपसी।
ख़ुल्द – स्वर्ग।
इन्तक़ाम – बदला, प्रतिशोध।
क़ुदरत-ए-हक़ – ख़ुदा की क़ुदरत (शक्ति)

हूर – अप्सरा।

८ ज़ुल्फ़ें – अलकें।

परीशाँ होगईं – बिखर गईं।

९ दबिस्ताँ – पाठशाला।

नाले – आर्त्तनाद।

ग़ज़लख्वाँ – ग़ज़ल गानेवाला, गायक।

१० कोताहि-ए-क़िस्मत – कमनसीबी, हीन भाग्य।

मिश़गाँ – पलकें, दृगाँचल, बरौनियाँ।

११ पै ब पै – बारंबार।

बख़्यिः-ए-चाक-ए-गरीबाँ – फटे हुए गरीबान की सीवन के टाँके।

१२ सर्फ़-ए-दरबाँ – दरबान पर खत्म।

१३ जाँ फ़िज़ा – प्राणवर्द्धक, आत्मा को आनंदित करनेवाली।

बादः – मदिरा।

गोया – जैसे।

रग-ए-जाँ – शिराएँ।

१४ मुव्वहिद – समस्त सृष्टि को एक माननेवाला।

केश – तरीक़ा, धर्म।

तर्क-ए-रुसूम – रीति-त्याग, प्रकट पूजा-पाठ का त्याग।

मिल्लत – सम्प्रदाय।

अज्ज़ा-ए-ईमाँ – आस्था के अंश।

१५ खूगर हुआ – आदी हुआ, अभ्यस्त हुआ।

१६ अहूल-ए-जहाँ – दुनियावालो।

वीराँ – वीरान, निर्जन, उजाड़।

११३

१ दीवानगी – दीवानापन, उन्माद।

दोश – कंधा, स्कंध।

ज़ुन्नार – जनेऊ, (मूर्तिपूजा या'नी 'अिश्क़ का प्रतीक)

जैब – गरीबान, कुरते की कंठी।

तार – धागा।

२ नियाज़-ए-हसरत-ए-दीदार – दर्शन की अभिलाषा की भेंट।

ताक़त-ए-दीदार – दर्शन की शक्ति।

आसाँ – सहल, आसान, सरल।

३ दुश्वार – कठिन।

४ ब क़द्र-ए-लज़्ज़त-ए-आज़ार – दुखों का आनंद उठाने के योग्य।

५ शोरीदगी – जुनून, उन्माद।

वबाल-ए-दोश – कंधों के लिए दूभर।

सहरा – जंगल, वीरानः।

६ गुंजाइश-ए-'अदावत-ए-अग़यार – परायों से बैर की समाई।

ज़ो'फ़ – कमज़ोरी, दुर्बलता।

हवस-ए-यार – मा'शूक़ की चाहत।

७ नालःहा-ए-ज़ार – निर्बल आर्त्तनाद।

नवा-ए-मुर्ग़-ए-गिरफ़्तार – (गिरिफ़्तार) पिंजरे में बंद पंछी की आवाज़।

८ सफ़-ए-मिश़गाँ – पलकदल।

रूकशी – मुक़ाबला, सामना।

ताक़त-ए-ख़लिश-ए-ख़ार – काँटों की चुभन सहन करने की शक्ति।

१० ख़ल्वत-ओ-जल्वत – एकांत और प्रकट।

बारहा – अनेक बार, बारंबार।

११४

१ दरख़ुर – योग्य।

तार-ए-अश्क-ए-यास – निराशा के आँसुओं का तार।

रिश्तः – धागा।

चश्म-ए-सोज़नं – (सूज़न अशुद्ध है) सुई की आँख, सुई का नाका।

२ माने'-ए-ज़ौक़-ए-तमाशा – तमाशे से रोकनेवाली।

ख़ानःवीरानी – घर की वीरानी।

कफ़-ए-सैलाब – जलप्लावन का झाग।

बरँग-ए-पंबः – रुई की तरह।

रौज़न – दीवार का छेद।

३ वदी'अत ख़ानः-ए-बेदाद-ए-काविशहा-ए-मिश़गाँ – पलकों के अत्याचारों का अमानत घर।

नगीन-ए-नाम-ए-शाहिद – वह नगीना जिस पर मा'शूक़ का नाम अंकित है।

(मा'शूक़ ने अपनी पलकों से मेरे रक्त के हर कण पर अपना नाम अंकित कर दिया है और यह ख़ज़ाना मेरे तन में जमा है)

४ ज़ुल्मत गुस्तरी – अंधकार।

शबिस्ताँ – रात बिताने की जगह (यहाँ अर्थ है घर)

शब-ए-मह – चाँदनी रात।

५ निकोहिश – निंदा, धिक्कार।

माने'-ए-बेदस्ति-ए-शोर-ए-जुनूँ आई – उन्माद के आवेग को अवरुद्ध किया।

ख़न्दः-ए-अहबाब – मित्रों की हँसी।

जैब-ओ-दामन – गरीबान और दामन।

६ मेहूर-वश – सूर्यमुखी, सुन्दरी।

जल्वः-ए-तिम्साल – चित्र-छवि, प्रतिबिम्ब।

परअफ़्शाँ – उड़ना।

जौहर – दर्पण की चमक।

मिस्ल-ए-ज़र्रः – कण की तरह।

७ सोहूबत – साथ, संगति।

मुख़ालिफ़ – विरुद्ध, विपरीत।

गुल – फूल।

गुलख़न – आग की भट्टी (पृष्ठ २७ पंक्ति २ में भूल से भट्टी छप गया है)

ख़स – घासफूस, तृण।

गुलशन – उद्यान।

८ जोश-ए-जुनून-ए-'अिश्क़ – प्रेमोन्माद का आवेश।

सियह – सियाह, काला।

सुवैदा – दिल में दुखों से पड़ा काला दाग़।

९ ज़िन्दानि-ए-तासीर-ए-उल्फ़तहा-ए-ख़ूबाँ – मा'शूक़ों की प्रीत के प्रभाव का बन्दी।

ख़म-ए-दस्त-ए-नवाज़िश – प्यार से गले में पड़ी बाँह।

तौक़ – क़ैदियों की गर्दन में पहनाया जानेवाला लोहे का कड़ा (एक आभूषण का भी नाम है)

११५

१ जहान – दुनिया, संसार।

ख़ाक नहीं – कुछ भी नहीं।

२ मगर – शायद।

ग़ुबार – धूल।

वगरनः – वर्ना, अन्यथा।

ताब-ओ-तवाँ – शक्ति।

बाल-ओ-पर – पंख।

३ बिहिश्त शमाइल – स्वर्गिक गुणों से संपन्न, अनन्य सुन्दरी, अपरिमित सौन्दर्यमयी रूपसी।

ग़ैर-ए-जल्वः-ए-गुल – फूलों की छवि के सिवा।

रहगुज़र – रास्ता, पथ।

४ रहम – दया।

असर – प्रभाव।

नफ़स-ए-बेअसर – बेअसर साँस, प्रभावहीन आर्त्तनाद।

५ ख़याल-ए-जल्वः-ए-गुल – फूलों की कान्ति की कल्पना।

ख़राब – मस्त।

मैकश – शराबी, मद्यप, मधुपायी।

६ ग़ारतगरी – लूटमार, तबाह करना।

शर्मिन्दः – लज्जित।

सिवाय हसरत-ए-ता'मीर – निर्माण की अभिलाषा के अतिरिक्त।

७ 'अर्ज़-ए-हुनर – कला को प्रस्तुत करना।

११६

१ सँग-ओ-ख़िश्त – ईंट-पत्थर।

२ दैर – मन्दिर।

हरम – मस्जिद, का'बः।

दर – द्वार।

आस्ताँ – चौखट।

रहगुज़र – राह, पथ।

३ जमाल-ए-दिलफ़रोज़ – मन को प्रकाशित करनेवाला रूप।

सूरत-ए-मेह्र-ए-नीमरोज़ – दोपहर के सूर्य की तरह।

नज़ारः सोज़ – दृष्टि को जला देने वाला।

४ दश्नः-ए-ग़मज़ः – सैन-कटारी।

जाँसिताँ – जानलेवा।

नावक-ए-नाज़ – सौन्दर्याभिमान का तीर।

बे पनाह – जिससे बचना संभव नहीं।

'अक्स-ए-रुख़ – चेहरे का प्रतिबिम्ब।

५ क़ैद-ए-हयात-ओ-बन्द-ए-ग़म – जीवन-कारा और दुख-बन्धन।

नजात – मुक्ति, छुटकारा।

६ हुस्न – सौन्दर्य, रूप।

हुस्न-ए-ज़न – अच्छा ख़याल, सुविचार।

बुल्हवस – तीव्रकामी, अत्याकांक्षी। (यह शब्द प्रतिद्वंदी के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिसके दिल में मा'शूक़ के लिए निष्कपट प्रेम और त्याग की भावना नहीं होती, बल्कि केवल उसके रूप को पालेने का लोभ होता है)

शर्म – लज्जा।

ए'तिमाद – भरोसा, विश्वास।

ग़ैर – प्रतिद्वंदी।

आज़माये क्यों – क्यों परखे।

७ ग़ुरूर-ए-'अिज़्ज़-ओ-नाज़ – अपनी शान का अभिमान।

हिजाब-ए-पास-ए-वज़्'अ – यह लज्जा कि हम अपनी व्यवहार-प्रणाली कैसे बदलें, अपनी रीति कैसे छोड़ें।

बज़्म – महफ़िल, गोष्ठी।

८ ख़ुदा परस्त – ख़ुदा को माननेवाला।

बेवफ़ा – प्रेम-निर्वाह न करने वाला, निर्मोही।

दीन-ओ-दिल – धर्म और हृदय।

'अज़ीज़ – प्रिय।

९ ग़ालिब-ए-ख़स्तः – दुर्दशाग्रस्त ग़ालिब।

ज़ार ज़ार – फूट-फूटकर।

११७

१ ग़ुंचः-ए-नाशिगुफ़्तः – अनखिली कली।

बोसः – चुम्बन।

२ पुरसिश-ए-तर्ज़-ए-दिलबरी – दिल लेने का तरीक़ा पूछना।

अदा – हाव-भाव।

३ मै – मदिरा।

रक़ीब – प्रतिद्वंदी।

४ ग़ैर – प्रतिद्वंदी।

५ बज़्म – महफ़िल।

रू ब रू – सामने।

ख़मोश (ख़ामोश) – चुप।

मुद्'आ – अभिप्राय।

६ बज़्म-ए-नाज़ – मा'शूक़ की महफ़िल।

तिही – ख़ाली।

सितम ज़रीफ़ – जिसके अत्याचार में भी परिहास हो।

७ बेख़ुदी – आत्मविस्मृति।

८ कू-ए-यार – प्रिय की गली।

वज़्'अ – रीति।

आइनःदार – दर्पण दिखानेवाला।

हैरत-ए-नक़्श-ए-पा – पदचिन्ह का विस्मय।

९ वस्ल – मिलन।

शौक़ – अभिलाषा, अभिरुचि।

ज़वाल – पतन।

मौज – लहर, तरंग।

मुहीत-ए-ग्राब – पानी का घेरा, जल-परिधि, सागर।
दस्त-ओ-पा – हाथ-पाँव।
१० **रेख़्तः** – उर्दू काव्य।
क्योंकि – क्योंकर, किस तरह।
रश्क-ए-फ़ारसी – फ़ारसी भाषा के लिए ईर्ष्या का कारण।
गुफ़्तः-ए-ग़ालिब – ग़ालिब का कहा हुआ शे'र।

११८

१ **हसद** – डाह।
अफ़सुर्दः – उदास, खिन्न।
गर्म-ए-तमाशा हो – तमाशे में लीन हो, दुनिया को ग़ौर से देख।
चश्म-ए-तंग – संकीर्ण नयन।
कसरत-ए-नज़्ज़ारः – दृश्य-विपुलता।
वा हो – उन्मीलित हो, खुले।
२ **बक़द्र-ए-हसरत-ए-दिल** – मन की अपूर्ण कामना के बराबर।
ज़ौक़-ए-म'ग्रासी – गुनाहों की अभिरुचि।
यक गोशः-ए-दामन – दामन का एक कोना।
ग्राब-ए-हफ़्त दरिया – सात सागरों का जल।
३ **सर्व क़द** – सर्व के से आकारवाला।
गर्म-ए-ख़िराम-ए-नाज़ – मंद मंथर गति लीन।
कफ़-ए-हर ख़ाक-ए-गुलशन (खाक ग़लत छप गया है) – बाग की एक-एक मुट्ठी मिट्टी।
शक्ल-ए-क़ुमरी – क़ुमरी (फ़ाख़्ता) की तरह।
नालः फ़र्सा – आर्तनादरत (अर्थात 'आशिक़ होजाना)।

११९

१ **ता'नः** – ताना, व्यंग।
हक़्क़-ए-सोहबत-ए-अह्ल-ए-कुनिश्त – अग्निशाला वालों की सगति का अधिकार (कुनिश्त, अग्निशाला, का शब्द ईरानी परंपरा से उर्दू काव्य में आया है क्योंकि सूफ़ी दूसरे धर्म-मतों का आदर करते थे)।
२ **ता'अत** – 'अिबादत, पूजा, बन्दना।
ता – ताकि।
मै-ओ-अंगबीं (ग़ंगबीं ग़लत छपा है) – शराब और शहद, मदिरा और मधु।
लाग – चस्का, लालच।
दोज़ख़ – नरक।
बिहिश्त – स्वर्ग (ईरान और हिन्दुस्तान की सूफ़ी शा'अिरी में यह खयाल बार-बार दोहराया गया है कि 'अिबादत नरक के डर और स्वर्ग के लालच से नहीं करनी चाहिये। शायद इसका आरंभ एक महान सूफ़ी स्त्री राबि'आ बसरी से हुआ है जो एक हाथ में पानी का कटोरा और दूसरे हाथ में आग की अंगीठी लिए रहती थीं और कहती थीं कि मैं पानी से नरक की आग बुझा दूँगी और आग से स्वर्ग को भस्म कर दूँगी ताकि लोग आराधना केवल ईश्वर के प्रति प्रेमवश करें)।
३ **मुनहरिफ़** (मुंहरिफ़ अशुद्ध है) – विमुख, विद्रोही।

रह-ओ-रस्म-ए-सवाब – पुण्य का पथ और रीति।
क़त – काट (पुराने क़लमों की नोक तिरछी काटी जाती थी)।
क़लम-ए-सरनविश्त – भाग्य-लेखनी।
४ **स'अि** – कोशिश, प्रयास।
लहना – फ़ायदा, लाभ।
ख़िरमन (खरमन अशुद्ध है) – खलियान।
मलख़ टिड्डी।
किश्त – खेती, कृषि।

१२०

१ **वारस्तः** – आज़ाद, स्वतंत्र।
'अदावत – दुश्मनी, शत्रुता।
२ **ज़ो'फ़** – दुर्बलता।
इख़्तिलात – मेल-मिलाप, प्यार, स्नेह।
बार – भार, बोझ।
नक़्श-ए-महब्बत – प्रेम का चिह्न, प्रेम का चित्र।
३ **तज़किरः-ए-ग़ैर** – प्रतिद्वंदी का ज़िक्र।
गिला – शिकायत, उलाहना।
हरचन्द – चाहे।
बरसबील-ए-शिकायत – शिकायत के सिलसिले में।
४ **चारः-ए-ग़म-ए-उल्फ़त** – प्रेम के दुख का उपचार।
५ **बेकसी** – असहायता।
ख़जालत – लज्जा।
६ **बजा-ए-ख़ुद** (बजाये ग़लत छपा है) – स्वयं अपनी जगह।
महशर-ए-ख़याल – कल्पना का हंगामा, कल्पना-व्यापार।
अंजुमन – महफ़िल, परिषद।
ख़ल्वत – एकान्त।
७ **हँगामः-ए-ज़बूनि-ए-हिम्मत** – कमहिम्मती की अधिकता।
इन्फ़ि'आल – लज्जा, शर्मिन्दगी।
हासिल – प्राप्त।
दह्र – ज़माना, संसार।
'अिब्रत – शिक्षा।
८ **वारस्तगी** – आज़ादी, स्वतंत्रता, संसार के मोहपाश से छूटना या'नी त्याग।
बहानः-ए-बेगानगी – परायेपन का बहाना (लोगों से भागने का बहाना)
न ग़ैर से – दूसरे से नहीं।
वहशत – उपेक्षा, त्रास, भय।
९ **फ़ौत-ए-फ़ुर्सत-ए-हस्ती** – जीवन के अवकाश (काल) का अंत।
उम्र-ए-अज़ीज़ – प्रिय जीवन।
सर्फ़-ए-'अिबादत – पूजा में व्यतीत।
१० **फ़ितनः ख़ू** – स्वभाव से उपद्रव बरसानेवाला अर्थात मा'शूक़।
दर – द्वार।
क़यामत – प्रलय, महाविपत्ति।

१२१

१ क़फ़स – पिंजरा।
शेवन – रुदन, नालः, फ़रियाद।
नवा सँजान-ए-गुलशन – उद्यान के गायक (पक्षी)
२ हमदमी – मैत्री, दोस्ती।
रश्क – ईर्ष्या।
आरज़ु-ए-दोस्त – मित्र (मा'शूक़) की कामना।
दुश्मन – शत्रु (रक़ीब, प्रतिद्वंदी)
३ जराहत – ज़ख़्म, घाव।
ख़ूँचकाँ – रक्तरंजित।
मिशगान-ए-सोज़न (सूज़न अशुद्ध है) – सुई की पलक (नोक)
४ कशाकश – खैंचतान, कष्ट।
जानाँ – प्राणप्रिय, मा'शूक़।
५ क़त्लगह – क़त्लगाह, वधस्थल।
शनावर – तैरते हुए, संतरित।
जू-ए-ख़ूँ – रक्त की धारा।
तौसन – अश्व, घोड़ा।
बेताब – व्याकुल।
६ काँ – खान।
जुंबिश-ए-जौहर – जौहर (रत्न, गुण) की गतिशीलता।
आहन – लोहा।
७ अब्र – बादल, घटा।
बर्क़ – बिजली।
ख़िरमन – खलिहान।
८ वफ़ादारी – प्रतिज्ञापालन, निर्वाह।
बशर्त-ए-उस्तुवारी – स्थायित्व की शर्त के साथ।
अस्ल-ए-ईमाँ – सत्य धर्म।
बुतख़ाने (बुतख़ानः) – मंदिर।
९ शहादत – शहीद होना, वीरगति।
ख़ू – स्वभाव।
१० रहज़न – बटमार, लुटेरा।
११ सुख़न – शे'र, काव्य।
जोया – ढूँढनेवाला।
जवाहिर – जवाहिरात, रत्न, हीरे-मोती।
मा'दन – खान।
१२ शाह-ए-सुलेमाँ जाह – सुलैमान की सी शान शौकत वाला बादशाह (सुलेमाँ अशुद्ध है)
निस्बत – संबंध, तुलना।
फ़रीदून........बहमन – प्राचीन ईरान के पाँच महान सम्राटों के नाम।

१२२

१ सीमतन – रजतवदना, चाँदी जैसे बदनवाला।
२ कोहकन – पहाड़ काटनेवाला (फ़रहाद को कहते हैं)
हैहात – हाय, अफ़सोस।
पीरज़न – बूढ़ी 'औरत, वृद्धा, वह 'औरत जिसने फ़रहाद को शीरीं की मृत्यु की झूठी ख़बर सुनायी थी जिसके कारण वह सर फोड़कर मर गया।
३ असीर – क़ैद, गिरफ़्तार, बन्दी।
राहज़न – बटमार, लुटेरा।
४ जुस्तुजू – तलाश।
सिवा – अधिक, बढ़कर।
फ़िगार – ज़ख़्मी, घायल।
ख़स्तःतन – दुखी, दरिद्र।
५ ज़ौक़-ए-दश्तनवर्दी – जंगल-जंगल घूमने का शौक़।
बा'द-ए-मर्ग – मरने के बाद।
६ जोश-ए-गुल – फूलों की अधिकता।
मुर्ग़-ए-चमन – बाग़ के पक्षी।
७ शब – रात, रजनी, यामिनी।
बुत-ए-नाज़ुकबदन – कोमलांगी रूपसी।
८ कलाम – काव्य।
ख़ुसरू-ए-शीरींसुख़न (ख़ुसरव-ए-) – मधुरभाषी बादशाह (बहादुरशाह 'ज़फ़र' की ओर इशारा है जो स्वयं अच्छे कवि थे)

१२३

१ हौल-ए-दिल – दिल की घबराहट।
शर्मसार – लज्जित।
आह – आर्त्तनाद।
तासीर – असर, प्रभाव।
२ ज़ौक़-ए-सितम – अत्याचार करने की रुचि।
ताकि – जब तक।
दीदः-ए-नख़चीर – शिकार किये हुए की आँख।

१२४

१ ग़श – मूर्च्छा।
पै-ए-हम (पैहम) – बारबार।
सदरह – सौबार।
आहँग-ए-ज़मींबोस-ए-क़दम – पाँव चूमने के लिए ज़मीन पर झुकने का इरादा।
२ महव-ए-वफ़ा – निर्वाह में लीन।
ज़ौक़-ए-गिरफ़्तारि-ए-हम – (हमगिरफ़्तारी) एकसाथ गिरफ़्तार होने का शौक़।
३ ज़ो'फ़ – कमज़ोरी, दुर्बलता।
नक़्श-ए-पै-ए-मोर – (पा-ए-) चींटियों के पैर के चिह्न।
तौक़-ए-गर्दन – गर्दन का तौक़ (लोहे का भारी कड़ा, भार)
कूचे से – गली से।
ताक़त-ए-रम – भागने की शक्ति।
४ तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।
उम्मीद – आशा।
निगाह-ए-ग़लतअन्दाज़ – अजाने पड़नेवाली निगाह, अनुरागरहित दृष्टि।

ज़म – ज़हर, विष।

५ रश्क-ए-हमतरहि-ओ-दर्द-ए-असर-ए-बाँग-ए-हज़ीं – समान शैली होने की ईर्ष्या और दुखभरे स्वर के प्रभावसे उत्पन्न दर्द।

नालः-ए-मुर्ग़-ए-सहर – प्रातःकालीन पक्षी का आर्त्तनाद।

तेग़-ए-दुदम (दोदम) – दोधारी तलवार।

६ वा'दे (वा'दः) – वचन, वादा।

मुकर्रर – दुबारा।

७ वज्ह – कारण, वजह।

वलेकिन – लेकिन, किन्तु।

नाचार – लाचार, असहाय।

पास-ए-बेरौनक़ि-ए-दीदः – नयनों की ज्योतिहीनता का आदर।

अहम – महत्वपूर्ण।

८ फ़ुग़ाँ – आह, नालः, आर्त्तनाद।

'आजिज़ – निर्बल, असफल, विवश।

तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।

सितम – अत्याचार।

क़त'अः

क़त'अः – खंड (ग़ज़ल का हर शे'र अलग अलग होता है किन्तु क़त'अः के शे'रों का एक दूसरे से संबंध होता है)

९ बा'इस – कारण, निमित्त।

हवस-ए-सैर-ओ-तमाशा – सैर-सपाटे की लालसा।

१० मक़्त'-ए-सिलसिलः-ए-शौक़ – अभिरुचि के क्रम का अंत।

'अज़्म-ए-सैर-ए-नजफ़ – नजफ़ (हज़रत 'अली का मज़ार) के दर्शन और का'बे की परिक्रमा का इरादः।

११ तवक़्क़ो'अ – आशा।

जादः-ए-रह – मार्ग, पथ।

कशिश-ए-काफ़-ए-करम – करम (कृपा) के काफ़ (एक उर्दू अक्षर ک) की आरंभ-रेखा।

१२५

१ ग़ैर – अन्य, शत्रु, प्रतिद्वंदी।

रस्म-ओ-राह – व्यवहार, मेलजोल।

गुनाह – पाप।

२ मुआख़ज़ः-ए-रोज़-ए-हश्र – प्रलय के दिन की पकड़।

क़ातिल – वधिक।

रक़ीब – प्रतिद्वंदी, शत्रु।

३ बेगुनह कुश-ओ-हक़ नाशनास – निरपराधियों का वध करनेवाला और सत्य को न पहचानने वाला।

बशर – आदमी, मनुष्य।

ख़ुर्शीद-ओ-माह – सूरज और चाँद।

५ मैकदः – मधुशाला, मदिरालय।

क़ैद – पाबन्दी, बंधन;

मद्रसः – पाठशाला, मदरसा।

ख़ानक़ाह – आश्रम।

६ बिहिश्त – स्वर्ग।

दुरुस्त – ठीक, सत्य।

जल्वःगाह – दर्शनस्थल।

७ ज़रर – नुक़सान, हानि।

यारब – अय ख़ुदा।

१२६

१ गुफ़्तुगू – बातचीत, वार्त्तालाप।

२ ज़ेहन – दिमाग़, मस्तिष्क।

फ़िक्र – विचार, चिंता।

विसाल – प्रियमिलन।

(पहले मिसरे में दूसरा "है" ग़लत है)

३ अदब – आदर।

कशमकश – दुविधा।

हया – लज्जा।

गोमगो – अनिश्चय, संकोच।

४ सनम परस्तों का – सौन्दर्योपासकों का, मूर्त्तियों के उपासकों का। (सनम और बुत दोनों का अर्थ मूर्त्ति है। उर्दू काव्य में यह शब्द हसीनों और मा'शूक़ों के लिए भी प्रयुक्त होते हैं)

ख़ू – स्वभाव, मिज़ाज।

६ नसीब हो – (नसीब–भाग्य) प्राप्त हो।

रोज़-ए-सियाह – काला दिन।

७ उमीद – उम्मीद, आशा।

क़द्र – आदर।

वो – वह।

८ गुमाँ – गुमान, भ्रम, ख़याल।

तसल्ली – सांत्वना, ढारस।

दीदः-ए-दीदारजू – दर्शनाभिलाषी नयन।

९ मिज़ः (मिज़ह) – पलकें, बरौनियाँ।

क़रार – शांति।

नेश – काँटा।

रग-ए-जाँ – प्राण-शिरा।

फ़रो (फरो अशुद्ध है) – शान्त।

१० जुनूँ – उन्माद।

वले – लेकिन।

बक़ौल-ए-हुज़ूर – हुज़ूर के कथनानुसार।

फ़िराक़-ए-यार – प्रिय-विरह।

तस्कीन – संतोष।

(आख़री मिसरा बहादुरशाह 'ज़फ़र' का है)

१२७

१ नवा सँज-ए-फ़ुग़ाँ – आर्त्तनाद का स्वर पैदा करनेवाला।

२ ख़ू – स्वभाव।

वज़'अ – रीति, व्यवहार-शैली।

सुबुकसर – अपमानित।
सरगिराँ – अप्रसन्न।
(दोनों शब्द सर के साथ मिलकर बने हैं। सुबुक का अर्थ है हल्का और गिराँ का भारी)
३ ग़मख़्वार – हमदर्द, सहानुभूतिकर्त्ता, मित्र।
रुस्वा – अनादृत, लांछित, बदनाम।
ताब लाना – सहन करना।
राज़दाँ – विश्वासपात्र, मित्र।
४ वफ़ा – निर्वाह।
सँगदिल – पाषाणहृदय, ज़ालिम।
सँग-ए-आस्ताँ – देहलीज़ का पत्थर, द्वार, चौखट।
५ क़फ़स – पिंजरा।
रूदाद-ए-चमन – उद्यान का हाल।
हमदम – साथी।
आशियाँ – नीड़, घोंसला।
६ निहाँ – ओझल।
७ जज़्ब-ए-दिल – हृदय का आकर्षण।
शिकवः – शिकायत।
जुर्म – अपराध।
कशाकश – संघर्ष, खेंचतान।
दरमियाँ – बीच में, मध्य।
८ फ़ितनः – मूर्तिमान उपद्रव, चपत्र, आपत्ति।
ख़ानः वीरानी को – घर उजाड़ने के लिए, बरबादी के लिए।
आस्माँ – आसमान, आकाश, (यह शब्द उर्दू काव्य में अत्यंत व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे भाग्य, संसार, आदि)
९ आज़माना – परीक्षा लेना, परखना।
'अदू – शत्रु।
इम्तिहाँ – परीक्षा।
१० रुस्वाई – बदनामी, अनादर।
११ बे मेहर – प्रेमरहित।

१२८

१ हमसुख़न – बात करनेवाला।
हमज़बाँ – अपनी भाषा बोलनेवाला।
२ हमसायः – पड़ोसी।
पास्बाँ – प्रहरी।
३ तीमारदार – परिचारक, रोगी की सुश्रुषा करनेवाला।
नौहःख़्वाँ – रोनेवाला।

१२९

१ अज़ मेह्र ता बज़र्रः – सूर्य से कण तक।
दिल-ओ-दिल है आइनः – दर्पण की तरह दिलके सामने दिल है।
तूती – छोटी जाति का तोता जिसे दर्पण के सामने बैठाकर बोलना सिखलाते हैं।
शश जिहत – छः दिशाएँ, सब तरफ़।
मुक़ाबिल – सामने, सन्मुख।

१३०

१ सब्ज़ः ज़ार – हरियाली, हरीतिमा।
दर-ओ-दीवार-ए-ग़मकदः – शोकगृह (उजाड़ घर) के द्वार और दीवारें।
बहार – वसंत।
ख़ज़ाँ – पतझड़।
२ नाचार – लाचारी से, असहायतावश।
बेकसी – निस्सहायता।
हसरत – अपूर्ण कामना।
दुश्वारि-ए-रह-ओ-सितम-ए-हमरहाँ – पथ की कठिनाइयाँ और सहपंथियों के अत्याचार।

१३१

१ सद जल्वः – सौ छवि, अनगिनत दृश्य।
रू ब रू – सामने, सन्मुख।
मिज़्गाँ – पलकें, बरौनियाँ।
ताक़त – शक्ति।
दीद – दर्शन।
एहसाँ – अहसान, आभार।
२ सँग – पत्थर, पाषाण।
बरात-ए-म'आश-ए-जुनून-ए-'इश्क़ – (बरात–हुंडी, चेक या वेतन की चिट्ठी। म'आश–जीविका, रोज़ी) प्रेमोन्माद की जीविका की हुण्डी।
हनोज़ – अभी, अभी तक।
मिन्नत-ए-तिफ़्लाँ – बच्चों का अहसान।
३ बार-ए-मिन्नत-ए-मज़दूर – मज़दूर के अहसान का भार।
ख़म – झुकी हुई।
ख़ानमाँ ख़राब – निर्वासी, गृह-विहीन, अनिकेत।
४ ज़ख़्म-ए-रश्क – ईर्ष्या का घाव।
रुस्वा – अपमानित, लांछित।
पर्दः-ए-तबस्सुम-ए-पिनहाँ – मंद स्मिति का आवरण।

१३२

१ ज़ेर-ए-सायः – छाँह तले।
ख़राबात – मदिरालय, देवालय।
क़िब्लः-ए-हाजात – शैख़ या वा'इज़ (धर्मोपदेशक) या ज़ाहिद (वैरागी)
[भौं मस्जिद की मेहराब की तरह है और आँख मदिरालय की तरह]
२ सितम – अत्याचार।
मुकाफ़ात – बदला, प्रतिशोध।
३ दे दाद – न्याय कर।
फ़लक – आसमान, आकाश।
दिल-ए-हसरतपरस्त – अपूर्ण कामनाओं की पूजा करनेवाला हृदय।

तलाफ़ि-ए-माफ़ात – कमी की पूर्ति।

४ महरुख़ – चन्द्रमुखी।

मुसव्विरी – चित्रकला।

तक़रीब – कारण, हेतु।

बहर-ए-मुलाक़ात – मिलन के लिए।

५ मै – मदिरा, मधु, सुरा, वारुणी।

ग़रज़ – अभीष्ट।

नशात – हर्ष, आनंद।

रूसियाह – गुनहगार, कलंकित, पापी।

इक गूनः – थोड़ी सी, किंचित।

बेख़ुदी – आत्मविस्मृति।

६ रँग-ए-लालः-ओ-गुल-ए-नसरीं – लाले, गुलाब और सेवती के फूल का रंग।

जुदा जुदा – अलग अलग।

इस्बात – पुष्टि।

७ पा-ए-ख़ुम – मधुघट के चरण।

हंगाम-ए-बेख़ुदी – आत्मविस्मृति के समय।

रू – मुख।

सू-ए-क़िब्लः – क़िब्ले (का'बे) की ओर।

वक़्त-ए-मुनाजात – प्रार्थना के समय।

८ ब हस्ब-ए-गर्दिश-ए-पैमानः-ए-सिफ़ात – गुणों की मदिरा से भरे हुए प्याले के चक्कर के अनुरूप।

'आरिफ़ – ज्ञानी, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

मस्त-ए-मै-ए-ज़ात – ब्रह्म की मदिरा से मस्त (ऊपर के तीनों शे'र मिलकर पूरा अर्थ देते हैं)।

९ नश्व-ओ-नुमा – उन्नति, विकास।

अस्ल – मूल, जड़।

फ़ुरू'अ – शाखाएँ।

ख़ामोशी – नीरवता, मौन।

१३३

१ बिसात-ए-'इज्ज़ ('अज्ज़) – नम्रता और विनय की पूँजी।

यक क़तरः ख़ूँ – रक्त की एक बूँद।

बअन्दाज़-ए-चकीदन – टपकने की स्थिति में।

सर निगूँ – शीश झुकाये हुए।

२ शोख़ – चपल, चंचल।

आज़ुर्दः –रूठे हुए।

चन्दे – कुछ समय तक।

तकल्लुफ़ – दिखावा, बनावट, आडंबर, नम्र बाह्य-आचार।

तकल्लुफ़ बरतरफ़ – संकोच और शिष्टाचार से अलग।

अन्दाज़-ए-जुनूँ – उन्माद की शैली।

३ ख़याल-ए-मर्ग – मृत्यु का विचार।

तस्कीं – संतोष, सांत्वना।

दिल-ए-आज़ुर्दः – संतप्त हृदय, दुखी मन।

बख़्शे – प्रदान करे।

दाम-ए-तमन्ना – कामना का जाल।

सैद-ए-ज़ुबू – तुच्छ शिकार।

४ काश – कामना सूचक शब्द (जैसे काश ऐसा होजाय)।

नालः – आर्त्तनाद।

हमदम – मित्र, साथी।

बा'इस-ए-अफ़्ज़ाइश-ए-दर्द-ए-दुरूँ – ('बाइस' हमारे अक्षर-विन्यास के अनुसार अशुद्ध है) – आन्तरिक दुख के बढ़ाने का कारण।

५ शुरिश-ए-तेग़-ए-जफ़ा – अत्याचार की तलवार की काट।

नाज़ फ़रमाओ – दंभ करो, घमंड करो।

दरिया-ए-बेताबी – व्याकुलता का सागर।

मौज-ए-ख़ूँ – रक्त की तरंग।

६ मै-ए-'इश्रत – ऐश्वर्य की शराब।

ख़्वाहिश – इच्छा।

साक़ि-ए-गर्दूं – आकाश का साक़ी।

जाम-ए-वाशगूँ – औंधे प्याले।

[सात आकाश माने जाते हैं, और एक, दो, चार का योग भी सात है। वैसे इक दो चार मुहावरा है जिसका अर्थ है चन्द (कतिपय)]

७ शौक़-ए-वस्ल-ओ-शिकवः-ए-हिजराँ – मिलन की कामना और विरह की शिकायत।

१३४

१ बज़्म-ए-बुताँ – मा'शूक़ों की महफ़िल।

सुख़न – बात।

आज़ुर्दः –रूठा हुआ।

लबों से – अधरों से।

ख़ुशामद तलबों से – ख़ुशामद चाहने वाले, चाटुकारिताप्रिय।

२ दौर-ए-क़दह – शराब के प्याले का चक्कर।

वजूह-ए-परीशानि-ए-सहबा – शराब की परेशानी का कारण।

ख़ुम-ए-मै – मधुघट, शराब का मटका।

३ रिन्दान-ए-दर-ए-मैकदः – मदिरालय के द्वारे पड़े मनमौजी मधुपायी

गुस्ताख़ – धृष्ट, अशिष्ट।

ज़ाहिद – मुसलमान वैरागी।

ज़िनहार – हरगिज़, कदापि।

न होना तरफ़ – न उलझना।

बेअदब – अशिष्ट।

४ बेदाद-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह के ढाये हुए अत्याचार।

हरचन्द – यद्यपि, अत्यधिक।

जान – प्राण।

रब्त – संबंध।

१३५

१ ता – ताकि।

जा – जगह, स्थान।

गो – गोकि, यद्यपि।
ज़िक्र – चर्चा।
२ अह्वाल – हालचाल (हाल का बहुवचन)
इजारा नहीं करते – ठेका नहीं लेते, दायित्व नहीं लेते।

१३६

१ ग़ारत – नष्ट, तबाह, बर्बाद।
हसरत-ए-ता'मीर – निर्माण की कामना।

१३७

१ ग़म-ए-दुनिया – संसार की चिंता।
फ़लक – आकाश।
तक़रीब – कारण।
२ मज़मूँ – विषय।
मकतूब – पत्र।
यारब – अय ख़ुदा।
३ परनियाँ – महीन रेशमी वस्त्र।
शो'लः-ए-आतश – अग्निज्वाला।
वले – लेकिन, किन्तु।
हिकमत – उपाय।
सोज़-ए-ग़म – दुःख की तपन, संताप।
४ मंज़ूर – स्वीकृत।
ज़ख़िमयों (ज़ख़्मियों ग़लत है) – घायलों, आहतों।
सैर-ए-गुल – फूलों की सैर।
शोख़ी – चंचलता, तीखापन।
५ सादगी – सीधापन, मूढ़ता।
इल्तिफ़ात-ए-नाज़ – सौन्दर्य (मा'शूक़) की कृपा।
तम्हीद – भूमिका, आरंभ।
६ लकदकोब-ए-हवादिस – दुर्घटनाओं की ठोकरें।
तहम्मुल – सहन, बर्दाश्त।
ज़ामिन – सामर्थ्यवान।
बुतों के नाज़ उठाने की – मा'शूक़ों के नखरे सहने की।
७ ख़ूबि-ए-औज़ा'-ए-इब्ना-ए-ज़माँ – ज़मानेवालों के रंग-ढंग की अच्छाई (यहाँ व्यंग है या'नी बुराई)
बदी – बुराई।
नेकी – अच्छाई।

१३८

१ हासिल – आय, लाभ, प्राप्ति।
आरज़ू ख़िरामी – कामना।
(ग़ालिब ने ख़िरामी का शब्द जिस तरह लगा दिया है वह उर्दू और फ़ारसी में कहीं प्रचलित नहीं है। खेंचतानकर यदि कोई अर्थ निकाला जाय तो भटकती हुई कामना कह सकते हैं)
जोश-ए-गिरियः – अत्यधिक रुदन।
डूबी हुई असामी – वह किसान जिसकी खेती बह गई हो।

२ दाग़-ए-नातमामी – पूरी तरह न जल सकने का दाग़।

१३९

१ तंग – संकीर्ण।
सितम ज़दगाँ – मुसीबत के मारे हुए, उत्पीड़ित।
जहान – संसार।
बैज़ः-ए-मोर – चींटी का अंडा।
२ काइनात – विश्व, जगत।
हरकत – गति।
ज़ौक़ – अभिरुचि।
परतौ – प्रतिबिम्ब।
आफ़ताब – सूर्य।
ज़र्रः – कण।
३ संगि-ए-ख़ारा – पत्थर की चोट।
लालःरँग – लाल रंग, रक्ताभ।
ग़ाफ़िल – असावधान।
शीशे (शीशः) – ग़ालिब ने दिल को उसकी कोमलता के कारण शीशः कहा है।
मै – मदिरा।
गुमान – भ्रम।
४ सीनः-ए-अहल-ए-हवस – लोभियों (स्वार्थियों) का सीनः।
जा – जगह। (जा गर्म करना–जगह बनाना)
५ ग़ैर – अन्य, प्रतिद्वंदी।
बोसः – चुम्बन।
६ सायः-ए-दीवार-ए-यार – मित्र (मा'शूक़) की दीवार की छाँह।
फ़रमाँरवा-ए-किश्वर-ए-हिन्दोस्ताँ – हिन्दोस्तान देश पर शासन करनेवाला।
७ हस्ती – अस्तित्व, जीवन।
ए'तिमाद-ए-वफ़ादारी – वफ़ादारी का विश्वास।
नामेहरबान – अकृपालु।

१४०

ग़ालिब ने यह ग़ज़ल जवानी में अपनी प्रेयसी की मृत्यु पर कही थी जिसे बाद में अपने पत्रों में डोमनी अर्थात तीखी औरत के नाम से याद किया है।

१ बेक़रारी – व्याकुलता।
ज़ालिम – अन्यायी (प्यार का संबोधन है)
ग़फ़लत शि'आरी – असावधानी का आचरण।
(अर्थ यह है कि मा'शूक़ मेरे प्रेम में मर गया। आगे के शे'रों में भी इसी भाव को दोहराया है)
२ आशोब-ए-ग़म का हौसलः – ग़म की परीशानी उठाने की शक्ति।
ग़मगुसारी – ग़म में शरीक होना, दुख में सम्मिलित होना।
३ ग़मख़्वारगी – सहानुभूति, ग़मगुसारी, दुख बँटाना।
दोस्तदारी – मित्रता।
४ पैमान-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह का वचन।

पायदारी – स्थायित्व।
५ ज़हर लगती है – विष प्रतीत होती है।
आब-ओ-हवा-ए-ज़िन्दगी – जीवन का जलवायु, अर्थात जीवन।
नासाज़गारी – प्रतिकूलता।
६ गुलफ़िशानीहा-ए-नाज़-ए-जल्वः – (गुलफ़िशानी–फूल बरसाना। हा, बहुवचन। ए, इज़ाफ़त। नाज़–सौन्दर्याभिमान। जल्वः–छवि, कान्ति) गर्वित सौन्दर्य की अठखेलियों की पुष्पवर्षा।
ख़ाक – मिट्टी, धरती।
लालःकारी – फूल-पत्ती का शृंगार (अर्थात तेरी क़ब्र पर फूल उगे हुए हैं)
७ शर्म-ए-रुस्वाई – बदनामी की लाज।
निक़ाब-ए-ख़ाक में – मिट्टी के पर्दे में।
उल्फ़त – प्रेम।
पर्दःदारी – पर्दा रखना।
८ नामूस-ए-पैमान-ए-मुहब्बत – प्रेम के वचन का आदर।
राह-ओ-रस्म-ए-यारी – मित्रता (प्रेम) की रीति।
९ तेग़ आज़मा – तलवार चलानेवाला।
ज़ख़्म-ए-कारी – गहरा घाव।
(ग़ालिब ने उर्दू के अन्य कवियों की तरह प्रेम को दिल का घाव कहा है और मा'शूक़ की अदा को तलवार–देखिये ग़ज़ल १०७, शे'र ३)
१० शबहा-ए-तार-ए-बर्शकाल – वर्षाकाल की अँधेरी रातें (आँसुओं से भीगी रातें)
नज़र – दृष्टि।
ख़ू करदः-ए-अख़्तर शुमारी – तारे गिनने की अभ्यस्त।
११ गोश – कान।
महजूर-ए-पयाम – संदेश से वंचित।
चश्म – नयन, आँख।
महरूम-ए-जमाल – रूप से वंचित।
नाउम्मीदवारी – नाउम्मीदी, निराशा।
१२ वहशत – उन्माद।
ज़ौक़-ए-ख़्वारी – निरादृत होने की अभिरुचि।

१४१

१ सरगश्तगी – परेशानी।
'आलम-ए-हस्ती – अस्तित्व का जगत।
यास – निराशा।
तस्कीं – सान्त्वना।
नवेद – शुभसमाचार, ख़ुशख़बरी।
२ दिल-ए-आवारः – मा'शूक़ की तलाश में भटकनेवाला दिल।
३ बयाँ – बयान, वर्णन।
सुरूर-ए-तब-ए-ग़म – ग़म के ताप का आनंद।
मू – बाल, रोम।
ज़बान-ए-सिपास – धन्यवाद की जिह्वा।
४ ग़ुरूर-ए-हुस्न – रूप का गर्व।
बेगानः-ए-वफ़ा – बेवफ़ा, निर्मोही।
हरचंद – यद्यपि।
दिल-ए-हक़्क़शनास – सत्य को पहचाननेवाला दिल।
५ शब-ए-महताब – चाँदनी रात।
बलग़मी मिज़ाज – यूनानी इलाज में रोगियों की अलग-अलग प्रकृतियाँ बतलायी गई हैं। ठंडी प्रकृति के लोगों को बलग़मी मिज़ाज कहते हैं। और चाँदनी रात ठंडी होती है, और शराब जो गरम होती है उसका इलाज है।
६ मकीं – मकान में रहनेवाला, गृहवासी।
शरफ़ – प्रतिष्ठा, इज़्ज़त।

१४२

१ ख़ामुशी – ख़ामोशी, चुप रहना, मौन।
फ़ायदः – फ़ायदा, लाभ।
इख़्फ़ा-ए-हाल – हाल का छिपना।
मुहाल – असंभव।
२ हस्रत-ए-इज़हार – अभिव्यक्ति की कामना।
गिला – शिकायत।
फ़र्द-ए-जम'-ओ-ख़र्च-ए-ज़बाँहा-ए-लाल – (ख़र्च के बाद -ए- छपने से रह गया है) गूँगी ज़बानों का बहीखाता (फ़र्द–हिसाब लिखने का इकहरा काग़ज़। लाल–गूँगा)
३ आइनः परदाज़ – दर्पण के सन्मुख शृंगार में लीन।
रहमत – कृपा, दया (दया कर)
'मुज़रख़्वाह – क्षमायाचक।
लब-ए-बेसवाल – कृपा का सवाल न करनेवाला होंठ (मुँह)
४ ख़ुदा न ख़्वास्तः – ईश्वर न करे।
शौक़ – अभिलाषा, कामना।
मुनफ़'इल – लज्जित (हो)
५ मिश्कीं (मुश्कीं) – कस्तूरी के रंग का, काला।
लिबास-ए-का'बः – का'बे का ग़िलाफ़।
'अली – रसूल अल्लाह के चचेरे भाई का नाम। मुसलमानों के एक सम्प्रदाय के विचार में वह रसूल के पहले ख़लीफ़ा थे और दूसरे के विचार में चौथे। सूफ़ी अपना सिलसिला हज़रत 'अली से मिलाते हैं। वह का'बे में पैदा हुए थे जिसे मुसलमान पृथ्वी का केन्द्र मानते हैं।
नाफ़-ए-ज़मीन – पृथ्वी की नाभि।
नाफ़-ए-ग़ज़ाल – हिरन की नाभि (जिससे कस्तूरी निकलती है) मृग-नाभि।
६ वहशत – उन्माद।
'अर्सः-ए-आफ़ाक़ – (आफ़ाक़ उफ़ुक़, क्षितिज, का बहुवचन-संसार) संसार का विस्तार।
तँग – संकीर्ण।
दरिया – सागर।
'अरक़-ए-इन्फ़ि'आल – लज्जा का पसीना।
(पृथ्वी अपनी संकीर्णता से लज्जित हो पसीने में डूब गई)
७ हस्ती – अस्तित्व।

फ़रेब – धोखा।
'आलम – संसार।
हल्क़:-ए-दाम-ए-ख़याल – कल्पना-जाल।

१४३

१ शिकवे (शिकव:) – शिकायत।
हज़र करो – परहेज़ करो, डरो।
२ दिला – अय दिल (अब प्रचलित नहीं है)
दर्द-ओ-अलम – दर्द और ग़म।
मुग़तनम – ग़नीमत, संतोष की बात।
गिरियः-ए-सहरी – सुबह के समय रोना।
आह-ए-नीमशबी – आधी रात की आहें।

१४४

१ एकजा – एक जगह।
हर्फ़-ए-वफ़ा – निर्वाह का अक्षर।
ज़ाहिरा – प्रकटतया।
ग़लत बरदार – वह कागज़ जिस पर से अक्षर आसानी से मिट सके और निशान बाक़ी न रह जाय।
२ ज़ौक़-ए-फ़ना – मृत्यु की कामना।
नातमामी – अपूर्णता।
नफ़स – साँस।
हरचन्द – यद्यपि, गोकि।
आतशबार – अग्निवर्षक।
३ सद्दा – आवाज़, ध्वनि।
दरमाँदगी – मुसीबत, क्लेश।
नाले (नाल:) – आर्त्तनाद।
नाचार – लाचार, मजबूर, असहाय।
४ बदमस्ति-ए-हर ज़र्रः – प्रत्येक कण की बदमस्ती (उन्मत्तता)
ख़ुद – स्वयं।
उज़्रख़्वाह – क्षमायाचक।
जलवे (जल्व:) – कांति, छवि।
ज़मीं ता आसमाँ – पृथ्वी से आकाश तक।
सरशार – परिपूर्ण, छलकता हुआ, नशे में।
५ बेज़ार – उचाट, असंतुष्ट।
६ सरनामे (सरनाम:) – लिफ़ाफ़ा।
कि ता – ताकि।
हसरत-ए-दीदार – दर्शन की अभिलाषा।

१४५

१ पीनस – पालकी।
कूचे (कूच:) – गली।

१४६

१ हस्ती – अस्तित्व।
फ़ज़ा-ए-हैरत आबाद-ए-तमन्ना – कामना के विस्मय का वातावरण (अंतरिक्ष)।
नाल: – आर्त्तनाद।
'आलम – विश्व।
'अन्क़ा – एक काल्पनिक पक्षी, अनस्तित्व का प्रतीक।
२ ख़ज़ाँ – पतझड़।
फ़स्ल-ए-गुल – कुसुम-ऋतु, वसंत।
क़फ़स – पिंजरा।
मातम – रोना-पीटना, शोक।
बाल-ओ-पर – पंख।
३ वफ़ा-ए-दिलबराँ – दिल लेजाने वालों (मा'शूक़ों) का प्रेम-निर्वाह।
इत्तिफ़ाक़ी – आकस्मिक।
हमदम – मित्र, साथी।
फ़रियाद-ए-दिलहा-ए-हज़ीं – दुखी दिलों की पुकार।
४ शोख़ि-ए-अंदेशः – विचारों की सुन्दरता एवं चंचलता।
ताब लाना – सहन करना।
रंज-ए-नौमीदी – निराशा का दुख।
कफ़-ए-अफ़सोस मलना – अफ़सोस में हाथ मलना।
'अह्द-ए-तजदीद-ए-तमन्ना – कामना के पुनरुज्जीवन की प्रतिज्ञा।

१४७

१ बूद-ए-चराग़-ए-कुश्तः – बुझे हुए दीप की हैसियत (योग्यता)
नब्ज़-ए-बीमार-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह के दुख में संतप्त रोगी की नाड़ी
दूद-ए-चराग़-ए-कुश्तः – बुझे हुए दीप का धुआँ।
२ आरज़ू – कामना।
बेरौनक़ी – निष्प्रभता, श्रीहीनता, अँधेरा।
सूद-ए-चराग़-ए-कुश्तः – बुझे हुए दीप की पूँजी।

१४८

१ चश्म-ए-ख़ूबाँ – रूपसियों के नयन।
ख़ामुशी – ख़ामोशी, मौन।
नवा पर्दाज़ – स्वर-साधक (गायक)।
दूद-ए-शो'लः-ए-आवाज़ – ध्वनि की ज्वाला का धुआँ।
२ पैकर-ए-'उश्शाक़ – 'आशिक़ों का शरीर।
साज़-ए-ताले'-ए-नासाज़ – अभागे भाग्य का बाजा (जिससे भाग्य-हीनता के स्वर निकल रहे हैं)।
नाल: – आर्त्तनाद।
गोया – मानो, जैसे कि।
गर्दिश-ए-सय्यार: – गतिमान तारे का चक्कर।

३ दस्तगाह-ए-दीदः-ए-ख़ूँबार-ए-मजनूँ – मजनूँ की खून रोती आँखों का सामर्थ्य।

यक बयाबाँ जल्वः-ए-गुल – इतने कुसुमों की कान्ति जिनसे पूरा वन भर जाय।

फ़र्श-ए-पा अन्दाज़ – पैरों के नीचे बिछा फ़र्श।

१४९

(सही का शब्द उर्दू में अनेक अर्थ रखता है जिसका उदाहरण इस ग़ज़ल में मिलेगा)

१ वहशत – उन्माद।

शोहरत – प्रसिद्धि।

सही – मानो, जानो, ख़याल करो।

२ क़त'अ कीजे – काटिये, तोड़िये।

त'अल्लुक़ – संबंध।

'अदावत – शत्रुता, दुश्मनी।

सही – जारी रखिये, बाक़ी रखिये।

३ रुस्वाई – बदनामी, निन्दा।

मज्लिस – महफ़िल, परिषद, सबके सामने।

ख़ल्वत – एकान्त, तनहाई।

सही – स्वीकार करो।

५ हस्ती – अस्तित्व।

आगही – चेतना।

ग़फ़लत – अचेतना।

सही – यही समझेंगे, यूँही जानेंगे (मनसमझौती)

६ 'उम्र – आयु, जीवन।

हरचन्द – यद्यपि।

बर्क़ ख़िराम – विद्युतवेगगामी।

७ तर्क-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह का त्याग।

८ फ़लक-ए-नाइंसाफ़ – अन्यायी आकाश।

रुख़सत – इजाज़त, अनुमति।

सही – अवश्यमेव।

९ तस्लीम – स्वीकृति।

ख़ू (ख़ू ग़लत है) – आदत, बान।

बेनियाज़ी – निस्पृहता।

सही – यही समझेंगे।

१० वस्ल – मिलन।

हसरत – अपूर्ण कामना।

सही – ग़नीमत है।

१५०

१ आर्मीदगी – आरामतलबी, विश्रामप्रियता।

निकोहिश – उपालंभ, भर्त्सना, निंदा।

बजा – उचित, ठीक।

सुब्ह-ए-वतन – स्वदेश का सवेरा।

ख़न्दः-ए-दन्दाँनुमा – हँसी जिसमें दाँत दिखाई दें।

२ मुग़न्नि-ए-आतशनफ़स – गायक जिसका स्वर ज्वाला जगा दे।

सदा – आवाज़, स्वर।

जल्वः-ए-बर्क़-ए-फ़ना – मौत की बिजली की चमक।

३ मस्तानः – मस्ती की दशा में।

रह-ए-वादि-ए-ख़याल – कल्पना की घाटियों (उपत्यकाओं) का पथ (राह तय करना–राह चलना)

ता – ताकि।

बाज़गश्त – वापसी, पलट आना।

मुद्द'आ – उद्देश्य, मतलब।

४ बेहिजाबियाँ – लाज का पर्दा हटाना।

नक्हत-ए-गुल – कुसुम-सौरभ।

हया – लज्जा।

५ मु'आमिलः – मामला, हाल, चलन।

इन्तिख़ाब – चयन, चुनाव।

रुस्वा – बदनाम, विनिंदित।

१५१

१ शक्ल से – दशा से, हालत से।

१५२

१ उस बज़्म – यार की महफ़िल।

नहीं बनती हया किये – लज्जा नहीं आती।

२ सियासत-ए-दर्बा – दरबान की धमकी।

दर – द्वार।

बिन सदा किये – आवाज़ लगाये बिना।

३ ख़िर्क़ः-ओ-सज्जादः – कंथा और जानमाज़।

रहन-ए-मै – मदिरा के लिए गिरवीं।

मुद्दत – समय, ज़माना।

दा'वत-ए-आब-ओ-हवा – जल वायु की दावत, बहार की रितु की दावत, शराब पीकर ऐश करना।

४ बेसर्फ़ः – निरर्थक, निष्प्रयोजन, बेमानी।

उम्र-ए-ख़िज़्र – ख़िज़्र का जीवन (ख़िज़्र एक पैग़ंबर का नाम है जो जीवित हैं और भूले-भटकों को राह दिखाते हैं)

५ मक़दूर – क़ुदरत, इख़्तियार, सामर्थ्य।

ख़ाक – मिट्टी, धरती।

लईम – कंजूस, कृपण।

गंजहा-ए-गिराँमायः – अमूल्य निधियाँ, क़ीमती खज़ाने (अर्थ है वे लोग जो ज़मीन में दफ़न हो चुके हैं)

६ तुहमतें तराशना – इल्ज़ाम लगाना, दोषारोपण।

'अदू – दुश्मन, शत्रु।

७ सोहबत – संगति।

ग़ैर – अन्य, शत्रु, प्रतिद्वंदी।

ख़ू – आदत।
इल्तिजा – याचना, विनती।
८ वा'दः वफ़ा करना – वचन-निर्वाह।

१५३

१ रफ़्तार-ए-'उम्र – जीवन की गति।
क़त'-ए-रह्-ए-इज़्तिराब – व्याकुलता की राह काटना (चलना)
बर्क़ – बिजली।
आफ़ताब – सूरज।
२ मीना-ए-मै – शराब की सुराही, मधु-कलश।
सर्व – सरो एक सदाबहार वृक्ष।
नशात-ए-बहार – वसंत ऋतु का हर्ष, वसंतोल्लास।
बाल-ए-तदर्व – चकोर के पंख।
जल्वः-ए-मौज-ए-शराब – मदिरा की तरंग की छवि।
३ पाश्नः – एड़ी।
पा-ए-सबात – स्थायित्व के पैर।
इक़ामत – ठहरना, स्थिरता।
ताब – सहन, शक्ति।
४ जादाद-ए-बादःनोशि-ए-रिन्दाँ – (रिन्द–शराबी और मनमौजी) वह जायदाद (संपत्ति) जिससे रिन्दों के मदिरापान का प्रबंध हो।
ग़ाफ़िल – असावधान।
गुमाँ – भ्रम, संदेह, शंका।
गेती – पृथ्वी, धरती।
ख़राब – बुरी, निकृष्ट, उजाड़।
५ नज़्ज़ारः – दृश्य।
हरीफ़ – मुक़ाबिल, प्रतिस्पर्धी।
बर्क़-ए-हुस्न – रूप की बिजली।
जोश-ए-बहार – भरपूर बहार।
जल्वे (जल्वः) – कान्ति, छवि।
निक़ाब – पर्दा, आवरण।
६ नामुराद – अपूर्णकाम, असफल।
तसल्ली – संतोष, सांत्वना।
रुख़ – चेहरा, मुखड़ा।
निगह – निगाह, दृष्टि।
कामयाब – सफल।
७ मसर्रत-ए-पैग़ाम-ए-यार – मित्र (प्रिय) के संदेश की ख़ुशी।
क़ासिद – पत्रवाहक।
रश्क-ए-सवाल-ओ-जवाब – यह ईर्ष्या कि मित्र (प्रिय) ने उससे सवाल-जवाब किया होगा।

१५४

१ क़िस्मत – भाग्य।
रश्क – ईर्ष्या।
२ अन्देशे (अन्देशः) – चिंता, कल्पना।
आबगीनः – शीशे का पात्र (दिल)
तुन्दि-ए-सहबा – शराब की गर्मी।
३ ग़ैर – अन्य, प्रतिद्वंदी।
यारब – अय ख़ुदा।
मन'-ए-गुस्ताख़ी – बदतमीज़ी (धृष्टता) से मना करना।
हया – लाज, लज्जा।
४ लत – आदत।
नालः – आर्त्तनाद।
दम लेना – साँस लेना, आराम करना।
५ चश्म-ए-बद – बुरी आँख।
बज़्म-ए-तरब – हर्ष और ऐश्वर्य की महफ़िल।
नग़्मः – गीत।
६ तर्ज़-ए-तग़ाफ़ुल – उपेक्षा का अंदाज़ (शैली)
पर्दःदार-ए-राज़-ए-'इश्क़ – प्रेम के भेद को छिपानेवाला।
७ बज़्म आराइयाँ – हर्ष और ऐश्वर्य की महफ़िलें गर्म करना।
दिल-ए-रंजूर – मेरा दुखी मन।
मिस्ल-ए-नक़्श-ए-मुद्द'आ-ए-ग़ैर बैठा जाय है – जैसे प्रतिद्वंदी के मतलब का नक़्श (सिक्का, धाक) मा'शूक़ के दिल पर बैठता है, वैसे मेरा दुखी मन बैठा जाता है।
परीरुख़ – परीचेहरः, रूपसी।
८ नक़्श – रेखाएँ, चित्र।
मुसव्विर – चित्रकार।
९ सायः – परछाँई।
मिस्ल-ए-दूद – धुएँ की तरह।
आतश बजाँ – जिसके दिल में आग लगी हो।

१५५

१ गर्म-ए-फ़रियाद – आर्त्तनादरत।
शक्ल-ए-निहाली – क़ालीन पर अंकित चित्र।
(जो सुंदर है पर मेरा मा'शूक़ नहीं है)
अमाँ (अमान) – सुरक्षा।
हिज्र – विरह।
बर्द-ए-लियाली – रातों की शीतलता (लियाली लैल का बहुवचन है)
२ निस्यःओ-नक़्द-ए-दो'आलम – दोनों जगत का उधार और नक़द (इस जगत की ख़ुशी नक़्द और दूसरे की उधार)
हक़ीक़त – वास्तविकता, यथार्थ।
मा'लूम – मालूम, ज्ञात, (यहाँ अर्थ है कुछ नहीं)
हिम्मत-ए-'आली – महान साहस।
३ कस्रत आराइ-ए-वहदत – एकत्व की अनेकरूपता।
परस्तारि-ए-वहूम – भ्रम (मिथ्या) की पूजा।
काफ़िर – अनास्थावादी।
असनाम-ए-ख़याली – काल्पनिक प्रतिमाएँ (असनाम–प्रतिमाएँ, सनम का बहुवचन)
४ हवस-ए-गुल – फूलों की हवस (लालसा)
तसव्वुर – कल्पना, विचार।

बे पर-ओ-बाली ने – पंखों के न होने ने।

१५६

१ कारगाह-ए-हस्ती – अस्तित्व का कार्यालय।
लालः – एक रक्ताभ कुसुम।
दाग़ सामाँ – दाग़ रखनेवाला।
बर्क़-ए-ख़िर्मन-ए-राहत (खरमन अशुद्ध है) – सुख चैन के खलियान पर गिरनेवाली बिजली।
ख़ून-ए-गर्म-ए-देहक़ाँ – किसान का गर्म खून।
[अर्थ यह है कि हर वस्तु का विनाश स्वयं उसके अन्दर विनिहित होता है। ग़ालिब ने इस शे'र का अर्थ स्वयं यह लिखा है कि फूलके पौदे या अनाज जो कुछ भी बोया जाता है, किसान को जोतने-बोने, पानी देने में श्रम करना पड़ता है और परिश्रम में लहू गर्म होजाता है यानी अस्तित्व केवल दुख और संताप है। अस्तित्व की उपलब्धि दाग़ है और दाग़ सुख-चैन का विरोधी, इसलिए रंज का रूप (ख़ुतूत-ए-ग़ालिब, मेहर, पृष्ठ ५३१)। आगे के दो शे'र इसी विचार का विस्तार हैं]
२ ग़ुंचः ताशिगुफ़्तनहा – कली के खिलने तक।
बर्ग-ए-'आफ़ियत – कुशलता का सामान।
बावुजूद-ए-दिलजम'ई – तसल्ली के बावुजूद, इतमीनान के होते हुए।
ख़्वाब-ए-गुल – कुसुम-स्वप्न।
परीशाँ – परेशान, बिखरा हुआ।
(कली का रूप दिल जैसा होता है, किन्तु फूल बनते ही वह परेशान होजाती है)
३ रंज-ए-बेताबी – व्याकुलता का दुख।
पुश्त-ए-दस्त-ए-'अिज्ज़ ('अज्ज़) – विनय के हाथ की पीठ।
ख़स ब दन्दाँ – दाँतों में तिनका लिये हुए।

१५७

१ सब्ज़ः – हरियाली, घास।
बयाबाँ – जंगल।

१५८

१ सादगी – सरलता, भोलापन।
हसरत – अभिलाषा।
कफ़-ए-क़ातिल – क़ातिल (मा'शूक़) के हाथ में।
२ तक़रीर – भाषण, वार्त्ता।
लज़्ज़त – मज़ा, स्वाद, आनंद।
गोया – जैसे कि, मानो कि।
३ घले बा ईं हमः – लेकिन इस सब के बावुजूद।
४ हुजूम-ए-नाउमीदी – निराशा का समूह।
स'अि-ए-बेहासिल – निष्फल प्रयत्न।
५ रँज-ए-रह खेंचना – पथ के दुख उठाना।
वामान्दगी – थकन, श्रांति।
मंज़िल – गंतव्य।
६ जल्वः ज़ार-ए-आतश-ए-दोज़ख़ – नरकाग्नि से भरा हुआ।
फ़ितनः-ए-शोर-ए-क़यामत – प्रलय का साकार उपद्रव।
आब-ओ-गिल – पानी और मिट्टी, शरीर, आकार।
७ दिल-ए-शोरीदः-ए-ग़ालिब – ग़ालिब का उन्मन और व्याकुल हृदय।
तिलिस्म-ए-पेच-ओ-ताब – दुख और व्याकुलता का जादूघर।
रहम – दया।
तमन्ना – कामना।

१५९

१ रज़ामन्द – राज़ी, खुश, प्रस्तुत।
२ शक़ – विदीर्ण।
ख़ुशा लज़्ज़त-ए-फ़राग़ – मुक्ति के आनन्द का क्या कहना।
तकलीफ़-ए-पर्दःदारि-ए-ज़ख़्म-ए-जिगर – जिगर के घाव को छिपाने का कष्ट।
३ बादः-ए-शबानः – रात की शराब (जवानी की रात से उपमा देते हैं और बुढ़ापे की सुबह से)
सरमस्तियाँ – अतिशय उन्मदता।
लज़्ज़त-ए-ख़्वाब-ए-सहर – प्रातःकालीन निद्रा का आनन्द।
४ कू-ए-यार – मित्र (मा'शूक़) की गली।
बारे – अंततः।
हवा – पवन, इच्छा।
हवस-ए-बाल-ओ-पर – उड़ने की लालसा।
५ दिल फ़रेबि-ए-अन्दाज़-ए-नक़्श-ए-पा – पदचिह्न की सुन्दरता, पदचिह्न की मनमोहकता।
मौज-ए-ख़िराम-ए-यार – मित्र (मा'शूक़) की मंथरगति की तरंग।
गुल कतर गई – फूल बिखेर गई (गुल कतरना मुहावरा है और इसके कई अर्थ हैं, जैसे अद्भुत काम करना, ग़ज़ब ढाना, बेल-बूटे बनाना)
६ बुलहवस – नितान्त लोभी।
हुस्न परस्ती – सौन्दर्योपासना।
शि'आर की – अपनायी।
आबरू-ए-शेवः-ए-अह्ल-ए-नज़र – द्रष्टाओं के आचार का सम्मान।
७ नज़्ज़ारे (नज़्ज़ारः) – दृश्य, अवलोकन, दर्शन।
निक़ाब – नक़ाब, पर्दा, आवरण।
निगह – निगाह, दृष्टि।
रुख़ – मुखड़ा, वदन।
८ फ़र्दा-ओ-दी – बीता हुआ कल और आनेवाला कल।
तफ़रिक़ः – फ़र्क़, भेद, अंतर।
क़यामत गुज़र गई – मुसीबत टूट पड़ी, आफ़त आगई।
९ वलवले – उमंगें।

१६०

१ तस्कीं – सांत्वना, संतोष।
ज़ौक़-ए-नज़र – दृष्टि की अभिरुचि (मा'शूक़ की सूरत जिससे दृष्टि की अभिरुचि पूरी होसके)

हूरान-ए-ख़ुल्द – स्वर्ग की अप्सराएँ।
२ बा'द-ए-क़त्ल – क़त्ल के बाद।
ख़ल्क़ – संसारवाले, जनसाधारण।
३ साक़ीगरी की शर्म करो – साक़ी होने की लाज रखो।
शब – रात।
मै – मदिरा।
४ कलाम – वार्त्तालाप।
नदीम – साथी, मित्र।
नामःबर – पत्रवाहक।
५ फ़ुर्सत – अवकाश।
कशाकश-ए-ग़म-ए-पिन्हाँ – आन्तरिक दुखों की खींचातानी।
६ लाज़िम – अनिवार्य, आवश्यक।
ख़िज़्र – एक पैग़ंबर का नाम जो अमर हैं और भूले-भटकों को राह दिखलाते हैं।
पैरवी – अनुगमन।
बुज़ुर्ग – वयोवृद्ध, बड़े मियाँ।
हमसफ़र – सहपंथी।
७ अय साकिनान-ए-कूचः-ए-दिलदार – मा'शूक़ की गली में बसनेवालो।
ग़ालिब-ए-आशुफ़्तःसर – सर फिरा ग़ालिब।

१६१

१ ज़िन्दगानी – ज़िन्दगी, जीवन।
२ आतश-ए-दोज़ख़ – नरकाग्नि।
सोज़-ए-ग़म्हा-ए-निहानी – आंतरिक संताप की जलन।
३ बारहा – अनेक बार।
रंजिशें – मनोमालिन्य।
सरगिरानी – अप्रसन्नता, ख़फ़गी, रोष।
४ नामःबर – पत्रवाहक।
पैग़ाम-ए-ज़बानी – मौखिक सन्देश।
५ क़ाते'-ए-आ'मार – उम्र को काटनेवाले (जान लेनेवाले)
अक्सर – बहुधा।
नुजूम – तारे, नक्षत्र।
बला-ए-आस्मानी – आकाश की विपदा।
६ बलाएँ (बलायें अशुद्ध है) – विपदाएँ।
तमाम – ख़त्म, समाप्त।
मर्ग-ए-नागहानी – अचानक आजानेवाली मृत्यु।

१६२

१ उम्मीद – आशा।
बर नहीं आती – पूरी नहीं होती।
सूरत – उपाय।
२ मु'अइयन – निश्चित।
३ आगे – पहले।
४ सवाब-ए-ता'अत-ओ-ज़ोहद – वन्दना और वैराग्य का पुण्य।
तबी'अत – मन।
७ बू – गंध।
चारःगर – इलाज करनेवाला, उपचारक।
९ आरज़ू – कामना।

१६३

१ दिल-ए-नादाँ – नादान दिल, बावरे मन।
२ मुश्ताक़ – उत्सुक।
बेज़ार – रुष्ट, असंतुष्ट।
या इलाही – अय ख़ुदा।
माजरा – मामला, घटना।
३ काश – कामनासूचक उद्बोधन (काश ऐसा होजाय)
मुद्'आ – उद्देश्य।

क़त'अः

क़त'अः – खंड।
४ हंगामः – चहल-पहल, जगत्-व्यापार।
५ परीचेहरः – रूपवान।
ग़मज़ः-ओ-इश्वः-ओ-अदा – सैन और हाव-भाव।
६ शिकन-ए-ज़ुल्फ़-ए-अंबरीं – अंबर-सुरभित अलकों के बल (घूँघर)
निगह-ए-चश्म-ए-सुर्मः सा – सुर्मा-रंजित नयनों की चितवन।
७ सब्ज़ः-ओ-गुल – हरियाली और फूल।
अब्र – बादल, मेघ।
८ वफ़ा – प्रेम-निर्वाह।
९ दर्वेश – फ़क़ीर, महात्मा, विनीत।
१० निसार – निछावर।

१६४

१ बुत-ए-ग़ालियः मू – (ग़ालियः–एक सुगंधि जो कपूर, कस्तूरी और 'अम्बर से मिलाकर बनायी जाती है) सुरभित केशराशिवाला मा'शूक़।
इक मर्तबः – एक बार।
वो – वह (उर्दू में वह का उच्चारण वो है) मा'शूक़।
२ कशमकश-ए-नज़्'अ – मृत्यु के समय साँस टूटने की पीड़ा।
जज़्ब-ए-महब्बत – प्रेम का आकर्षण।
३ सा'अिक़ः-ओ-शो'लः-ओ-सीमाब का 'आलम – बिजली, ज्वाला और पारे की सी दशा (अतिशय तेज़ी और व्यग्रता)
४ नकीरैन – मुसलमानों के विश्वास के अनुसार दो फ़रिश्ते जो क़ब्र में सवाल-जवाब करने आते हैं।
बादः-ए-दोशीनः – बीती हुई रात की पी हुई शराब।
५ जल्लाद – वधिक।
वा'अिज़ – धर्मोपदेशक।

६ अहल-ए-तलब – इच्छुक और अभिलाषी, अन्वेषी।
ता'नः-ए-नायाफ़्त – इच्छित वस्तु के न मिलने का ताना।
७ शेवः – व्यवहार, चलन।
दर – द्वार।
बार – पैठ, प्रवेश।
८ हमनफ़स – साथी, मित्र।
असर-ए-गिरियः में तक़रीर – रुदन के प्रभाव का ज़िक्र।
९ अंजुमन-ए-नाज़ – मा'शूक़ की महफ़िल।
तक़दीर – भाग्य।

१६५

१ बेक़रारी – व्याकुलता।
जोया-ए-ज़ख़्म-ए-कारी – भरपूर घाव का ढूँढनेवाला।
२ आमद-ए-फ़स्ल-ए-लालःकारी – फूलों की ऋतु का आगमन।
३ क़िबलः-ए-मक़सद-ए-निगाह-ए-नियाज़ – आकांक्षा और श्रद्धा (प्रेमी) की दृष्टि का चरमलक्ष्य।
पर्दः-ए-'अमारी – हौदे का पर्दा।
४ चश्म – आँख, नेत्र।
दल्लाल-ए-जिन्स-ए-रुसवाई – बदनामी की सामग्री का दलाल।
ख़रीदार-ए-ज़ौक़-ए-ख़्वारी – निरादर की अभिरुचि का ख़रीदार।
५ सदरँग – सौ प्रकार।
नालः फ़रसाई – आर्त्तनाद करना।
सदगूनः – सौ प्रकार।
अश्कबारी – आँसू बहना, अश्रुवर्षा।
६ हवा-ए-ख़िराम-ए-नाज़ – मा'शूक़ की मंथरगति की अभिलाषा।
महशरिस्तान-ए-बेक़रारी – व्याकुलता का प्रलयस्थल।
७ जल्वः – कान्ति, छवि।
अर्ज़-ए-नाज़ करता है – सौन्दर्याभिमान प्रदर्शित करता है।
बाज़ार-ए-जाँसुपारी – प्राण देने का बाज़ार।
८ बेवफ़ा – निर्मोही।

क़त'अः

क़त'अः – खण्ड।
९ दर-ए-'अदालत-ए-नाज़ – अभिमानी रूप के न्यायालय का द्वार।
१० जहान – संसार।
अंधेर – अन्याय, ज़ुल्म।
ज़ुल्फ़ – केशराशि, कुन्तलराशि।
सरिश्तःदारी – (सरिश्तःदार–न्यायालय का प्रधान मुंशी जो मुक़दमा पेश करता है)
११ पारः-ए-जिगर – जिगर का टुकड़ा।
फ़रियाद-ओ-आह-ओ-ज़ारी – रोना-पीटना।
१२ गवाह-ए-'इश्क़ – प्रेम के गवाह।
अश्कबारी का – आँसू बहाने का।

१३ दिल-ओ-मिश़गाँ – 'आशिक़ का दिल और मा'शूक़ की पलकें।
रूबकारी – रोबकारी, मुक़दमे की पेशी।
(ग़ालिब ने अपने एक पत्र में लिखा है कि उसने पहली बार ग़ज़ल में फ़ौजदारी, सरिश्तःदारी और रूबकारी के शब्द इस्तेमाल किये हैं। ग़ालिब की राय थी कि समाज की नयी वस्तुएँ जैसे बिजली के तार और धुएँ के जहाज़ शा'अिरी में आनी चाहियें। उर्दू में तो नहीं लेकिन अपनी फ़ारसी शा'अिरी में ग़ालिब ने कहीं-कहीं चैक, तमस्सुक और नोट के शब्द बाँधे हैं)
१४ बेख़ुदी – आत्मविस्मृति।
बेसबब – अकारण।
पर्दःदारी – पर्दा।

१६६

१ जुनूँ – उन्माद।
तोहमत कश-ए-तस्कीं – जिस पर संतोष का आरोप लगाया जाय।
शादमानी की – ख़ुशी मनायी (उर्दू में प्रचलित नहीं है)
नमकपाश-ए-ख़राश-ए-दिल – दिल के ज़ख़्म पर नमक छिड़कनेवाला।
लज़्ज़त ज़िन्दगानी की – जीवन का आनन्द।
२ कशाकशहा-ए-हस्ती – जीवन की खैंचातानी (बंधन)
स'अि-ए-आज़ादी – मुक्ति का प्रयास।
मौज-ए-आब – पानी की लहर।
फ़ुर्सत – अवकाश।
रवानी – बहाव।
३ पस अज़ मुर्दन – मृत्यु के उपरांत।
ज़ियारतगाह-ए-तिफ़्लाँ – बच्चों का तीर्थस्थान।
शरार-ए-सँग – पत्थर की चिनगारियाँ।
तुर्बत – क़ब्र।
गुलफ़िशानी – पुष्पवर्षा।

१६७

१ निकोहिश – भर्त्सना, निंदा, उपालंभ, मलामत।
फ़रियादि-ए-बेदाद-ए-दिलबर – मा'शूक़ के ज़ुल्मों की शिकायत करनेवाला।
मबादा – कहीं ऐसा न हो।
ख़न्दः-ए-दन्दाँनुमा – व्यंग की हँसी।
महशर – प्रलय, अन्तिम न्याय का दिन।
२ रग-ए-लैला – लैला (मजनूँ की प्रेयसी) की रग।
ख़ाक-ए-दश्त-ए-मजनूँ – उस मरुस्थल की धूल जहाँ मजनूँ मारा-मारा फिरता था।
रेशगी बख़्शे – उन्नति प्रदान करे, जड़ें पैदा करे।
बोदे (दो शब्द हैं, बो और दे) – बो दे।
बजाये दानः – बीज के बजाय।
देहक़ाँ – किसान।
नश्तर (निश्तर) – छोटी छुरी।
३ पर-ए-परवानः – पतिंगे का पंख।

बादबान-ए-कश्ति-ए-मै — मदिरा की नौका का पाल।
मज्लिस — महफ़िल।
रवानी — गति।
दौर-ए-साग़र — मधुपात्र का चक्कर।
४ बेदाद-ए-ज़ौक़-ए-परफ़िशानी — पंख फड़फड़ाने की लालसा का ज़ुल्म।
'अर्ज़ — बयान, वर्णन, निवेदन।
क्या क़ुदरत — क्या मजाल।
शह्पर — पंख, डैने।

१६८

(हुये अशुद्ध है, हुए शुद्ध)
१ बे ए'तिदालियों (बे ए'तिदाली) — असंतुलन।
सुबुक — हलका (सुबुक होना–ज़लील होना)
२ पिन्हाँ — निहित।
दाम-ए-सख़्त — मज़बूत जाल।
आशियान — घोंसला, नीड़।
३ हस्ती — अस्तित्व।
फ़ना — विनाश।
दलील — सुबूत।
क़सम — सौगंध (अपनी क़सम होना–न होना)
४ सख़्ती कशान-ए-'अिश्क़ — 'अिश्क़ की मुश्किलें सहनेवाले।
रफ़्तः रफ़्तः — धीरे धीरे।
सरापा अलम — सिर से पाँव तक दुख की मूर्त्ति।
५ तलाफ़ी — क्षतिपूर्त्ति।
दह्र — संसार।
सितम — अत्याचार।
६ जुनूँ — उन्माद।
हिकायात-ए-ख़ूँचकाँ — रक्तरंजित कहानियाँ।
हरचन्द — यद्यपि।
क़लम हुए — काटे गए।
७ तुन्दि-ए-ख़ू — स्वभाव की उग्रता।
बीम — डर, खौफ़, भय।
अज्ज़ा-ए-नालः — आर्त्तनाद के टुकड़े।
रिज़्क़-ए-हम — (हम–मनस्ताप, रंज, ग़म) दुखों की ख़ूराक।
८ अह्ल-ए-हवस — लोलुप।
फ़तह — जीत, विजय।
तर्क-ए-नबर्द-ए-'अिश्क़ — प्रेम के संघर्ष का परित्याग (प्रेम के संघर्ष से जान बचाकर भागना)
'अलम — ध्वजा, पताका।
९ नाले (नालः) — आर्त्तनाद।
'अदम — अनस्तित्व (जन्म से पहले का ज़माना)
दम — साँस।
१० गदाई — फ़क़ीरी, भिखमंगापन।
साइल — सवाल करनेवाला, याचक, भिक्षुक।

'आशिक़-ए-अह्ल-ए-करम — कृपालुओं पर 'आशिक़।

१६९

१ नक़्द-ए-दाग़-ए-दिल — दिल के दाग़ की दौलत।
पास्बानी — रक्षा, हिफ़ाज़त।
फ़सुर्दगी — अफ़सुर्दगी, ग़मगीनी, बुझा हुआ होना।
निहाँ — निहित।
ब कमीन-ए-बेज़बानी — ख़ामोशी की ओट में।
(यदि प्रेम की ज्वाला न हो तो दिल बुझ जाय)
२ तवक़्क़ो'अ — उम्मीद, आशा।
ब ज़मानः-ए-जवानी — जवानी के ज़माने में, युवावस्था में।
कोदकी — बचपन।
३ 'अदू — दुश्मन, शत्रु।
यारब — अय ख़ुदा।
ज़िन्दगानी — ज़िन्दगी, जीवन।

१७०

(यह ग़ज़ल ग़ालिब की श्रेष्ठतम कृतियों में है जिसमें उसने अपने युग की भावनाओं को समेट लिया है)
१ ज़ुल्मतकदे (ज़ुल्मतकदः) — अँधेरा घर।
शब-ए-ग़म का जोश — ग़म की रात का तूफ़ान (ग़ालिब ने स्वयं इसका अर्थ लिखा है अँधेरा ही अँधेरा)
शम्'अ — मोमबत्ती, चराग़, दीपक।
दलील-ए-सहर — सुबह का सुबूत।
ख़मोश — मौन, बुझी हुई।
(ग़ालिब ने स्वयं एक पत्र में लिखा है कि सुबह दीप बुझ जाता है और जिस घर में बुझा हुआ दीपक सुबह का प्रतीक हो वह घर कितना अँधेरा होगा?)
२ मुश्दः-ए-विसाल — प्रियमिलन का शुभ संदेश।
नज़्ज़ारः-ए-जमाल — रूप का दर्शन।
मुद्दत हुई — युग बीत गये।
आश्ति-ए-चश्म-ओ-गोश — आँखों और कानों के बीच सुलह (मेल, मैत्री)
(पहले आँख और कान रूप के दर्शन या प्रियमिलन के शुभ संदेश पर एक दूसरे से ईर्ष्या करते थे। अब इस ईर्ष्या का कोई सामान नहीं रह गया इसलिए दोनों में सुलह होगई है)
३ मै — मदिरा।
हुस्न-ए-ख़ुदआरा — अपनी अदाओं से सजा हुआ रूप, मा'शूक़।
बेहिजाब — बेपर्दा, निरावरण।
शौक़ — अभिलाषा, चाव, आकांक्षा।
इजाज़त-ए-तस्लीम-ए-होश — चेतना के समर्पण की अनुमति (रूप के चरणों में चेतना की भेंट चढ़ाने की इजाज़त)
४ गौहर — मोती।
'अिक़्द-ए-गर्दन-ए-ख़ूबाँ — मा'शूक़ के गले की माला।
औज — ऊँचाई, बलन्दी, उत्कर्ष।

सितारः-ए-गौहर फ़रोश – मोती बेचनेवाले के भाग्य का सितारा।
५ **दीदार** – दर्शन।
बादः – शराब, मदिरा।
हौसलः – साहस।
साक़ी – शराब पिलानेवाला।
निगाह – दृष्टि, चितवन।
बज़्म-ए-ख़याल – कल्पना की महफ़िल, कल्पना का जगत।
मैकदः-ए-बेख़रोश – नीरव मदिरालय।

क़त'अः

क़त'अः – खण्ड।
६ **अय.......दिल** – (ताज़ः वारिदान–नये आनेवाले, नवागत। बिसात–फ़र्श, ज़मीन। हवा–इच्छा, अभिलाषा) ऐश्वर्य की प्यास बुझाने के लिए हृदय की कामनाओं की महफ़िल में आनेवालो, रंगरलियाँ मनाने का नया-नया शौक़ रखनेवालो।
ज़िन्हार – ख़बरदार, सावधान।
हवस-ए-नाय-ओ-नोश – पीने की हवस (लिप्सा)
७ **दीदः-ए-'अिब्रत निगाह** – पराये अनुभव से शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि रखनेवाली आँख।
गोश-ए-नसीहत नियोश – सदोपदेश सुननेवाला कान।
८ **ब जलवः** – अपनी छवि के कारण।
दुश्मन-ए-ईमान-ओ-आगही – धर्म, ज्ञान और चेतना का शत्रु।
मुतरिब – गायक।
ब नग़मः – अपने संगीत के कारण।
रहज़न-ए-तमकीन-ओ-होश – मन के संतोष और बुद्धि का लूटनेवाला।
९ **शब** – रात।
हर गोशः-ए-बिसात – फ़र्श का एक-एक कोना।
दामान-ए-बाग़बान-ओ-कफ़-ए-गुलफ़रोश – माली की झोली और फूल बेचनेवाले की हथेली।
१० **लुत्फ़-ए-ख़िराम-ए-साक़ी** – शराब पिलानेवाले की मंथर गति का सौन्दर्य (मा'शूक़ का नृत्य)
ज़ौक़-ए-सदा-ए-चंग – चंग (एक बाजा) की आवाज़ का आनन्द।
जन्नत-ए-निगाह – दृष्टि के सन्मुख फैला हुआ स्वर्ग।
फ़िरदौस-ए-गोश – कानों में बसा हुआ स्वर्ग।
११ **सुब्ह दम** – प्रातःकाल।
बज़्म – महफ़िल।
सुरूर-ओ-सोज़ (सुरु ग़लत छपा है) – ख़ुशी और गर्मी।
जोश-ओ-ख़रोश – हंगामा और शोर।
१२ **दाग़-ए-फ़िराक़-ए-सोहबत-ए-शब** – रात की महफ़िल के विरह का दाग़।
शम्'अ – मोमबत्ती, चराग़, दीपक।
ख़मोश – मौन, बुझी हुई।
१३ **ग़ैब** – परोक्ष, आकाश।
मज़ामीं – विषय।
सरीर-ए-ख़ामः – क़लम की आवाज़।
नवा-ए-सरोश – जिब्रील (ख़ुदा का संदेश लानेवाला फ़रिश्ता) की आवाज़।

१७१

१ **क़रार** – शान्ति, संतोष।
ताक़त-ए-बेदाद-ए-इन्तिज़ार – इन्तिज़ार के दुख सहने की शक्ति।
२ **हयात-ए-दह्र** – इस जगत का जीवन।
नश्शः – नशा।
ब अन्दाज़ः-ए-ख़ुमार – मदिरालस के बराबर।
३ **गिरियः** – रुदन, रोना।
बज़्म – महफ़िल।
इख़्तियार – क़ाबू, वश।
४ **'अबस** – अकारण, व्यर्थ।
गुमान-ए-रंजिश-ए-ख़ातिर – मनोमालिन्य का भ्रम।
ख़ाक – प्रकृति, सृष्टि।
'उश्शाक़ – 'आशिक़ का बहुवचन।
ग़ुबार – धूल, गर्द, छल-कपट, द्वेष।
५ **लुत्फ़-ए-जल्वःहा-ए-म'आनी** – अर्थ की छवियों का आनन्द।
ग़ैर-ए-गुल – फूल के सिवा।
आईनः-ए-बहार – बहार (वसंत) का दर्पण।
६ **'अहद** – प्रतिज्ञा।
बारे – अंततः, आख़िरकार।
वाय – हाय।
उस्तुवार – मज़बूत, पक्का, दृढ़।
७ **मैकशी** – मदिरापान (मैकशी की क़सम खाना–शराब न पीने की प्रतिज्ञा करना)
ए'तिबार – भरोसा, विश्वास।

१७२

१ **हुजूम-ए-ग़म** – दुखों का समूह।
सरनिगूनी – सर का झुकना।
हासिल है – प्राप्त है।
तार-ए-दामन-ओ-तार-ए-नज़र – दामन का तार और दृष्टि का तार।
फ़र्क़ – विभेद, अन्तर।
२ **रफ़ू-ए-ज़ख़्म** – घाव की सिलाई।
लज़्ज़त – मज़ा, आनन्द, स्वाद।
ज़ख़्म-ए-सोज़न – सुई चुभने से उत्पन्न घाव।
पास-ए-दर्द – पीड़ा का आदर।
ग़ाफ़िल – असावधान, निश्चेत।
३ **गुल** – फूल, (मा'शूक़)
गुलसिताँ (गुलिस्ताँ) – फुलवारी, पुष्पोद्यान।
जल्वः फ़रमाई करे – छवि दिखलाये, मुस्कराये, खिले।
ग़ुंचः-ए-गुल – कुसुम-कली।

सदा-ए-ख़न्दः-ए-दिल – दिल के हँसने की आवाज़।

१७३

१ पा ब दामन होना – पाँव दामन में समेट कर बैठना, चलने फिरने से बाज़ आना।
सहरा नवर्द – जंगल-जगल घूमनेवाला।
ख़ार-ए-पा – पाँव के काँटे।
जौहर-ए-आईनः-ए-ज़ानू – जंघा के दर्पण के जौहर (फ़ौलादी दर्पण पर पड़ी लकीरें)
(झुक कर बैठे हुए व्यक्ति की दृष्टि अपनी जघाओं पर होती है इसलिए जंघा को दर्पण कहा है)
२ हमआग़ोशी – आलिंगन।
निगाह-ए-आश्ना – प्यार भरी दृष्टि, स्नेहसिक्त चितवन।
सर-ए-हर मू – बाल-बाल की नोक।
३ सरापा – सर से पाँव तक।
साज़-ए-आहंग-ए-शिकायत – शिकायत के स्वरों से भरा बाजा।

१७४

१ बज़्म – महफ़िल।
नाज़ – गर्व, सौन्दर्याभिमान।
गुफ़्तार – वार्तालाप (गुफ़्तार में आवे – बात करे; अब प्रचलित नहीं है)
जाँ – जान, प्राण।
काल्बुद-ए-सूरत-ए-दीवार – दीवार का आकार।
२ सर्व-ओ-सनोबर – सरो व सनोबर के वृक्ष।
क़द-ए-दिलकश – मनमोहक (अति सुन्दर) आकार।
गुलज़ार – बाग़, उद्यान।
३ नाज़-ए-गिराँ मायगि-ए-अश्क – आँसुओं का अपनी बहुमूल्यता पर अभिमान।
बजा – ठीक, सही, उचित।
लख़्त-ए-जिगर – जिगर का टुकड़ा।
दीदः-ए-ख़ूँबार – रक्त बरसानेवाले नयन।
४ सितमगर – अन्यायी, अत्याचारी।
आज़ार – दुख।
५ चश्म-ए-फ़ुसूँगर – जादूभरी आँख।
तूती – एक छोटी जाति का तोता जिसे दर्पण के सामने बैठाकर बोलना सिखलाते हैं।
६ यारब – अय ख़ुदा।
आब्लः पा – जिसके पैरों में छाले पड़े हों।
वादि-ए-पुरख़ार – काँटों भरी उपत्यका (घाटी)
७ रश्क – ईर्ष्या।
तन-ए-नाज़ुक – कोमल तन।
आग़ोश-ए-ख़म-ए-हल्क़ः-ए-ज़ुन्नार – जनेऊ की वर्तुलता की गोद में।
८ ग़ारतगर-ए-नामूस – आदर-सम्मान को नष्ट करनेवाला।
हवस-ए-ज़र – धन का लोभ, धनलिप्सा।
शाहिद-ए-गुल – मा'शूक़ की तरह सुन्दर फूल।
९ चाक-ए-गरीबाँ का – गरीबान फाड़ने का।
दिल-ए-नादाँ – अय भोले मन।
नफ़स – साँस।
१० आतशकदः – अग्निशाला, आग से भरा हुआ।
राज़-ए-निहाँ – अंतर में निहित रहस्य या मर्म।
अय वाय – हा हंत।
मा'रिज़-ए-इज़्हार – वर्णन की परिधि।
११ गंजीनः-ए-मा'नी – अर्थ का ख़ज़ाना।
तिलिस्म – जादू।
लफ़्ज़ – शब्द।
अश'आर – शे'र का बहुवचन, काव्य।

१७५

१ हुस्न-ए-मह – चन्द्रमा का सौन्दर्य।
गरचेः – यद्यपि।
ब हँगाम-ए-कमाल – पूर्णचन्द्र होने के समय।
मह-ए-ख़ुर्शीद जमाल – सूर्य की सी आभावाला चाँद (मा'शूक़)
२ बोसः – चुम्बन।
हर लह्ज़ः – हर क्षण, हर समय।
३ साग़र-ए-जम – जमशेद का मधुपात्र (जमशेद प्राचीन ईरान का महान सम्राट था, उसका मधुपात्र प्रसिद्ध है)
जाम-ए-सिफ़ाल – मिट्टी का मधुपात्र।
४ बेतलब – बिन माँगे।
सिवा – ज़्यादा, अधिक।
गदा – भिखारी, फ़क़ीर।
ख़ू-ए-सवाल – सवाल करने की आदत।
६ 'उश्शाक़ – 'आशिक़ का बहुवचन।
बुतों (बुत) – प्रतिमा, रूपवान, मा'शूक़।
फ़ैज़ – दानशीलता, लाभ।
७ हमसुख़न – समान भाषा बोलनेवाला।
तेशः – कुदाल।
कमाल – गुण।
८ क़तरः – क़तरा, बूँद।
दरिया – सागर।
मआल – अन्त, परिणाम।
९ ख़िज़्र सुलताँ – बहादुरशाह के एक बेटे का नाम।
ख़ालिक़-ए-अकबर – ख़ुदा।
सरसब्ज़ – हराभरा, तन्दुरुस्त।
ताज़ः निहाल – नया पौदा।
१० हक़ीक़त – वास्तविकता।

१७६

१ **तसल्ली** – संतोष।
इम्तिहाँ – परीक्षा।
२ **ख़ार ख़ार-ए-अलम-ए-हस्रत-ए-दीदार** – दर्शन की अभिलाषा के दुख जिनमें काँटे ही काँटे हैं।
शौक़ – आकांक्षा, चाव।
गुलचीन-ए-गुलिस्तान-ए-तसल्ली – संतोष के फूल चुननेवाला।
३ **मै परस्ताँ** – अय शराब पीनेवालो।
ख़ुम-ए-मै – मधुघट।
बज़्म – महफ़िल।
४ **नफ़स-ए-क़ैस** – मजनूँ का साँस।
चश्म-ओ-चराग़-ए-सह्रा – (चश्म-ओ-चराग़–अत्यंत प्रिय) जंगल की आँख और दीप, यानी जंगल को आलोकित करनेवाला।
शम्'-ए-सियहख़ान:-ए-लैला – लैला के अँधेरे घर का प्रकाश। (अँधेरा घर इसलिए कहा है कि एक तो लैला स्वयं काली थी और दूसरे अपने प्रेमी से वंचित। शे'र का अर्थ यह है कि यदि लैला मजनूँ को पालेती तो दुनिया मजनूँ से वंचित होजाती)
५ **हंगाम:** – शोरगुल, उपद्रव।
मौक़ूफ़ – निर्भर।
नौह:-ए-ग़म – दुखों का विलाप।
नग़्म:-ए-शादी – सुखों का संगीत।
६ **सताइश** (सिताइश) – तारीफ़, प्रशंसा।
तमन्ना – कामना।
सिले (सिल:) – प्रतिफल, इनाम।
अश'आर – शे'र का बहुवचन, काव्य।
मा'नी – अर्थ।
७ **'अिश्रत-ए-सोह्बत-ए-ख़ूबाँ** – मा'शूक़ों की संगति का ऐश्वर्य।
ग़नीमत – काफ़ी, समुचित, संतोषप्रद।
'अुम्र-ए-तबी'अि – प्राकृतिक पूर्ण आयु।

१७७

१ **नशात** – हर्ष।
जल्लाद – वधिक।
२ **क़ज़ा** – ईश्वराज्ञा।
ख़राब-ए-बाद:-ए-उल्फ़त – प्रेम की मदिरा पीकर नष्ट होनेवाला।
फ़क़त – केवल।
३ **ग़म-ए-ज़मान:** – संसार की चिन्ता।
नशात-ए-'अिश्क़ – प्रेम का हर्ष।
मगरन: – वरना।
लज़्ज़त-ए-अलम – दुखों का आनन्द।
आगे – पहले।
४ **दाद** – प्रशंसा, न्याय।
जुनून-ए-शौक़ – अभिलाषाओं का उन्माद।
दर – द्वार।
नाम:बर – पत्रवाहक।
५ **तुर्र:हा-ए-ख़म ब ख़म** – (तुर्र:–ज़ुल्फ़, अलक) घुँघराली अलकें।
६ **परअफ़शाँ** – बेताब, व्याकुल।
मौज:-ए-ख़ूँ – रक्त की तरंग।
ज़ो'म (ज़ो'म) – घमंड, गर्व, विचार।
दम – साँस, शक्ति, प्राण।

१७८

१ **शिकवे** (शिकव:) – शिकायत।
बेमेह्र – निर्मोही।
गिला – शिकायत।
२ **पुर** – भरा हुआ।
३ **हुस्न-ए-तलाफ़ी** – सुन्दर विधि से क्षतिपूर्ति।
शिकव:-ए-जौर – अत्याचार की शिकायत।
सरगर्म-ए-जफ़ा – अत्याचार में व्यस्त।
४ **चर्ख़-ए-मकौकब** – तारों भरा गगन।
सुस्त रौ – धीमे चलनेवाला, मन्दगामी।
आबल: पा – जिसके पाँव में छाले हों।
५ **हदफ़-ए-नावक-ए-बेदाद** – ज़ुल्म के तीर का निशाना (लक्ष्य)
ख़ता होना – चूकना।
६ **बदख़्वाह** – बुरा चाहनेवाले, दुराकांक्षी।
७ **नाल:** – आर्त्तनाद।
'अर्श – आकाश।
लब – अधर, होंठ।
रसा – पहुँचवाला, दूर तक जानेवाला।

क़त'अ:

क़त'अ: – खण्ड।
८ **ख़ाम:** – क़लम।
बारबद-ए-बज़्म-ए-सुख़न – काव्य के दरबार का बारबद। (बारबद। ईरान का सबसे महान संगीतकार जो ख़ुसरो पर्वेज़ के दरबार में था। या तो उसने अपना नाम एक यूनानी साज़, बारबैतूस, से प्राप्त किया जो ईरान में आकर बर्बत बन गया, या बर्बत का नाम बारबद के नाम पर पड़ा। कहा जाता है कि वह सम्राट के दरबार में नित्य नया गीत सुनाता था। जब किसी को कोई कठिन काम आपड़ता तो वह बारबद के पास जाता और बारबद उसके लिए एक गीत तैयार करता और सम्राट को सुना कर काम निकाल लेता)
शाह – बहादुरशाह 'ज़फ़र'
मद्ह – तारीफ़, प्रशंसा।
नग़्म: सरा – गीत छेड़ना।
९ **अय.......'अलम** – हे सम्राट जिसकी सेना तारों की तरह असंख्य है और जिसकी ध्वजा सूर्य तक पहुँचती है।
इकाम – सम्मान, सत्कार।
हक़ अदा होना – कर्त्तव्य पूरा होना।
१० **इक़्लीम** – महाद्वीप।
हासिल – आय।

फ़राहम – जमा।
लश्कर – सेना।
ना'ल बहा – नालबन्दी का खर्च।

११ बद्र – पूर्णचन्द्र।
हिलाल – नया चाँद, दूज का चाँद।
आस्ताँ – ड्योढ़ी।
नासियः सा – माथा घिसनेवाला, सिजदा करनेवाला।

१२ गुस्ताख़ – धृष्ट।
आईन-ए-ग़ज़लख़्वानी – ग़ज़ल कहने का नियम।
करम – कृपा।
ज़ौक़ फ़िज़ा – चाव को उकसावा देनेवाला।
तल्ख़ नवाई – कड़वा बोलना, कटुस्वरता।

१७९

१ अन्दाज़-ए-गुफ़्तुगू – बात करने का तरीक़ा, वार्त्ता-शैली।

२ करिश्मः – चमत्कार।
बर्क़ – बिजली।
शोख़-ए-तुन्द ख़ू – तेज़ स्वभाववाला मा'शूक़।

३ रश्क – ईर्ष्या।
हमसुख़न – समान भाषी, अपने से बातचीत करनेवाला।
वगरनः – वरना।
ख़ौफ़-ए-बद आमोज़ि-ए-'अदू – शत्रु के सिखाने बुझाने का डर।

४ पैराहन – वस्त्र।
जैब – गरीबान, कुरते की कंठी।
हाजत-ए-रफ़ू – रफ़ू की ज़रूरत।

५ जुस्तजू – तलाश।

७ 'अज़ीज़ – प्रिय।
बादः-ए-गुलफ़ाम-ए-मुश्कबू – कस्तूरी की तरह सुगंधित और फूल की तरह रंगीन मदिरा।

८ ख़ुम – मधुघट।
शीशः-ओ-क़दह-ओ-कूज़ः-ओ-सुबू – बोतल, प्याला, मधुपात्र और मधुकलश।

९ ताक़त-ए-गुफ़्तार – बोलने की शक्ति।
उमीद – उम्मीद, आशा।
आरज़ू – कामना, इच्छा, लालसा, अरमान।

१० शह – शाह, बादशाह।
मुसाहिब – सभासद।
आबरू – इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, सम्मान।

१८०

२ क़ह्र – प्रकोप।
बला – विपत्ति।

१८१

१ ग़ैर – शत्रु, प्रतिद्वंदी, दूसरे, अन्य।
तश्नःलब – प्यासे, तृषित।
पैग़ाम – संदेशा।

२ ख़स्तगी – थकन, तबाही, परेशानी।
चर्ख़-ए-नीलीफ़ाम – नील-गगन।

४ ज़मज़म – का'बे के पास एक पवित्र कुआँ जिसका पानी हज करनेवाले पीते हैं।
सुबहदम – सवेरे के समय।
जामः-ए-एह्राम – का'बे की परिक्रमा करने के लिए जो कपड़ा हाजी शरीर पर लपेटते हैं। (इस दशा में साधारण पाप महापाप बन जाता है)

५ हल्क़े – फंदे।
दाम – जाल।

६ ग़ुस्ल-ए-सेहत – आरोग्य-स्नान।

१८२

१ अन्दाज़ – अदा।
मेह्र-ओ-मह – सूर्य व चन्द्रमा, रवि-शशि।

२ साकिनान-ए-ख़ित्तः-ए-ख़ाक – धरती के वासियो।
'आलम आराई – विश्व का शृंगार।

३ सर ता सर – एक सिरे से दूसरे सिरे तक।
रूकश........मीनाई – नील-गगन की स्पर्धा करनेवाली।
(गगन चाँद-तारों से भरा है, ज़मीन फूलों से)

४ सब्ज़े (सब्ज़ः) – हरियाली।
रू-ए-आब – पानी का स्तर।

५ चश्म-ए-नर्गिस – नर्गिस (एक फूल) की आँख।
बीनाई – नयनों की ज्योति, दृष्टि।

६ तासीर – प्रभाव।
बादःनोशी – मदिरापान।
बाद पैमाई – हवा खाना, हवा नापना (बेकार काम करना)
[पहला अर्थ लें तो मतलब होगा कि हवा में इतना नशा है कि हवा खाना शराब पीने के बराबर है। दूसरे अर्थ से यह मतलब निकलता है कि हवा में इतना नशा है कि शराब पीना बेकार है]

७ शाह-ए-दीदार – धर्मप्राण बादशाह।
शिफ़ा पाई – तन्दुरुस्ती पायी, स्वास्थ्यलाभ किया।

१८३

१ तग़ाफ़ुल दोस्त – उपेक्षाप्रिय।
मेरा दिमाग़-ए-'अिज्ज़ (दमाग़-ए-'अज्ज़) 'आली है – मेरी विनम्रता का दिमाग़ बहुत ऊँचा है।
पहलूतिही करना – पहलू बचाना, खिंचकर मिलना।
जा – जगह।

२ 'आलम – समाज।
अह्ल-ए-हिम्मत – साहस रखनेवाले, साहसी जन।

, **आम-ओ-सुबू** – मधुपात्र और मधुकलश।
मैख़ानः – मदिरालय।

१८४

२ **ख़लिश-ए-ग़मज़ः-ए-ख़ूँरेज़** – रक्तप्रवाही कटाक्ष की चुभन।
ख़ूँनाबः फ़िशानी – रक्त का प्रवाह, ख़ून का बहाव।
३ **आशुफ़्तः बयानी** – मिथ्यावादिता।
४ **ज़िख़ुद रफ़्तः-ए-बैदा-ए-ख़याल** – (ज़िख़ुद रफ़्तः – खोया हुआ। बैदा–सहरा, जंगल) कल्पना के वन में खोया हुआ।
५ **मुतक़ाबिल** – विमुख, जो सामना न कर सके।
मुक़ाबिल – सम्मुख, सामना करनेवाला।
रवानी – प्रवाह, धार, तेज़ी, वेग।
६ **क़द्र-ए-संग-ए-सर-ए-रह** – पथ में पड़े रोड़े का मूल्य।
सख़्त अरज़ाँ – बहुत सस्ती।
गिरानी – बहुमूल्यता, मँहगापन, भारीपन।
७ **गर्दबाद-ए-रह-ए-बेताबी** – व्याकुलता की राह का बगूला (वातचक्र)
सरसर-ए-शौक़ – शौक़ की आँधी।
बानी – प्रवर्त्तक, संस्थापक।
८ **दहन** – मुँह।
हेचमदानी – अनभिज्ञता।
९ **ज़ो'फ़** – निर्बलता।
'आजिज़ – विवश, मजबूर।
नंग-ए-पीरी – बुढ़ापे को लज्जित करनेवाली।

१८५

१ **नक़्श-ए-नाज़-ए-बुत-ए-तन्नाज़** – रूपगर्विता के सौन्दर्याभिमान का चित्र।
ब आग़ोश-ए-रक़ीब – प्रतिद्वंदी की गोद में।
पा-ए-ताऊस – मोर का पैर।
पै-ए-ख़ामः-ए-मानी – मानी (एक महान ईरानी चित्रकार) की तूलिका के लिए।
२ **बदख़ू** – बुरे स्वभाववाला।
तहय्युर – विस्मय।
अफ़्सानः – कहानी, कथा।
आशुफ़्तःबयानी – मिथ्यावादिता।
३ **तप-ए-'इश्क़-ए-तमन्ना** – कामनाओं के प्रेम का ताप (यह तप-ए-'इश्क़ तमन्ना है भी हो सकता है जिसका अर्थ होगा 'इश्क़ के ताप की कामना है)
सूरत-ए-शम्'अ – मोमबत्ती की तरह।
ता नब्ज़-ए-जिगर – जिगर की नसों तक।
रेशः दवानी – साज़िश, षड्यंत्र, उपद्रव (रेशः तार और धागे को भी कह सकते हैं। मोमबत्ती में जो धागा होता है वह जलता है। ग़ालिब ने 'आशिक़ के जलने के लिए भी ऐसे ही धागे की कामना की है इसलिए 'रेशः दवानी' का प्रयोग किया है)

१८६

१ **गुलशन** – बाग़, उद्यान।
सोहबत – संगति।
अज़ बसकि ख़ुश आई है – बहुत पसन्द आई है।
ग़ुंचे – (ग़ुंचः) – कली।
गुल – फूल।
आग़ोश कुशाई – गोद खोलना, बाँहें फैलाना।
२ **कुंगुर-ए-इस्तिग़ना** – निस्पृहता का कलश।
बलन्दी – ऊँचाई।
नाले (नालः) – आर्त्तनाद।
दा'वा-ए-रसाई – पहुचने का दावा।
३ **ज़ब्त** – सहन, नियंत्रण, क़ाबू।
अन्दाज़े – तरीक़े।
चश्म नुमाई – आँख के इशारे से घुड़की देना।

१८७

१ **तद्बीर** – उपाय।
'अदू – दुश्मन, शत्रु।
२ **सर अँगुश्त-ए-हिनाई** – मेंहदी रची उँगली का सिरा।
तसव्वुर – कल्पना।
३ **'उश्शाक़** – 'आशिक़ का बहुवचन।
बेहौसलगी – कम हिम्मती, असाहसिकता।
याँ – यहाँ, संसार में।
फ़रियाद – पुकार, शिकायत।
किसू की – किसी की (किसू दिल्ली की पुरानी भाषा का शब्द है)
४ **दश्ने** (दश्नः) – कटार।
गुलू – गला, गर्दन।
५ **सद हैफ़** – सौ अफ़सोस।
नाकाम – असफल।
हस्रत – अपूर्ण कामना।
बुत-ए-'अरबदः जू – लड़ाका मा'शूक़, तेज़-तर्रार मा'शूक़।
(इस शे'र को चौथे शे'र के साथ मिलाकर पढ़ना चाहिए)

१८८

१ **सीमाब** – पारा, पारद।
पुश्त गर्मि-ए-आईनः दे है – आईने (दर्पण) को सहारा देता है।
हैराँ – हैरान, चकित।
दिल-ए-बेक़रार – व्याकुल हृदय।
(मन पारे की तरह व्याकुल है, जैसे पारा दर्पण को चमका कर चकित कर देता है वही हाल दिल की व्याकुलता ने हमारा किया है)
२ **आग़ोश-ए-गुल** – फूल की गोद।
कुशूदः – खुली हुई, उन्मुक्त।

बराये-विदा'अ – विदाई के लिए।
'अन्दलीब – बुलबुल।

१८९

१ वस्ल – मिलन।
हिज्र – विरह।
'आलम-ए-तमकीन-ओ-ज़ब्त – संतोष और सहन की दशा।
२ लब – अधर, ओंठ।
बोसः – चुम्बन।
शौक़-ए-फ़ुज़ूल-ओ-जुरअत-ए-रिन्दानः – अनुद्देश्य लालसा और मद्यप का सा स्वच्छंद साहस।

१९०

[पहले शे'र के पहले और नवें शे'र के दूसरे मिसरे में चाहिये के अर्थ हैं प्यार कीजिये। चाहना और चाहिये चाहत (प्यार) से बने हैं]

२ सोहबत-ए-रिन्दाँ – मनमौजी मद्यपों की संगत।
वाजिब – उचित, आवश्यक।
हज़र – परहेज़, बचना।
जा-ए-मै – शराब के बजाय।
४ चाक करना – फाड़ना।
जैब – गरेबान, कुर्ते की कंठी।
बे आय्याम-ए-गुल – फूलों की ऋतु के बिना।
५ बेगानगी – परायापन।
७ रुस्वाई – बदनामी, अनादर, तिरस्कार।
स'अि – कोशिश, प्रयास।
यार – मित्र, प्रेमी, मा'शूक़।
हँगामःआरा – उपद्रवी, लड़ाका, तेज़ मिज़ाज।
८ मुनहसिर – निर्भर।
९ ग़ाफ़िल – असावधान।
महतल'अत – चन्द्रमुखी।
खूबरू – खबसूरत, सुन्दर (खूबरूओं–खबरूयों)

१९१

१ दूरि-ए-मंज़िल – मंज़िल की दूरी।
नुमायाँ – प्रकट, प्रत्यक्ष।
रफ़्तार – गति।
बयाबाँ – जंगल, रेगिस्तान, मरुस्थल।
२ दर्स-ए-'उन्वान-ए-तमाशा – तमाशे के शीर्षक से शिक्षा लेना।
ब तग़ाफ़ुल – उपेक्षा के साथ।
खुश्तर – बेहतर।
निगह – निगाह, दृष्टि।
रिश्तः-ए-शीराज़ः-ए-मिश़गाँ – बिखरी पलकों को एक साथ सी देनेवाला धागा।
३ वह्शत-ए-आतश-ए-दिल – दिल की जलन से उत्पन्न होनेवाली घबराहट।
शब-ए-तन्हाई –विरह की रात।
सूरत-ए-दूद – धुएँ की तरह।
गुरेज़ाँ – पलायमान।
४ ग़म-ए-'उश्शाक़ – आशिक़ों का दुख।
सादगी आमोज़-ए-बुताँ – हसीनों को सादगी सिखलानेवाला।
खानः-ए-आईनः – आईने का घर, दर्पण।
वीराँ – वीरान, उजाड़, निर्जन।
(मा'शूक़ों को 'आशिक़ों का इतना ग़म नहीं होना चाहिए कि वे अपना शृंगार छोड़ दें और आईना उनके रूप के लिए तरसता रह जाय और वीरान होजाय)
५ असर-ए-आबलः – छालों का असर।
जादः-ए-सह्रा-ए-जुनूँ – उन्माद के जंगल का पथ।
सूरत-ए-रिश्तः-ए-गौहर – उस धागे की तरह जिसमें मोती पिरोये गए हों, मोतियों की लड़ी की तरह।
चराग़ाँ – दीपावली, दीपमाला।
६ बेखुदी – आत्मविस्मृति।
बिस्तर-ए-तम्हीद-ए-फ़राग़त – आराम की भूमिका का बिस्तर।
हूजो – हूजियो, होना।
पुर – भरा हुआ।
साये (सायः) – छाया, परछाई।
शबिस्ताँ – शयनागार, घर।
७ शौक़-ए-दीदार – दर्शन का चाव।
निगह – निगाह, दृष्टि।
मिस्ल-ए-गुल-ए-शम्'अ – मोमबत्ती के फूल की तरह।
परीशाँ – बिखर जाना।
(मोमबत्ती का फूल कतरने से रौशनी और तेज़ हो जाती है यानी बिखर जाती है)
८ बेकसीहा-ए-शब-ए-हिज्र – विरह की रात की असहायता।
वह्शत – परेशानी, घबराहट।
सायः – साया, छाया।
खुर्शीद-ए-क़यामत – प्रलय के दिन का सूरज।
पिनहाँ – छिपा हुआ, (मुझसे गुप्त और सूर्य में विनिहित)
[मेरी विरह की रात प्रलय के दिन तक खत्म न होगी]
९ गर्दिश.........रँगीं – सैकड़ों रंगीन छवियों से छलकते हुए मधुपात्र का चक्कर।
आईनःदारि-ए-यक दीदः-ए-हैराँ – चकित आँखों का दर्पण।
१० निगह-ए-गर्म – गर्म दृष्टि।
चराग़ाँ – दीपोत्सव।
खस-ओ-खाशाक-ए-गुलिस्ताँ – बाग़ का कूड़ा करकट।

१९२

१ नुक्तःचीं – हर बात में दोष निकालनेवाला (मा'शूक़ को कहा है)
बात बनना – मनोकामना पूरी होना।

बात बनाना – बातों के फेर में उलझाना, झूठ बोलना, लच्छेदार बातें करना।

२ जज़्बः-ए-दिल – मनोभाव, मन का आवेश।

५ नज़ाकत – कोमलता।

६ जल्वःगरी – छवि-प्रकटन की जादूगरी।

(पहले मिसरे में 'देखूँ' के बाद और दूसरे में 'चाहूँ' के बाद प्रश्नसूचक चिन्ह लगा देने से अर्थ समझ में आजाता है)

९ आतश – आग।

१९३

१ चाक – विदीर्णता।

ख़्वाहिश – इच्छा।

वहशत – घबराहट, आकुलता, उन्माद।

ब 'उरियानी – नग्नता के लिए।

मानिन्द – तरह, प्रकार।

ज़ख़्म-ए-दिल – दिल का घाव।

गरीबानी करे – गरीबान बन जाय (यह ग़ालिब का अपना प्रयोग है, उर्दू में प्रचलित नहीं है)

२ जल्वे (जल्वः) – दर्शन, कान्ति, छवि।

'आलम – हालत, दशा।

दीदः-ए-दिल – मन की आँख।

ज़ियारतगाह-ए-हैरानी – विस्मय का तीर्थस्थान।

३ शिकस्तन से – टूटने से (उर्दू में प्रचलित नहीं है)

नौमीद – नाउम्मीद, निराश।

आबगीनः – शीशा, आईना।

कोह – पर्वत।

'अर्ज़-ए-गिराँ जानी करे – सख़्तजानी की शिकायत करे।

४ मैकदः – मदिरालय।

चश्म-ए-मस्त-ए-नाज़ – रूप के मदिर नयन।

शिकस्त – हार, पराजय (टूटना भी अर्थ है)

मू-ए-शीशः – शीशे का बाल।

दीदः-ए-साग़र की मिश़गानी करे – मधुपात्र के नयनों की पलकें बन जाय।

('मिश़गानी करे' भी ग़ालिब का अपना प्रयोग है)

५ ख़त्त-ए-'आरिज़ – मुखलोम।

ज़ुल्फ़ – अलक।

उल्फ़त – प्रेम, 'इश्क़।

'अहद ('अहदनामः) – इक़रारनामा, प्रतिज्ञापत्र।

यक क़लम – पूरी तरह।

परीशानी करे – परेशानियाँ पैदा करे।

१९४

१ ख़्वाब – स्वप्न।

तस्कीन-ए-इज़्तिराब – व्याकुलता में सांत्वना।

वले – लेकिन।

तपिश-ए-दिल – दिल की तपन।

मजाल-ए-ख़्वाब – सोने का साहस।

२ तेग़-ए-निगह – दृष्टि की तलवार।

आब देना – चमकाना, धार रखना।

३ जुँबिश-ए-लब – होठों का कम्पन।

तमाम करना – मार डालना।

बोसः – चुम्बन।

१९५

१ तपिश – तपन, जलन, तड़प।

वक़्फ़-ए-कशमकश – तकलीफ़ में फँसा हुआ।

हर तार-ए-बिस्तर – बिस्तर का हर धागा।

रंज-ए-बालीं – तकिये के दुख का कारण।

बार-ए-बिस्तर – बिस्तर के लिए बोझ।

२ सरश्क-ए-सर बसहरा दादः – (सरश्क–आँसू। सर बसहरा दादः – आवारा) बहता हुआ आँसू।

नूरुल-'ऐन-ए-दामन – दामन की आँख का तारा।

दिल-ए-बेदस्त-ओ-पा – मजबूर दिल।

उफ़तादः – जो लड़खड़ाकर गिर पड़ा हो।

बर्ख़ुर्दार-ए-बिस्तर – बिस्तर की गोद में पड़ा बच्चा।

३ ख़ुशा – क्या कहना।

इक़बाल-ए-रंजूरी – बीमारी का सौभाग्य।

'अयादत – बीमार-पुरसी, रोगी का हालचाल पूछना।

फ़रोग़-ए-शम्'-ए-बालीं – सिरहाने के दीप का प्रकाश।

ताले'-ए-बेदार-ए-बिस्तर – बिस्तर के जागे हुए भाग्य।

४ ब तूफ़ाँ……तनहाई – व्याकुलता के तूफ़ान से भरी हुई एकाकीपन (विरह) की शाम में।

शु'आ'………महशर – प्रलय के दिन के सूरज की किरण।

५ बू – सुगंध।

बालिश – तकिया।

ज़ुल्फ़-ए-मिश्कीं (मुश्कीं) – कस्तूरी की तरह काली और सुगंधित अलकें।

दीद – दर्शन (यहाँ अर्थ है नयन)

ख़्वाब-ए-ज़ुलैख़ा – ज़ुलैख़ा की नींद और स्वप्न (ज़ुलैख़ा ने अपने प्रिय यूसुफ़ को स्वप्न में देखा था)

'आर-ए-बिस्तर – बिस्तर के लिए लज्जा का कारण।

६ हिज्र-ए-यार – प्रिय-विरह।

बेताबी – व्याकुलता।

तार-ए-बिस्तर – बिस्तर का ताना-बाना।

ख़ार-ए-बिस्तर – बिस्तर का काँटा।

१९६

१ ख़तर है – ख़तरा है, डर है।

रिश्तः-ए-उल्फ़त – प्रेम-संबंध (रिश्तः–धागा)

रग-ए-गर्दन – गर्दन की रग।
गुरूर-ए-दोस्ती – मित्रता का घमंड।

२ फ़स्ल – ऋतु।
कोताहि-ए-नश्व-श्रो-नुमा – फलने-फूलने में कमी।
सर्व – सरो (एक सदाबहार वृक्ष जिसमें फूल नहीं होते)।
क़ामत – आकार।
पैराहन – वस्त्र।

१९७

१ नालः – आर्त्तनाद।
पाबन्द-ए-नै – बाँसुरी का पाबन्द।

२ तूँबे (तूँबा) – कद्दू, लौकी।
गदा-ए-मै – शराब का भिखारी।

३ हरचन्द – यद्यपि, अत्यधिक।
शै – वस्तु, चीज़।

४ फ़रेब-ए-हस्ती – अस्तित्व का धोखा।

५ शादी – खुशी, हर्ष।
उर्दी – उर्दी बिहिश्त पारसी महीने का नाम जो वसंत के आरंभ में आता है।
दै – एक पारसी महीना जो खिज़ाँ (पतझड़) में आता है।

६ रद्द-ए-क़दह – प्याले (मधुपात्र) का खंडन।
ज़ाहिद – विरक्त, विरागी।
मै – मदिरा, मधु।
मगस – मक्खी (मगस की क़ै–शहद, मधु)
(ज़ाहिद शहद खाता है शराब नहीं पीता, और स्वर्ग में भी उसे शहद मिलेगा)

७ हस्ती – अस्तित्व।
'श्रदम – अनस्तित्व।

१९८

१ नुस्खः-ए-मरहम – मरहम का नुस्खा।
जराहत-ए-दिल – दिल का घाव।
रेज़ः-ए-अल्मास – हीरे की कनी।
जुज़्व-ए-आ'ज़म – सब से बड़ा अंश।

२ तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।
निगह (निगाह) – दृष्टि, चितवन।
बज़ाहिर – प्रकटतः।

१९९

१ रश्क – ईर्ष्या।
गवारा – सहन, बर्दाश्त।
तमन्ना – कामना।

२ दर पर्दः – छिपे-छिपे।
ग़ैर – अन्य, शत्रु, प्रतिद्वंदी।
रब्त-ए-निहानी – गुप्त संबंध।
ज़ाहिर – प्रकट।

३ बा'इस-ए-नौमीदि-ए-अर्बाब-ए-हवस – प्रेमशून्य लोलुपों की निराशा का कारण।

२००

१ बादः – मदिरा।
लब – होंठ, अधर।
कस्ब-ए-रंग-ए-फ़रोग़ – शोभा के रंग को प्राप्त करना।
ख़त-ए-पियालः – मधुपात्र पर मापचिह्न।
सरासर – बिल्कुल, पूरी तरह।
निगाह-ए-गुलचीं – फूल चुननेवाले की दृष्टि।
(जब तेरे होंठ मधुपात्र को छूते हैं तो मदिरा उनकी शोभा और रंग से दमक उठती है और मधुपात्र पर अंकित मापचिह्न फूल चुननेवाले की आँख की तरह बन जाता है, तेरे अधर-कुसुमों के रंग से रच जाता है)

२ दिल-ए-शोरीदः – पागल दिल, अभिलाषी मन।
दाद – प्रशंसा, न्याय।
हसरतपरस्त-ए-बालीं – तकिये का अभिलाषी, नींद का इच्छुक।

३ बजा – उचित, ठीक।
नालःहा-ए-बुलबुल-ए-ज़ार – दुखी बुलबुल का आर्त्तनाद।
गोश-ए-गुल – फूल का कान।
नम-ए-शबनम – ओस की नमी।
पंबः आगीं – रुई भरा।

४ नज़्'अ – मृत्यु के समय साँस टूटने की दशा, चंद्रा।
मक़ाम.......तमकीं – लज्जा को त्यागने और घमंड को विदा करने का समय।

२०१

१ चश्म-ए-बुताँ – मा'शूक़ों के नयन।
महव-ए-तग़ाफ़ुल – उपेक्षा में लीन।
नज़्ज़ारे (नज़्ज़ारः) – दृश्य, अवलोकन।
परहेज़ – दुराव।

२ आरज़ू – कामना।

३ 'आरिज़-ए-गुल – फूल के कपोल।
रू-ए-यार – मित्र का मुखड़ा।
जोशिश-ए-फ़स्ल-ए-बहारी – वसंत ऋतु का तूफ़ान।
इश्तियाक़ अंगेज़ – शौक़ को उभारनेवाला।

२०२

१ बशर – इंसान, मानव।
रक़ीब – प्रतिद्वंदी।
नामःबर – पत्रवाहक।

२ क़ज़ा – मौत।
शिकवः – शिकायत।

३ **गह-ओ-बेगह** – समय-असमय, वक़्त बेवक़्त।
कू-ए-दोस्त – मित्र की गली।
४ **ज़िहे करिश्मः** – (ज़िहे–प्रशंसात्मक संबोधन, जैसे क्या कहना। करिश्मः–चमत्कार, छल) ज़रा छल तो देखो।
फ़रेब – धोखा।
५ **पुरसिश-ए-हाल** – कुशल-मंगल पूछना।
सर-ए-रहगुज़र – बीच रास्ता।
६ **सर-ए-रिश्तः-ए-वफ़ा** – प्रम-निर्वाह के संबंध का सिरा।
७ **ज़ा'म-ए-जुनूँ** – (ज़ो'म) उन्माद का भ्रम।
क़त'-ए-नज़र – निराशा।
८ **हसद** – डाह।
सज़ा-ए-कमाल-ए-सुख़न – काव्य-कला की पूर्णता की सज़ा।
सितम – अत्याचार, अन्याय।
बहा-ए-मता'-ए-हुनर – कला की संपत्ति का मूल्य।
९ **आशुफ़्तःसर** – सरफिरा, दीवाना, परेशान।

२०३

१ **दर पर्दः** – पर्दे में, छिपा हुआ, गुप्त, पैदा होने से पहले, अनस्तित्व की दशा में।
गर्म-ए-दामन अफ़्शानी – दामन झाड़ने (आज़ादी) की हालत में।
वाबस्तः-ए-तन – तन से आबद्ध।
'उरियानी – नग्नता।
२ **तेग़-ए-निगाह-ए-यार** – मित्र (मा'शूक़) की चितवन की तलवार।
संग-ए-फ़साँ – सान का पत्थर।
मरहबा – धन्य-धन्य, शाबाश।
मुबारक – शुभ।
गिराँजानी – सख़्तजानी, प्राणों की कठोरता।
३ **बेइल्तिफ़ाती** – अनाकृष्टि, अकृपा।
उसकी ख़ातिर जम्'अ है – वह संतुष्ट है।
महव-ए-पुरसिशहा-ए-पिनहानी – (महव–लीन। पुरसिश–परिपृच्छा, हा, बहुवचन, ए, इज़ाफ़त। पिन्हानी–आंतरिक, गुप्त) मन ही मन मा'शूक़ की कल्पना में लीन।
४ **ग़मख़ाने** (ग़मख़ानः) – शोकगृह।
रक़म होने लगी – लिखी जाने लगी।
मिंजुमलः-ए-अस्बाब-ए-वीरानी – वीरानी के सामान में से एक।
५ **बदगुमाँ** – संदेहशील।
काफ़िर – मान्यताओं को अस्वीकार करनेवाला (मा'शूक़)
ज़ौक़-ए-नवा-ए-मुर्ग़-ए-बुस्तानी – बाग़ की चिड़ियों के गाने का शौक़।
६ **शोर-ए-महशर** – प्रलय का शोर।
दम – साँस, चैन।
गोर – क़ब्र।
ज़ौक़-ए-तनआसानी – आलस्यप्रियता।
७ **नशात-ए-आमद-ए-फ़स्ल-ए-बहारी** – वसंत ऋतु के आगमन का हर्ष।
सौदा-ए-ग़ज़लख़्वानी – ग़ज़ल गाने का उन्माद।
९ **अज़ सर-ए-नौ** – नये सिरे से।
यूसुफ़-ए-सानी – दूसरा यूसुफ़ (यूसुफ़ के लिए ग़ज़ल ३७, शे'र ६ देखिये)।

२०४

१ **शादी** – ख़ुशी, हर्ष।
हंगामः-ए-यारब – यारब (अय ख़ुदा) यारब का शोर।
सुब्हः-ए-ज़ाहिद – ज़ाहिद की तसबीह (सुमिरन)
ख़न्दः ज़ेर-ए-लब – ओठों में दबी हँसी, हल्की मुस्कान।
(तसबीह पर यारब पढ़ते हैं। हल्की मुस्कान को तसबीह पढ़ने से उपमा दी है)
२ **कुशाद-ए-ख़ातिर-ए-वाबस्तः दर** – मन के बन्द द्वार का खुलना।
रह्न-ए-सुख़न – काव्य पर निर्भर।
तिलिस्म-ए-क़ुफ़्ल-ए-अबजद – अबजद (वर्णमाला) के मेल से खुलनेवाले ताले का जादू।
ख़ानः-ए-मक्तब – पाठशाला।
३ **आशुफ़्तगी** – परीशानी, उन्माद, विकलता, अस्तव्यस्तता।
दाद – प्रशंसा, न्याय।
रश्क – ईर्ष्या।
आसाइश – आराम, सुख-सुविधाएँ।
ज़िन्दानियों की – क़ैदियों की, बन्दियों की।
४ **तब'अ** – स्वभाव, प्रकृति।
मुश्ताक़-ए-लज़्ज़तहा-ए-हस्रत – अपूर्ण कामनाओं के आनन्द के लिए उत्सुक।
आरज़ू – अभिलाषा।
शिकस्त-ए-आरज़ू – अभिलाषा का भंग होना।
मतलब मुझे – मेरा मतलब (उर्दू में प्रचलित नहीं है)
५ **आते थे माने'अ** – मना करते थे (माने'अ आना–रोकना)।

२०५

१ **हुज़ूर-ए-शाह** – बादशाह के सामने।
अह्ल-ए-सुख़न – कवि।
आज़माइश – परीक्षा।
ख़ुश नवायान-ए-चमन – उद्यान के मीठे बोल गानेवाले।
२ **क़द-ओ-गेसू** – आकार और अलकें।
क़ैस-ओ-कोहकन – मजनूँ और फ़रहाद।
दार-ओ-रसन – सूली और फाँसी का फंदा।
(दार, वह लकड़ी जो फाँसी देने के लिए गाड़ते हैं, मा'शूक़ के आकार की तरह है और रसन, फंदा, अलकों की तरह)
३ **कोहकन** – फ़रहाद।
हौसले (हौसलः) – साहस।
हनोज़ – अभी।
ख़स्तः – थका हुआ, श्रांत, ज़ख़्मी, परेशान।
नीरू-ए-तन – शारीरिक शक्ति, तन-बल।

४ **नसीम-ए-मिस्र** – मिस्र की हवा।

पीर-ए-कन'आँ – कन'आँ का वृद्ध, या'क़ूब पैग़ंबर जो हज़रत यूसुफ़ के बाप थे।

हवाख़्वाही – ख़ैरख़्वाही, शुभाकांक्षा।

यूसुफ़ – एक पैग़ंबर का नाम जो बहुत सुन्दर थे।

(देखिये ग़ज़ल १० शे'र ९, ग़ज़ल ६२, शे'र २, ग़ज़ल ११२, शे'र ४ व ५)

बू-ए-पैरहन – वस्त्रों की सुगंध।

(हज़रत या'क़ब ने हज़रत यूसुफ़ के वस्त्रों की सुगंध को दूर से पहचान लिया था और इस गंध को सूँघ कर उनके नयनों की ज्योति वापस आगई थी)

५ **बज़्म** – महफ़िल।

ग़ाफ़िल – असावधान, बेसुध, अचेत।

शिकेब-ओ-सब्र-ए-अहल-ए-अंजुमन – महफ़िलवालों का धैर्य और संतोष (अर्थात सहनशक्ति)।

६ **शिस्त-ए-बुत-ए-नावक फ़िगन** – तीर चलानेवाले मा'शूक़ का निशाना।

७ **सुब्ह:-ओ-ज़ुन्नार** – तसबीह और जनेऊ।

गीराई – पकड़, गिरफ़्त।

८ **दिल-ए-वाबस्त:** – फँसा हुआ दिल।

बेताबी – तड़प, आकुलता।

ताब-ए-ज़ुल्फ़-ए-पुरशिकन – (ताब–चमक, शक्ति) घुँघराली अलकों की शक्ति।

९ **रग-ओ-पै** – रग और रेशा, पूरा शरीर।

तल्ख़ि-ए-काम-ओ-दहन – होंठों और तालू की कटुता।

१० **चर्ख़-ए-कुहन** – पुरातन गगन।

२०६

१ **गर** – अगर, यदि।

जफ़ाएँ (जफ़ायें अशुद्ध है) – अत्याचार।

२ **जज़्ब:-ए-दिल** – मनोभाव, मन का आवेश।

तासीर – प्रभाव, गुण, फल।

३ **बदख़ू** – बदमिज़ाज, दुःशील।

दास्तान-ए-'अिश्क़ – प्रेम-कथा।

तूलानी – लम्बी, दीर्घ।

'अिबारत मुख़्तसर – ('अिबारत–वर्णन। मुख़्तसर–संक्षिप्त) मुहावरा है जो लम्बी बात को छोटी करके कहने के लिए बोला जाता है। इसको 'क़िस्स: कोताह' भी कहते हैं।

क़ासिद – संदेशवाहक।

४ **बदगुमानी** – मिथ्यासंदेह।

नातवानी (नातुवानी) – निर्बलता।

५ **नाउमीदी** – निराशा।

क्या क़यामत है – मुहावरा है जो अत्यंत कठिन परिस्थिति के लिए बोला जाता है।

दामान-ए-ख़याल-ए-यार – मित्र (मा'शूक़) की कल्पना का दामन।

६ **तकल्लुफ़ बरतरफ़** – तकल्लुफ़ को एक ओर रखो, साफ़ बात यह है।

नज़्ज़ारगी – अवलोकन, दर्शन करना।

वह देखा जाय – लोग उसे देखें।

७ **नबर्द-ए-'अिश्क़** – प्रेम का संघर्ष।

८ **मुद्द'ई** – दावा करनेवाला, प्रतिद्वंदी।

हमसफ़र – सहपंथी, सहयात्री।

काफ़िर – मा'शूक़।

ख़ुदा को सौंपना – विदा के समय कहते हैं ख़ुदा हाफ़िज़ या ख़ुदा को सौंपा (ग़ालिब ने दो अर्थ लिये हैं। एक यह कि मैं उसे ख़ुदा हाफ़िज़ भी नहीं कह सकता क्योंकि उसका विरह सहन नहीं कर सकता, दूसरे यह कि इतने हसीन मा'शूक़ के मामले में ख़ुदा पर भी विश्वास नहीं कर सकता)।

२०७

१ **ज़िबसकि** – बस।

मश्क़-ए-तमाशा – देखने की आदत।

जुनूँ 'अलामत – उन्माद का लक्षण।

कुशाद-ओ-बस्त-ए-मिश़: (ह) – पलकों का खोलना और मूँदना।

सेलि-ए-निदामत – पछतावे का थप्पड़।

२ **क्योंकि** – क्योंकर, कैसे।

दाग़-ए-ता'न-ए-बद 'अहदी – वचन भंग करने के ताने का दाग़।

बरत:-ए-मलामत – धिक्कार का भँवर (तू जब दूसरों से मिलने के लिए शृंगार करके दर्पण देखता है तो तुझे मुझसे वचन भंग करने के दाग़ अपने चेहरे पर दिखलाई पड़ते हैं, यानी दर्पण तेरी निन्दा करता है। और तू लज्जा कर उन दाग़ों को धोना चाहता है, लेकिन ये इसलिए नहीं धुल सकते कि यह दर्पण के पानी का भँवर है)

३ **ब पेच-ओ-ताब-ए-हवस** – हवस (लिप्सा) के आवेग में।

सिल्क-ए-'आफ़ियत – सुख-चैन की डोरी (सहारा)

निगाह-ए-'अिज्ज़ ('अज्ज़) – विनय की दृष्टि।

सर-ए-रिश्त:-ए-सलामत – कुशलता की डोरी का सिरा।

४ **वफ़ा मुक़ाबिल** – प्रेम-निर्वाह सन्मुख है, मा'शूक़ वफ़ादार है।

ओ – और।

दा'वा-ए-'अिश्क़ – प्रेम जताना ('आशिक़ की या प्रतिद्वंदी की तरफ़ से)

बेबुनियाद – निराधार, बेकार।

जुनूँन-ए-साख़्त:-ओ-फ़स्ल-ए-गुल – बनावटी उन्माद और फूलों की ऋतु।

(यदि मा'शूक़ वफ़ादार हो तो उस पर प्रेम जताना ऐसा है जैसे फूलों की ऋतु में बनावटी उन्माद)।

२०८

१ **लाग़र** – अशक्त, निर्बल, क्षीणकाय।

गर – अगर, यदि।

बज़्म – महफ़िल।

जा – जगह, स्थान।

ज़िम्मः – उत्तरदायित्व।

२ त'अज्जुब – ताज्जुब, आश्चर्य।

रहम – दया।

वाँ तलक – वहाँ तक।

हीले से – बहाने से।

३ ब अन्दाज़-ए-'अिताब – ग़ुस्से के अन्दाज़ से, रोष के भाव से।

परदः (पर्दः) – आवरण।

४ ज़ुल्फ़ – केशराशि, अलक।

शाने (शानः) – कंधा।

२०९

१ बाज़ीचः-ए-अतफ़ाल – बच्चों का खेल।

शब-ओ-रोज़ – रात और दिन।

२ औरंग-ए-सुलैमाँ – सुलैमान का राजसिंहासन।
(बाइबिल और कुरान के अनुसार सुलैमान महान सम्राट थे)

ए'जाज़-ए-मसीहा – ईसा का चमत्कार। (हज़रत ईसा की फूँक से मुर्दे जी उठते थे)।

३ जुज़ नाम – नाम के सिवा।

सूरत-ए-'आलम – संसार का रूप।

मंज़ूर – स्वीकृत।

जुज़ वहम – भ्रम के अतिरिक्त।

हस्ति-ए-अशिया – वस्तुओं का अस्तित्व।

४ निहाँ – निहित।

सहरा – रेगिस्तान, मरुस्थल।

जबीं – माथा, मस्तक।

६ ख़ुद्बीन-ओ-ख़ुद्आरा – अभिमानी और आत्म-अलंकृत।

बुत-ए-आइनः सीमा – दर्पण की तरह चमकते हुए मुखड़ेवाला मा'शूक़।

७ अन्दाज़-ए-गुल अफ़शानि-ए-गुफ़्तार – बातों का ऐसा अन्दाज़ कि जैसे फूल झरते हों।

पैमानः-ओ सहबा – मधुपात्र और मदिरा।

८ नफ़रत – घृणा।

गुमाँ – सन्देह।

रश्क – ईर्ष्या।

९ ईमाँ – ईमान, सत्य, धर्म, आस्था।

कुफ़्र – अनास्था, अधर्म।

कलीसा – गिरजाघर।

१० मा'शूक़ फ़रेबी – मा'शूक़ को रिझाना।

११ वस्ल – मिलन।

शब-ए-हिज्राँ – विरह-यामिनी।

तमन्ना – कामना।

१२ मौजज़न – तरंगायित, हिल्लोलित, लहरें मारता हुआ।

कुल्ज़ुम-ए-ख़ूँ – रक्त का सागर।

१३ जुंबिश (जुम्बिश) – कम्पन।

साग़र-ओ-मीना – मधुपात्र और मधुकलश।

१४ हमपेशः – सहव्यवसायी।

हममश्रब – सहधर्मी, सहपंथी।

हमराज़ – सब भेद जाननेवाला (घनिष्ट मित्र), सखा।

२१०

१ मुद्द'आ – उद्देश्य, कामना।

२ ता'न – व्यंग।

सितमगर – अत्याचारी।

ख़ू – आदत।

बजा – ठीक, उचित, सच।

३ नेश्तर – निश्तर, नश्तर।

निगाह-ए-नाज़ – सौन्दर्य-गर्व से भरी दृष्टि।

आश्ना – परिचित, मित्र।

४ ज़रि'अः-ए-राहत – सुख-चैन का साधन।

जराहत-ए-पैकाँ – तीर का ज़ख़्म।

ज़ख़्म-ए-तेग़ – तलवार का घाव।

दिलकुशा – दिल को खोलनेवाला, विशाल, हर्षवर्द्धक।

५ मुद्द'ई – दावेदार, दुश्मन।

नासज़ा – निकृष्ट।

६ हक़ीक़त-ए-जाँकाहि-ए-मरज़ – रोग के कष्ट की वास्तविकता।

मुसीबत-ए-नासाज़ि-ए-दवा – दवा के असर न करने का दुख।

७ शिकायत-ए-रंज-ए-गिराँ नशीं – जमकर बैठ जानेवाले दुख की शिकायत।

हिकायत-ए-सब्र-ए-गुरेज़ पा – भागते हुए संतोष की कहानी।

८ ख़ूँ-बहा – ख़ून की क़ीमत (ख़ूँ-बहा क़ातिल की तरफ़ से क़त्ल होनेवाले के संबंधियों को दिया जाता था। ग़ालिब ने व्यंग से उल्टी बात लिखी है)।

मर्हबा – शाबाश, साधुवाद, धन्य-धन्य।

९ निगार – सुन्दरी, रूपसी, मा'शूक़।

उल्फ़त – प्रेम।

रवानि-ए-रविश-ओ-मस्ति-ए-अदा – मंथरगति की सुन्दरता और अदा की उन्मदता।

१० तरावत-ए-चमन-ओ-ख़ूबि-ए-हवा – उद्यान की शीतलता और हवा की उत्तमता।

११ सफ़ीनः – नाव, कश्ती, नौका।

सितम-ओ-जौर-ए-नाख़ुदा – नाविक के अत्याचार और अन्याय।

२११

१ बेबाक – निडर, निर्लज्ज, बेशर्म।

पाक – गुंडों की तरह आज़ाद।

२ सर्फ़-ए-बहा-ए-मै – मदिरा के मूल्य में ख़र्च।

आलात-ए-मैकशी – शराब खींचने के यंत्र।

हिसाब पाक होना – हिसाब चुक जाना।

३ रुस्वा-ए-दह्र – दुनिया भर में अपमानित (तुम किसी-किसी संस्करण में 'हम' है।)

४ नालः-ए-बुलबुल – बुलबुल का आर्त्तनाद।
गुल – फूल।
चाक – विदीर्ण।

५ वुजूद-ओ-अदम – अस्तित्व और अनस्तित्व।
अह्ल-ए-शौक़ – अभिलाषी जन, 'आशिक़।
ख़स-ओ-ख़ाक – कूड़ा करकट, जो आग में भस्म हो जाता है।

६ तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।
गिला – शिकायत, उलाहना।
ख़ाक – राख।

७ ग़मनाक – ग़मगीन, दुखी, शोकमय।

२१२

१ नश्शःहा – नशे, शराब या शराब की बोतलें।
शादाब-ए-रंग – रंग से प्रफुल्ल, हराभरा।
ओ – और।
साज़हा – साज़ का बहुवचन।
मस्त-ए-तरब – हर्षोन्मत्त।
शीशः-ए-मै – मदिरा-पात्र, शराब की बोतल।
सर्व-ए-सब्ज़-ए-जूइबार-ए-नग़मः – संगीत का झरना जो हरा-भरा सरो प्रतीत होरहा है।
(कच्चे शीशे की बोतल जिसका रंग हरा और सूरत सरो की सी होती थी)।

२ हमनशीं – साथी, सखा, मित्र, पार्श्ववर्ती।
बरहम करना – बिगाड़ना।
बज़्म-ए-'ऐश-ए-दोस्त (बज़्मे अशुद्ध है) – मित्र की ऐश्वर्य-सभा।
नाले (नालः) – आर्त्तनाद।
ए'तिबार-ए-नग़मः – संगीत का धोखा।
(वहाँ जाकर मेरा आर्त्तनाद संगीत बन जाता है)।

२१३

१ 'अर्ज़-ए-नाज़-ए-शोख़ि-ए-दंदाँ – दाँतों की चमक-दमक को प्रकट करना।
बराय ख़न्दः – हँसने के लिए।
दा'वः-ए-जम'इयत-ए-अह्बाब – मित्रों के एक जगह जमा होने की बात।
जा-ए-ख़न्दः – हँसी की जगह, हँसी का कारण।
(जैसे दाँत हँसते समय सुन्दर लगते हैं किन्तु बाद में उखड़ जाते हैं, वैसे ही मित्रों की ख़ूबसूरत महफ़िल भी तितर-बितर होजायगी)।

२ 'अदम – अनस्तित्व।
ग़ुंचः – कली।
महव-ए-'इब्रत-ए-अंजाम-ए-गुल – फूल के अंत से शिक्षा ग्रहण करने में लीन।
यक जहाँ – एक दुनिया के बराबर, बहुत अधिक।
ज़ानू तअम्मुल – पछतावा।

दर क़फ़ा-ए-ख़न्दः – हँसी के पीछे।

३ कुल्फ़त-ए-अफ़सुर्दगी – मलिनता का दुख।
'ऐश-ए-बेताबी – व्याकुलता का आनंद।
हराम – निषिद्ध, वर्जित।
दंदाँ दर दिल अफ़शुर्दन – (फ़ारसी मुहावरा है) दिल में दाँत गाड़ना, जान जोखिम में डालना।
बिना-ए-ख़न्दः – हँसी का आधार।

४ सोज़िश-ए-बातिन – आंतरिक तपन।
अह्बाब – मित्र।
मुन्किर – इन्कार करने वाले।
मुहीत-ए-गिरियः – आँसुओं का सागर।
लब – होंठ, अधर।
आश्ना-ए-ख़न्दः – हँसी से परिचित, मुस्कुराते हुए।

२१४

१ हुस्न-ए-बेपरवा – निस्पृह सौन्दर्य।
ख़रीदार-ए-मता'-ए-जल्वः – छवि और कान्ति की सम्पत्ति का ख़रीदार, छवि दिखलाने का शौक़ीन।
ज़ानू-ए-फ़िक्र-ए-इख़्तिरा-ए-जल्वः – (मनुष्य जब चिंता में सिर झुका करे बैठता है तो उसकी दृष्टी जघा की ओर होती है। इसलिए ग़ालिब ने कल्पना और चिंतन को ज़ानु-ए-फ़िक्र कहा है) नित नयी कान्ति और छवि ईजाद करने की चिंता [सौन्दर्य का दर्पण उसकी चेतना है, इसीलिए ग़ालिब ने संसार को एक जगह चेतना-दर्पण कहा है। देखिये भूमिका पृष्ठ १०]

२ ता कुजा – कब तक, कहाँ तक।
आगही – आगाही, चेतना।
रंग-ए-तमाशा बाख़्तन – तमाशे के रंगों से खेलना (रंग का शब्द फ़ारसी में अनेक अर्थ रखता है। यहाँ इसका अर्थ हर्ष और आनन्द भी है और दुख और पीड़ा भी)।
चश्म-ए-वा गर्दीदः – खुली हुई आँख, उन्मीलित नयन।
आग़ोश-ए-विदा'-ए-जल्वः – संसार की छवियों को विदा करनेवाली गोद।

२१५

१ दहान-ए-ज़ख़्म – घाव का मुँह।
राह-ए-सुख़न – बातचीत की राह।
वा करना – खोलना।

२ 'आलम – संसार, जगत।
ग़ुबार-ए-वहशत-ए-मजनूँ – मजनूँ के उन्माद की धूल।
सरबसर – एक सिरे से दूसरे सिरे तक।
ख़याल-ए-तुर्रः-ए-लैला – लैला की अलकराशि का खयाल।

३ अफ़सुर्दगी – मलिनता, उदासीनता।
तरब इंश-ए-इल्तिफ़ात – कृपा का आनद प्राप्त करनेवाली।
जा – जगह।

४ नदीम – साथी, दोस्त।
मलामत – निंदा, भर्त्सना।

'अुक़दः-ए-दिल – मन की गाँठ।

५ चाक-ए-जिगर – जिगर का घाव।

रह्-ए-पुरसिश – पछिन्छा और आदर-सत्कार की राह्।

जैब – गरीबान, कुर्ते का गला।

रुस्वा – ज़लील, अपमानित।

६ लख्त-ए-जिगर – जिगर के टुकड़े।

रग-ए-हर-ख़ार – हर काँटे की नस।

शाख़-ए-गुल – फूलों की डाली।

ता चन्द – कब तक।

बाग़बानि-ए-सह्रा – जंगल की बाग़बानी।

७ नाकामि-ए-निगाह् – दृष्टि की असफलता।

बर्क़-ए-नज़ारः सोज़ – अवलोकन और दृश्य को जला देनेवाली बिजली।

८ संग-ओ-ख़िश्त – पत्थर और ईंट।

सदफ़-ए-गौहर-ए-शिकस्त – (शिकस्त–टूटना) शिकस्त के मोती की सीपी (सर के फूटने से जो रक्त की बूँदें निकलती हैं उनको मोती और ईंट-पत्थर को इन मोतीयों की सीपियाँ कहा है)।

जुनूँ – उन्माद, पागलपन।

९ सरबर होना – कर्तव्यमुक्त होना।

वा'दः-ए-सब्र आज़मा – संतोष की परीक्षा लेनेवाली प्रतिज्ञा।

फ़ुर्सत – अवकाश।

तमन्ना – कामना।

१० वह्शत-ए-तब्'अत-ए-ईजाद – आविष्कारप्रिय स्वभाव का उन्माद।

यास ख़ेज़ – निराशाजनक।

(ग़ालिब के एक भाष्यकार ने यास का अर्थ यास्मन, चमेली का फूल, बताया है। इस तरह यास ख़ेज़ का अर्थ होजायगा फूल खिलानेवाला। एक अन्य भाष्यकार ने यास ख़ेज़ का अर्थ कठिन काम बताया है)।

११ बेकारि-ए-जुनूँ – उन्माद की बेकारी।

शग़्ल – कार्य, उद्योग, मनोविनोद।

१२ हुस्न-ए-फ़रोग़-ए-शम्'-ए-सुख़न – काव्य के दीपक की प्रभा।

दिल-ए-गुदाख़्तः – पिघला हुआ दिल।

२१६

१ इब्न-ए-मरियम – मरियम का बेटा, ईसा (ईसा मुर्दों को ज़िन्दा और रोगियों को अच्छा कर देते थे)।

२ शर्'-ओ-आईन – धार्मिक नियम और राज्य-विधान।

मदार – आधार।

३ जा – जगह।

५ जुनूँ – उन्माद।

७ बख़्श दो – क्षमा कर दो।

ख़ता – भूल, क़ुसूर, अपराध।

८ हाजतमन्द – ज़रूरतमन्द।

हाजत रवा करना – ज़रूरत पूरी करना।

९ ख़िज़्र – एक पैग़म्बर जो भूले-भटकों को राह दिखलाते हैं। (कहते हैं कि वे सिकन्दर को आब-ए-हयात, अमृत, के झरने पर ले गये थे। ख़ुद उन्होंने आब-ए-हयात पी लिया और सिकन्दर को वे मनुष्य दिखलाये जो यह पानी पीकर मरने से वंचित होगए थे। सिकन्दर ने उनकी हालत देखकर पानी नहीं पिया)।

रहनुमा – पथ-प्रदर्शक।

१० तवक़्क़ो'अ – आशा, आसरा।

गिला – शिकायत।

२१७

१ ग़म-ए-गेती – (गेती–पृथ्वी) संसार के दुख।

ग़ुलाम-ए-साक़ि-ए-कौसर – कौसर के साक़ी का ग़ुलाम (कौसर–स्वर्ग की शराब का झरना)।

२ तर्ज़-ओ-रविश – रीति-व्यवहार, आचरण।

रक़ीब – प्रतिद्वंदी।

लुत्फ़ – कृपा, अनुकम्पा।

सितम – अत्याचार।

३ सुख़न – काव्य।

ख़ामः-ए-ग़ालिब – ग़ालिब की क़लम।

आतश अफ़शानी – आग बरसाना।

२१८

१ ख़फ़क़ानी – पागलपन का रोगी।

सायः-ए-शाख़-ए-गुल – फूलों की डाली की छाया।

अफ़'ई – साँप।

२ जौहर-ए-तेग़ – तलवार का जौहर (फ़ौलाद की लकीरें जो हल्के हरे रंग की होती हैं)।

बसर चश्मः-ए-दीगर – किसी दूसरे उद्गम से।

मा'लूम – नहीं।

(तलवार के जौहर पर किसी दूसरे उद्गम का पानी नहीं होता)

सब्ज़ः – हरियाली।

ज़हराब – ज़हर का पानी, विष-जल।

(तलवार ज़हर में बुझाई जाती है)।

३ मुद्द'आ – उद्देश्य।

मह्व-ए-तमाशा-ए-शिकस्त-ए-दिल – दिल टूटने का तमाशा देखने में लीन।

आइनःख़ानः – वह घर जिसमें चारों ओर दर्पण हों, शीशमहल (दिल की दर्पण से उपमा दी जाती है, इसलिए दिल के टूटे हुए टुकड़ों से शीशमहल बन गया है। मैं अपने दुखों का आप तमाशाई हूँ)।

४ नालः – आर्त्तनाद।

सरमायः-ए-यक 'आलम – संसार की पूँजी, संसार का नतीजा।

'आलम कफ़-ए-ख़ाक – संसार एक मुट्ठीभर मिट्टी।

बैज़ः-ए-क़ुम्री – क़ुम्री पक्षी का अंडा।

२१९

१ कौकबः-ए-शह्रयार – बादशाह की सवारी का जुलूस।

सर-ए-रहगुज़ार – राह, पथ।

२ **नुमूद** – ख्याति, वैभव, शोभा।

लालःज़ार – लाले के फूलों का बग़ीचा।

३ **सैर-ए-गुलिस्ताँ** – बाग़ की सैर।

२२०

१ **ख़्वाहिश** – इच्छा, अभिलाषा।

अर्मान – मनोकामना, आकांक्षा, लालसा।

२ **चश्म-ए-तर** – भीगी आँख।

दम बदम – क्षण-क्षण।

३ **ख़ुल्द** – स्वर्ग, बिहिश्त।

आदम – सबसे पहला पुरुष (इंजील और क़ुरान के अनुसार ख़ुदा ने आदम को पैदा किया लेकिन वे शैतान के बहकावे में आकर गुनाह कर बैठे और जन्नत से निकाल दिये गए। आदम की संतान आदमी कहलायी)।

४ **क़ामत** – आकार।

दराज़ी – लम्बाई।

तुर्रः-ए-पुर पेच-ओ-ख़म का पेच-ओ-ख़म – (तुर्रः–अलक) बल खाये हुए बालों का बल।

६ **दौर** – युग, ज़माना, काल।

मंसूब – संबधित।

बादः आशामी – शराब पीना, मदिरापान।

जाम-ए-जम – जमशेद का मधुपात्र (देखीये ग़ज़ल १०१ शे'र ८)।

७ **तवक़्क़ो'अ** – आशा, उम्मीद।

ख़स्तगी – घायलपन।

दाद पाना – न्याय पाना, प्रशंसा पाना, संवेदना पाना।

ख़स्तः-ए-तेग़-ए-सितम – अत्याचार की तलवार के घायल।

८ **मैख़ानः** – मदिरालय।

वा'अिज़ – धर्मोपदेशक।

२२१

१ **कोह** – पर्वत।

बार-ए-ख़ातिर – मन का बोझ, असहनीय।

सदा – पुकार, आवाज़।

शरार-ए-जस्तः – उड़ती हुई चिनगारी।

(आवाज़ पहाड़ से टकराकर वापस आजाती है और चिनगारी पत्थर के सीने से उड़ जाती है। इन उपमाओं से ग़ालिब ने मनुष्य की बेबसी का वर्णन किया है)।

२ **बैज़ः आसा** – अंडे की तरह।

तंग – सकीर्ण।

बाल-ओ-पर – पंख।

कुंज-ए-क़फ़स – पिंजरे का कोना।

अज़ सर-ए-नौ – नये सिरे से।

रिहा होना – मुक्त होना, क़ैद से छुटना।

२२२

१ **ब ज़ौक़-ए-ग़फ़्लत-ए-साक़ी** – साक़ी की उपेक्षा के कारण।

हलाक – वधित।

मौज-ए-शराब – मदिरा की तरंग।

मिश़ः-ए-ख़्वाबनाक – नींद भरी पलकें।

(साक़ी उपेक्षा कर रहा है, शराब की लहरें सोई हुई हैं, इसलिए पीनेवाले मस्त नहीं हो सकते, यानी मस्ती साक़ी की उपेक्षा पर मर मिटी है)।

२ **जुज़ ज़ख़्म-ए-तेग़-ए-नाज़** – रूप-गर्व की तलवार के ज़ख़्म के सिवा।

आरज़ू – कामना।

जेब-ए-ख़याल – कल्पना का गरीबान।

चाक – विदीर्ण।

(ज़ख़्म की कामना से स्वयं कल्पना ज़ख़्मी है)

३ **जोश-ए-जुनूँ** – उन्माद का आवेग।

सहरा – जंगल, रेगिस्तान।

यक मुश्त-ए-ख़ाक – मुट्ठीभर मिट्टी।

२२३

१ **लब-ए-'ईसा** – ईसा के होंट (जिनकी फूँक से मुर्दे जी उठते थे)।

जुंबिश (जुम्बिश) – कम्पन।

गहवारः जुंबानी – पालना हिलाना।

क़यामत – (सामान्य अर्थ है प्रलय किन्तु यहाँ नींद के साथ प्रयुक्त हुआ है इसलिए अर्थ है गहन)।

कुश्तः-ए-ला'ल-ए-बुताँ – मा'शूक़ के पद्मराग जैसे अधरों के मारे हुए।

ख़्वाब-ए-संगीं – पत्थर की तरह भारी नींद।

२२४

१ **आमद-ए-सैलाब** – जलप्लावन का आगमन।

तूफ़ान-ए-सदा-ए-आब – पानी की आवाज़ का तूफ़ान।

नक़्श-ए-पा – पदचिह्न।

जादः – पथ, रास्ता।

२ **बज़्म-ए-मै** – शराब की महफ़िल।

वहशतकदः – पागलखाना।

चश्म-ए-मस्त – मस्त आँख, उन्मद नयन।

शीशे (शीशः) – मधुपात्र, शराब की बोतल।

नब्ज़-ए-परी – परी की नब्ज़।

पिन्हाँ – निहित।

मौज-ए-बादः – शराब की लहर।

२२५

१ **तमाशाइ-ए-नैरंग-ए-तमन्ना** – कामना के इन्द्रजाल का तमाशा देखनेवाला।

बर आवे – पूरा हो।

२२६

१ दम-ए-तहरीर – लिखते समय।
शब्हा-ए-हिज्रां – विरह की रातें।

२२७

१ हुजूम-ए-नालः – आर्त्तनाद का समूह।
हैरत – विस्मय है।
'आजिज़-ए-'अर्ज़-ए-यक अफ़्गाँ – एक आह करने से भी मजबूर।
रेशः-ए-सद् नैसिताँ – नरकुल के सैकड़ों रेशे।
ख़स ब दन्दाँ – दाँतों में तिनके लिये हुए।
(सीने में मौन आर्त्तनादों का ऐसा समूह है जैसे खामोशी के मुँह में सैकड़ों बाँसुरियाँ दाँतों के बीच तिनके बन गई हों)।
२ तकल्लुफ़ बर तरफ़ – संकोच और आडम्बर से अलग।
जाँसिताँ तर – अधिक जानलेवा।
लुत्फ़-ए-बदख़ूयाँ – दुःशील मा'शूक़ों की कृपा।
निगाह-ए-बेहिजाब-ए-नाज़ – रूप की बेझिझक दृष्टि (बेहिजाब–जिसपर पर्दा न हो, जिसमें लज्जा न हो)
तेग़-ए-तेज़-ए-'उरियाँ – तेज़ और नंगी तलवार।
३ कस्रत-ए-ग़म – दुख की अधिकता।
तलफ़ – नष्ट।
कैफ़ियत-ए-शादी – खुशी की अवस्था।
सुब्ह-ए-'ईद – ईद की सुबह।
बद्तर अज़ चाक-ए-गरीबाँ – फटे हुए गरीबान से भी अधिक बुरी (चाक-ए-गरीबाँ दुखमय और आनन्दमय दोनों प्रकार के उन्मादों का प्रतीक है)।
४ दिल-ओ-दीं – मन और धर्म।
साग़र – मधुपात्र।
मता'-ए-दस्त गरदाँ – हाथों-हाथ घूमनेवाली सम्पत्ति।
(किसी-किसी संकलन में दस्त-ए-गरदाँ लिखा है। मैं दस्त गरदाँ को बेहतर समझता हूँ, मगर मैं इसकी तहक़ीक़ नहीं कर सका हूँ)।
५ आग़ोश-ए-बला – विपत्ति की गोद।
परवरिश देना – पालना-पोसना, लालन-पालन करना।
चराग़-ए-रौशन – प्रज्वलित दीप।
क़ुल्ज़ुम-ए-सरसर – आँधियों का सागर।
मरजाँ – मूँगा।

२२८

१ तमाशा अदा – देखने योग्य अदा (अदा–हाव-भाव)
निगाह – दृष्टि।
सुर्मः सा – सुर्मा लगाये हुए।
२ फ़िशार-ए-तंगि-ए-ख़ल्वत – एकांत संकीर्णता का दबाव।
शबनम – ओस।
सबा – हवा, समीर, पवन।
ग़ुंचे (ग़ुंचः) – कली।
(हवा जब कली के सीने में पहुँची तो कली ने उसको प्यार से लिपटाकर दबाया और हवा को लज्जा से पसीना आगया जिसका नाम ओस है)
३ सीनः-ए-'आशिक़ – प्रेमी का सीना।
आब-ए-तेग़-ए-निगाह – चितवन की तलवार की धार।
ज़ख़्म-ए-रौज़न-ए-दर – दरवाज़े का ज़ख़्म।
(दृष्टि जहाँ से सीने में उतरी है उसे दरवाज़ा कहा है)

२२९

१ जिस जा – जिस जगह।
नसीम – हवा, समीर पवन।
शानः कश-ए-ज़ुल्फ़-ए-यार है – (शानः कशी–कंघी करना) मा'शूक़ की ज़ुल्फ़ों में कंघी कर रही है।
नाफ़ः – मृग-नाभि (मा'शूक़ के बालों से उड़ती हुई सुगंध)
दिमाग़-ए-आहू-ए-दश्त-ए-ततार – (दिमाग़ के बाद इज़ाफ़त का ए भूल से छूट गया है) ततार (मध्य एशिया का वह प्रदेश जिसके हिरन अपनी मृग-नाभि के लिए प्रसिद्ध हैं) के हिरन का दिमाग़।
२ सुराग़-ए-जल्वः – छवि की खोज, दर्शनों की तलाश।
हैरत – विस्मय।
फ़र्श-ए-शश जिहत-ए-इन्तिज़ार – (शश जिहत–छः दिशाएँ, जगत, संसार) इन्तिज़ार के संसार का फ़र्श।
३ ज़र्रः ज़र्रः – प्रत्येक कण।
तंगि-ए-जा – स्थान की संकीर्णता।
ग़ुबार-ए-शौक़ – लालसा की धूल।
दाम – जाल।
वुस'अत-ए-सह्रा – मरुभूमि का विस्तार।
४ मुद्द'ई – वादी।
दीदः – आँख।
मुद्द'आ 'अलैह – प्रतिवादी।
नज़्ज़ारे (नज़्ज़ारः) – अवलोकन।
रू ब कार है – सुना जा रहा है।
५ शबनम – ओस।
आइनः-ए-बर्ग-ए-गुल – (आईनः लिखने से बे'र छंद से गिर जाता है) फूल की पंखुड़ी का दर्पण।
आब – पानी।
'अन्दलीब – बुलबुल।
वक़्त-ए-विदा'-ए-बहार – बहार की विदा का समय।
६ पच – पक्ष (पच करना उर्दू का मुहावरा है। यानी पक्ष लेना या पक्षपात करना, पच आ पड़ना भी इसी से बना है)।
वादः-ए-दिलदार – मा'शूक़ का वादा।
७ सू-ए-वादि-ए-मजनूँ – मजनूँ के जंगल की ओर।
८ यक कफ़-ए-ख़स – मुट्ठी भर तिनके।
बहर-ए-आशियाँ – घोंसले के लिए।
तूफ़ान........बहार – बहार के मौसम के आने का तूफ़ान।

९ बे दिमाग़ – वे शौक़, जो सैर और आमोद-प्रमोद से घबराता हो।
आइनः – दर्पण (यहाँ अर्थ है हृदय)।
तिम्सालदार – चित्रों से भरा हुआ।
(देखिये ग़ज़ल ५१, शे'र ४)।

१० ग़फ़लत – उपेक्षा।
कफ़ील-ए-'उम्र – आयु-पोषक।
ज़ामिन-ए-नशात – हर्ष का ज़मानतदार।
मर्ग-ए-नागहाँ – आकस्मिक मृत्यु, अचानक आजानेवाली मौत।

२३०

२ हस्रत – अपूर्ण-कामना।
बज़्म-ए-ख़याल – कल्पना की महफ़िल (दिल)।
गुलदस्तः-ए-निगाह – निगाह का गुलदस्ता।
सुवैदा – दिल का काला दाग़।
(भाष्यकारों ने इस शे'र के अलग-अलग अर्थ दिये हैं किंतु यह मेरी समझ से बाहर है। अधिक से अधिक यह अर्थ निकाला जासकता है कि तेरे दर्शनों की अपूर्ण-कामना से दिल में दाग़ पड़ गया है और निगाह इसलिए गुलदस्ता बनी हुई है कि उसमें तेरी सूरत बसी हुई है)

३ गोश-ए-महब्बत में – प्रेम (प्रेमी) के कान में।
अफ़्सून-ए-इन्तिज़ार – इन्तिज़ार का जादू।
तमन्ना – कामना।

४ हुजूम-ए-दर्द-ए-ग़रीबी – (ग़रीब का शब्द अब निर्धन के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है, वैसे इसका अर्थ है अजनबी, परदेशी) दर ब दर मारे-मारे फिरने के दर्द की अधिकता।
मुश्त-ए-ख़ाक – मुट्ठी भर मिट्टी।
सहरा – मरुभूमि, रेगिस्तान।

५ चश्म-ए-तर – आँसुओं से भरी आँख।
हस्रत-ए-दीदार – दर्शन की लालसा।
शौक़-ए-'अिनाँ गुसेख़्तः – बेलगाम शौक़, अत्यधिक तीव्र लालसा।

६ दरकार है – चाहिये।
शिगुफ़्तन-ए-गुलहा-ए-'अैश को – ऐश्वर्य के फूलों के खिलने के लिए।
सुब्ह-ए-बहार – बहार की सुबह।
पंबः-ए-मीना – सुराधानी के मुँह पर रखी हुई रुई।

७ वा'अिज़ – धर्मोपदेशक।

२३१

१ शबनम ब गुल-ए-लालः – लाले के फूल पर ओस की बूँदें।
न ख़ाली ज़ि अदा है – अदा (इशारे) से खाली नहीं है, अकारण नहीं है।
दाग़-ए-दिल-ए-बे दर्द – उस दिल का दाग़ जिसमें दर्द न हो (ग़ालिब ने शाब्दिक अर्थ लिये हैं, वैसे उर्दू में बेदर्द ज़ालिम को कहते हैं)
नज़रगाह-ए-हया – लज्जा के देखने की चीज़, लज्जाजनक।

२ दिल......दीदार – अवलोकन की अपूर्ण अभिलाषा से खून होजाने वाला दिल।

आईनः........है – ऐसे बदमस्त मा'शूक़ के हाथ का दर्पण जिसने मेंहदी रचा रखी है।

३ हवस-ए-शो'लः – शो'ले की लालसा।
अफ़सुर्दगि-ए-दिल – मन की उदासी।

४ तिम्साल – तसवीर, चित्र, आकार।
बसद ज़ौक़ – बड़े चाव के साथ।
ब अन्दाज़-ए-गुल – फूल की तरह।
आग़ोश कुशा – गोद खोले हुए।

५ क़ुम्री – एक गानेवाली चिड़िया।
कफ़-ए-ख़ाकिस्तर – मुट्ठीभर राख।
ओ – और।
क़फ़स-ए-रंग – रंगों का पिंजरा (क़ैदखाना)।
अय नालः – आर्त्तनाद के सिवा।
निशान-ए-जिगर-ए-सोख़्तः – जले हुए जिगर का निशान।
[इस शे'र का अर्थ किसी की समझ में नहीं आता था, ग़ालिब ने कहा कि 'अय' को जुज़ (सिवा) पढ़ो, अर्थ समझ में आ जायगा। लेकिन यह अब भी समझ में नहीं आया कि ग़ालिब ने जुज़ का शब्द छोड़कर अय क्यों इस्तेमाल किया है, जबतक कि हम यह मान न लें कि 'अय नालः' के बाद 'तेरे सिवा' के शब्द छिपे हुए हैं]

६ ख़ू – स्वभाव, आदत।
अफ़सुर्दः – उदास, ग़मगीन।
वह्शत-ए-दिल – मन का उन्माद, व्याकुलता, बेक़रारी।
मा'शूक़ि-ओ-बेहौसलगी – मा'शूक़ होते हुए यह रूखापन (नाज़ और अदा की कमी)।
तुरफ़ः बला – नयी मुसीबत।
(ग़ालिब को शोख और चंचल मा'शूक़ पसंद है। देखिये ग़ज़ल १८९)

७ मजबूरि........उल्फ़त – मजबूरी की हालत में मुहब्बत का दावा करना।
दस्त-ए-तह-ए-संग आमदः – पत्थर के नीचे आया हुआ हाथ।
पैमान-ए-वफ़ा – प्रेम-निर्वाह की प्रतिज्ञा।
(देखिये ग़ज़ल १९२, शे'र ९)

८ हाल-ए-शहीदान-ए-गुज़श्तः – बीते हुए ज़मानों के शहीदों का हाल।
तेग़-ए-सितम – अत्याचार की तलवार।
आईनः-ए-तस्वीर नुमा – चित्रों से भरा हुआ दर्पण।

९ परतव-ए-ख़ुर्शीद-ए-जहाँ ताब – संसार को चमका देनेवाले सूरज का प्रकाश।

१० नाकरदः गुनाह – न किये हुए गुनाह, वो पाप जिनके करने की लालसा रह गई।
हस्रत – अपूर्ण कामना।
दाद – न्याय, प्रशंसा।
यारब – अय ख़ुदा।
करदः गुनाह – किये हुए गुनाह।

११ बेगानगि-ए-ख़ल्क़ – दुनियावालों का परायापन (विरोध)।
बेदिल – निराश, मायूस।

२३२

१ **मंज़ूर** – स्वीकृत।

शक्ल – रूप।

तजल्ली – ब्रह्म-ज्योति।

नूर – प्रकाश, आभा।

क़द-ओ-रुख़ – आकार और मुखड़ा।

ज़ुहूर – प्रकटन, आविर्भाव।

२ **ख़ूँ चकाँ** – रक्त-रंजित।

हूर – अप्सरा।

३ **वा'इज़** – धर्मोपदेशक।

शराब-ए-तुहूर – पवित्र मदिरा, वह शराब जो जन्नत में मिलेगी।

४ **हश्र** – क़यामत, प्रलय।

गोया – जैसे कि, मानों।

सूर – दुन्दुभी (प्रलय के दिन अंतिम न्याय के लिए तमाम मुर्दे क़ब्र से उठाये जायेंगे, इसके लिए सूर फूँका जायगा जिसकी आवाज़ से सब जाग उठेंगे)।

५ **आमद** – आगमन।

नग़्मःसंज – गीत गाता हुआ, गायनरत।

तुयूर – चिड़ियाँ।

६ **गो** – यद्यपि।

बुत – मूर्त्ति, प्रतिमा।

निस्बत – संबंध।

७ **फ़र्ज़** – आवश्यक।

कोह-ए-तूर – एक पर्वत का नाम जिसपर मूसा पैग़ंबर ख़ुदा की ज्योति देखने गये थे। वहाँ यह आवाज़ आयी थी कि तुम इस ज्योति को नहीं देख सकते)।

८ **कलाम** – वार्त्तालाप, कथन।

९ **सवाब** – पुन्य।

नज़्र – भेंट।

२३३

१ **दिल-ए-नाकाम** – असफल मन।

मै-ए-गुलफ़ाम – गुलाबी मदिरा।

२ **हया** – लज्जा।

दुर्द-ए-तह-ए-जाम – मधुपात्र की तली में बैठी हुई तलछट।

३ **सय्याद** – शिकारी।

कमीं – घात।

गोशे (गोशः) – कोना।

क़फ़स – पिंजरा।

४ **ज़ोह्द** – संयम, निस्पृहता।

रियाई – ढोंगी, पाखंडी।

पादाश-ए-'अमल – कर्म का प्रतिफल, कर्म-फल।

तम'-ए-ख़ाम – लालच (यह लालच कि जन्नत में हूरें मिलेंगी, देखिये ग़ज़ल ११९, शे'र २)।

५ **अह्ल-ए-ख़िरद** – बुद्धिमान, अक़्लवाले।

रविश-ए-ख़ास – विशेष पद्धति, विशेष आचरण।

नाज़ाँ – गर्वित।

पा बस्तगि-ए-रस्म-ओ-रह्-ए-'आम – सामान्य रीति रिवाज का बंधन।

६ **ज़मज़म** – का'बे के पास एक पवित्र कुआँ जिसका पानी हज-यात्री पीते हैं।

तौफ़-ए-हरम – का'बे का तवाफ़, का'बे की परिक्रमा।

आलूदः ब मै – शराब से भीगा हुआ, मदिरा-सिक्त।

जामः-ए-एह्राम – का'बे की परिक्रमा करते समय जो वस्त्र हाजी शरीर पर लपेटते हैं।

७ **क़ेह्र** – महान विपत्ति।

इब्राम – ज़िद, आग्रह।

८ **मर्ग** – मौत, मृत्यु।

२३४

(हुये अशुद्ध है, हुए शुद्ध)

१ **मुद्दत** – समय, अधिक समय, दीर्घकाल।

जोश-ए-क़दह – मदिरा का उबाल, प्यालों की अधिकता, प्यालों की गर्दिश, प्यालों का उत्सव।

बज़्म – महफ़िल।

चराग़ाँ – दीपोत्सव (शराब को आतश-ए-सैयाल, पिघली हुई आग, कहते हैं क्योंकि उसका रंग लाल है)।

२ **जिगर-ए-लख़्त लख़्त** – टुकड़े-टुकड़े जिगर।

'अरसः – मुद्दत, लम्बा समय।

दा'वत-ए-मिज़्गाँ – मा'शूक़ की पलकों की दावत।

३ **वज़्'-ए-एहतियात** – सावधानी की रीति।

दम – साँस।

चाक – विदीर्ण।

४ **गर्म-ए-नालःहा-ए-शरर बार** – आग बरसानेवाले आर्त्तनाद में लीन।

नफ़स – साँस।

सैर-ए-चराग़ाँ – दीपोत्सव की सैर।

५ **पुरसिश-ए-जराहत-ए-दिल** – दिल के ज़ख़्म का हाल पूछना।

सामान-ए-सद हज़ार नमकदाँ – लाखों नमकदान लिये हुए।

६ **ख़ामः-ए-मिज़्गाँ** – पलकों की लेखनी।

बख़ून-ए-दिल – दिल के ख़ून से।

साज़-ए-चमन तराज़ि-ए-दामाँ – दामन पर फूलों के चमन (उद्यान) खिलाने का सामान।

७ **बाहम दिगर** – आपस में।

दिल-ओ-दीदः – हृदय और नयन।

रक़ीब – प्रतिद्वंदी।

नज़्ज़ारः-ओ-ख़याल – अवलोकन और कल्पना।

८ **तवाफ़-ए-कू-ए-मलामत** – धिक्कार की गली की परिक्रमा, मा'शूक़ की गली के चक्कर।

पिन्दार – अहं।
सनमकदः – प्रतिमाशाला।
वीराँ – उजाड़, निर्जन।
९ **शौक़** – चाव।
तलब – माँग।
'अर्ज़-ए-मता'-ए-'अक़्ल-ओ-दिल-ओ-जाँ – बुद्धि, मन और प्राण की संपत्ति का समर्पण।
१० **गुल-ओ-लालः** – गुलाब और लालः, हर तरह के फूल।
सद गुलसिताँ निगाह – ऐसी दृष्टि जिसमें सैकड़ों फुलवारियों का रंग बसा हुआ है।
११ **नामः-ए-दिलदार** – मा'शूक़ का पत्र।
नज़्र-ए-दिलफ़रेबि-ए-'उन्वाँ (नज़र अशुद्ध है) – शीर्षक की सुन्दरता को भेंट।
१२ **लब-ए-बाम** – छत के किनारे, छज्जे पर।
हवस – तीव्र लालसा, ललक।
ज़ुल्फ़-ए-सियाह – कजरारी अलकें।
रुख़ – कपोल, गाल।
परीशाँ किये हुए – बिखराये हुए।
१३ **मुक़ाबिल** – सन्मुख।
आरज़ू – कामना।
दश्नः-ए-मिश़गाँ – पलकों के नश्तर।
१४ **नौबहार-ए-नाज़** – सौन्दर्य-अभिमान की नयी बहार में डूबा हुआ आकार, नव-यौवन के रंगों से लहलहाता रूप।
फ़रोग़-ए-मै – शराब की दमक, मदिराभा।
गुलिस्ताँ – फूल ही फूल।
१५ **दर** – द्वार।
ज़ेर-ए-बार-ए-मिन्नत-ए-दरबाँ – दरबार के आभार के भार से दबा हुआ।
१६ **फ़ुर्सत** – अवकाश।
तसव्वुर-ए-जानाँ – मा'शूक़ की कल्पना।
१७ **जोश-ए-अश्क** – आँसुओं का उबाल, अश्रुप्लावन।
तहय्यः-ए-तूफ़ाँ – तूफ़ान का दृढ़ निश्चय।
(इसकी गिनती ग़ालिब की श्रेष्ठतम ग़ज़लों में होती है।)

२३५

१ **नवेद-ए-अम्न** – शांति का शुभसमाचार।
बेदाद-ए-दोस्त – मित्र का अन्याय।
तर्ज़-ए-सितम – अत्याचार की रीति।
२ **मिश़ः-ए-यार** – मा'शूक़ की पलकें।
तश्नः-ए-ख़ूँ – ख़ून की प्यासी।
मिश़गान-ए-ख़ूँ फ़िशाँ – ख़ून टपकानेवाली पलकें।
३ **रूशनास-ए-ख़ल्क़** – दुनियावालों से परिचित।
ख़िज़्र – एक पैग़ंबर जो जीवित हैं पर दिखलायी नहीं देते।
'उम्र-ए-जाविदाँ – शाश्वत जीवन, अनंत जीवन।
४ **बला** – आपत्ति, मुसीबत।
मुब्तिला-ए-आफ़त-ए-रश्क – ईर्ष्या की मुसीबत में गिरफ़्तार।
बला-ए-जाँ – जानलेवा, प्राणों का संकट।
अदा – हाव-भाव।
इक जहाँ – सारी दुनिया।
५ **फ़लक** – आकाश।
दराज़ दस्ति-ए-क़ातिल – क़ातिल का ज़ुल्म (दराज़ दस्ती के शब्दार्थ हैं हाथ लम्बा करना)।
इम्तिहाँ – परीक्षा।
६ **मिसाल** – उदाहरण।
मुर्ग़-ए-असीर – बन्दी पक्षी।
क़फ़स – पिंजरा।
फ़राहम – प्राप्त, इकठ्ठा, जमा, एकत्र।
ख़स – घास के तिनके, तृण।
आशियाँ – घोंसला, नीड़।
७ **गदा** – भिखारी।
शामत – दुर्दशा।
पास्बाँ – प्रहरी, पहरेदार।
क़दम लेना – पाँव पड़ना।
८ **बक़द्र-ए-शौक़** – चाव के परिमाण में।
ज़र्फ़-ए-तंगना-ए-ग़ज़ल – ग़ज़ल का मैदान, ग़ज़ल की सँकरी गली।
वुस'अत – विस्तार।
बयाँ – बयान, वर्णन।
९ **ख़ल्क़** – संसारवाले।
ता – ताकि।
'ऐश – ऐश्वर्य।
तजम्मुल हुसैन ख़ाँ – एक रईस का नाम जो ग़ालिब के मित्र थे।
१० **वार-ए-ख़ुदाया** – अय ख़ुदा, या इलाही।
नुत्क़ – वाक्‌शक्ति, वाणी।
बोसे – चुम्बन।
११ **नसीर-ओ-दौलत-ओ-दीं** – धर्म और सल्तनत के सहायक।
मु'ईन-ए-मिल्लत-ओ-मुल्क – देश और राष्ट्र के सहायक।
चर्ख़-ए-बरीं – ऊँचा गगन।
आस्ताँ – चौखट।
१२ **ज़मानः** – संसार।
'अह्द – युग।
मह्व-ए-आराइश – शृंगार में लीन।
१३ **वरक़** – पन्ना, पृष्ठ।
तमाम – समाप्त।
मद्ह – प्रशंसा, तारीफ़।
सफ़ीनः – कश्ती, नाव (काव्य ग्रंथ)।
बह्र-ए-बेकराँ – तटहीन सागर।
१४ **अदा-ए-ख़ास** – नयी शैली।
नुक्तः सरा होना – बारीक और ख़ूबसूरत बात कहना, कविता करना।
सला-ए-'आम – (सलाये आम हमारी लिखावट के अनुसार अशुद्ध है) सबको निमंत्रण।
यारान-ए-नुक्तःदाँ – गुणग्राही जन।

ज़मीमः (परीशिष्ट)

१

१ नादानिस्तः – अनजानेपन में।
ग़ैर – प्रतिद्वंदी, शत्रु।
वफ़ादारी – वफ़ादारी में, प्रेम-निर्वाह में।
तक़रीर – भाषण, वार्त्तालाप।

२

१ हमनशीं – साथी, सखा, मित्र।
२ सब्ज़ः ज़ारहा-ए-मुतर्रः – हरी दूब के लहलहाते मैदान।
नाज़नीं – रूपगर्विता, कोमलांगी।
बुतान-ए-ख़ुदआरा – अपने रूप से आप सजे हुए मा'शूक़।
३ सब्र आज़मा – धैर्य की परीक्षा करनेवाले।
हफ़ नज़र – (हफ़–मेहमानी करना) आँखों को दर्शन का आमंत्रण देनेवाली।
ताक़त रुबा – शक्ति छीन लेनेवाला।
४ मेवःहा-ए-ताज़ः-ओ-शीरीं – ताज़े और मीठे मेवे।
बादःहा-ए-नाब-ओ-गवारा – मज़ेदार शराबें।

३

१ अह्वाल-ए-दिल-ए-ज़ार – दुखी मन का हाल।
हया – लज्जा।
माने'-ए-इज़्हार – प्रकटन से रोकनेवाली।
२ तक़रीर – वार्त्तालाप।
अदब – शिष्टाचार।
वाक़िफ़-ए-असरार – मर्मज्ञ।
३ हस्ती – अस्तित्व, जीवन।
बेज़ार – नाख़ुश, असंतुष्ट।
४ अह्वाल-ए-गिरफ़्तारि-ए-दिल – दिल की गिरफ़्तारी का हाल।
ग़मख़्वार – दुख बँटानेवाला, सहानुभूतिकर्त्ता।
५ दुश्मन-ए-जानी – प्राणों का शत्रु।
६ ग़म्माज़ – चुग़लख़ोर।
गोश – कान।
दर पस-ए-दीवार – दीवार के पीछे।
७ हस्ब-ए-हाल – अपनी दशा के अनुसार।
अश'आर – शे'र का बहुवचन।

४

१ आर्मीदः – आराम से।
दश्त-ए-ग़म – दुखों का क्षेत्र।
आहू-ए-सय्याद दीदः – हिरन जिसे शिकारी से पाला पड़ चुका हो।
२ दर्दमन्द – दुखी।
जब्र – मजबूरी, असामर्थ्य।
इख़्तियार – सामर्थ्य।
गह – कभी।
नालः-ए-कशीदः – खिंचा हुआ आर्त्तनाद।
अश्क-ए-चकीदः – टपका हुआ आँसू।
३ जाँ – जान, प्राण।
लब – होंठ।
शीरीं – मीठा।
दहन – मुँह।
तल्ख़ि-ए-ग़म-ए-हिजराँ चशीदः – विरह के दुख के कड़ुवेपन को चखे हुए।
४ सुब्हः – तसबीह, सुमिरन।
'अिलाक़ः – संबंध।
साग़र – मधुपात्र।
राब्तः (राबितः) – संबंध।
मा'रिज़-ए-मिसाल – उदाहरण की दुनिया में।
दस्त-ए-बुरीदः – कटा हुआ हाथ।
५ ख़ाकसार – नम्र, विनीत।
दानः-ए-फ़ुतादः – गिरा हुआ दाना।
दाम चीदः – जिसे जाल ने समेट लिया हो।
६ क़द्र-ओ-मंज़िलत – आदर और सम्मान।
यूसुफ़-ए-बक़ीमत-ए-अव्वल ख़रीदः – वह यूसुफ़ जिसे पहली बोली पर ख़रीद लिया गया हो।
(यूसुफ़ एक पैग़ंबर जो मिस्र के बाज़ार में ग़ुलाम की तरह बेचे गए थे)
७ कलाम-ए-नग़्ज़ – उत्तम काव्य।
नाशुनीदः (नाशनीदः) – जिसे किसी ने न सुना हो।
८ अह्ल-ए-वर'अ – निस्पृह और संयमी लोग।
हल्क़े (हल्क़ः) – टोली, गिरोह।
'आसी – पापी, गुनहगार।
फ़िरक़े (फ़िरक़ः) – सम्प्रदाय, वर्ग।
बरगुज़ीदः – सदात्मा।
९ सग गज़ीदः – कुत्ते का काटा हुआ।
मर्दुम गज़ीदः – आदमी का काटा हुआ।

५

१ मज्लिस-ए-शम्'अ 'अिज़ाराँ – दीपक की तरह दमकते कपोलोंवाले मा'शूक़ों की महफ़िल।
शम्'अ साँ – दीपक की तरह।
तह-ए-दामान-ए-सबा – हवा के दामन के नीचे।
२ जादः-ए-रह – रास्ता, पथ।
रिश्तः-ए-गौहर – मोतियों की लड़ी।
गुज़रगह – रास्ता, पथ।
आबलः पा – जिसके पैरों में छाले पड़े हों।
३ सरगिराँ – अप्रसन्न, रुष्ट।
सुबुक रौ – शीघ्रगामी, मृदुलगामी।

बयक जुंबिश-ए-लब – होठों के एक कम्पन के साथ।
मिस्ल-ए-सदा – आवाज़ की तरह।

६

१ **मुश्ताक़-ए-जफ़ा** – अत्याचार का अभिलाषी।
बेदाद – अन्याय।
सिवा – अधिक, ज़्यादा।

२ **मर्ग** – मृत्यु।
ग़ैरत-ए-माह – चन्द्रमा को लजा देनेवाला रूप।
हवस पेशः – प्रेमरहित लोलुप।

३ **बुत** – प्रतिभा, मूर्त्ति, मा'शूक़।
पिन्दार-ए-ख़ुदाई – ख़ुदा होने का घमंड।
ख़ुदावन्द – मालिक, स्वामी।

४ **हूर** – अप्सरा।
शेवः-ओ-अन्दाज़-ओ-अदा – व्यवहार और हाव-भाव।

५ **कूचे (कूचः)** – गली।
माइल – प्रवृत्त, अनुरक्त।
दिल-ए-मुज़्तर – व्याकुल हृदय।
क़िब्लः नुमा – क़िब्ले (का'बे) की राह दिखानेवाला।

६ **वा'इज़** – धर्मोपदेशक।
ख़ुल्द – जन्नत, स्वर्ग।
आब-ओ-हवा – जल-वायु।

७ **फ़िरदौस** – स्वर्ग।
दोज़ख़ – नरक।
फ़ज़ा – वातावरण।

८ **आब-ए-बक़ा** – अमृत।

९ **'अलाई** – 'अलाउद्दीन अहमद ख़ाँ 'अलाई, कवि और ग़ालिब के मित्र।
बेदादगर-ए-रंज फ़िज़ा – दुख बढ़ानेवाला अन्यायी।

७

१ **ग़नीमत** – संतोष की बात।
बउम्मीद – आशा में।
दाद – न्याय।
रोज़-ए-जज़ा – कर्मफल पाने का दिन, क़यामत, प्रलय।

२ **चारःगरी** – उपचार।
तमन्ना-ए-दवा – दवा की कामना।

४ **शोहरः-ए-तेज़ि-ए-शमशीर-ए-क़ज़ा** – मृत्यु की तलवार की तेज़ी की प्रसिद्धि।

८

१ **अब्र** – बादल।
बज़्म-ए-तरब – ख़ुशी की महफ़िल।
आमादः करो – तैयार करो, सजाओ (आमादः–तत्पर)
बर्क़ – बिजली।

९

१ **तस्वीर-ए-बुताँ** – सुन्दरियों के चित्र।
ख़ुतूत – ख़त का बहुवचन, पत्र (ख़त का अर्थ रेखा भी है)

११

दम-ए-वापसीं – अंतिम साँस।
बर सर-ए-राह – राह में है, आ जा रहा है।
'अज़ीज़ो – दोस्तो, मित्रो।
(मरने से पहले यह शे'र ग़ालिब की ज़बान पर था)

१२

१ **तमन्ना** – कामना।
यारब – अय ख़ुदा।
दश्त-ए-इम्काँ – संभावना-क्षेत्र, संसार।
नक़्श-ए-पा – पदचिह्न।

१३

१ **आसूदगी** – संतुष्टि।
मुद्'आ-ए-रंज-ए-बेताबी – व्याकुलता के दुखों का उद्देश्य।
निसार-ए-गर्दिश-ए-पैमानः-ए-मै – मदिरापात्र की गर्दिश (परिभ्रमण) पर निछावर।
रोज़गार – युग (जीवन)।

१४

१ **'अिज्ज़ ('अज्ज़)** – नम्रता।
ओ – और।
बेसामानि-ए-फ़िर'औन – फ़िरऔन की दरिद्रता।
फ़िरऔन प्राचीन मिस्र के बादशाहों की उपाधि थी। मूसा पैग़ंबर ने एक फ़िरऔन को जिसने ख़ुदा होने का दावा किया था, पराजित किया था। उर्दू में फ़िरऔन का शब्द अत्याचारी और घमंडी के लिए प्रयुक्त होता है। इसीसे फ़िरऔन-ए-बेसामाँ, दरिद्र फ़िरऔन, बना है जिसका अर्थ है ऐसा घमंडी जिसके पास फ़िरऔन की सल्तनत नहीं है लेकिन फ़िरऔन की बददिमाग़ी है)
तौअम – जुड़वाँ, यमज, यमल।
बन्दगी – वन्दना।

१५

१ **वहशत कदः-ए-बज़्म-ए-जहाँ** – (वहशत–घबराहट, भय, सुनसानपन, उन्माद)
ज्यों शम्'अ – दीपक की तरह।
शो'लः-ए-'अिश्क़ – प्रेम-ज्वाला।
सर-ओ-सामाँ – उपकरण, साधन।

१६

१ बसूरत तकल्लुफ़ – रूप में कृत्रिमता।
बमा'नी तअस्सुफ़ – अर्थ (यथार्थ) में पछतावा।
तबस्सुम – मुस्कान, स्मिति।
पशमुर्दगाँ – (पशमुर्दः का बहुवचन) मालिनमुख।

१७

१ खुद परस्ती – आत्मश्लाघा, घमंड।
बाहम दिगर – आपस में।
ना आश्ना – अपरिचित।
बेकसी – असहायता।
शरीक – साथी।
आश्ना – परिचित, दोस्त।

२ रब्त-ए-यक शीराज़ः-ए-वहशत – उन्माद के विच्छिन्न अंशों की एकत्रता का संबंधसूत्र।
अज्ज़ा-ए-बहार – बहार के अंश।
सब्ज़ः – हरियाली, दूब, घास।
बेगानः – पराया।
सबा – समीर।
आवारः – निरुद्देश्य भ्रमणशील।
गुल – फूल।

१८

१ सू-ए-चमन – बाग़ की ओर।
गुलिस्ताँ – उद्यान।
हवादार – शुभचिंतक।

१९

१ अज़ आँजा – उस जगह से।
हसरत कश-ए-यार – मित्र से मिलने के अभिलाषी।
रक़ीब-ए-तमन्ना-ए-दीदार – दर्शन की कामना के प्रतिद्वंदी।

२ तमाशा-ए-गुल्शन – बाग़ का तमाशा (अवलोकन, दर्शन)
तमन्ना-ए-चीदन – फूल चुनने की कामना।
बहार आफ़रीना – अय बहार के सृष्टिकार (खुदा)
गुनहगार – अपराधी।

३ ज़ौक़-ए-गरीबाँ – गरीबान का चाव।
परवा-ए-दामाँ – दामन की परवाह।
निगह आश्ना-ए-गुल-ओ-ख़ार – फूलों औ काँटों की निगाह पहचानने वाले।

४ शिकवः – शिकायत, उलाहना, उपालंभ।
कुफ़्र – अनास्था, अधर्म।
दु'आ – प्रार्थना।
ना सिपासी – नाशुकी, अकृतज्ञता।
हुजूम-ए-तमन्ना – कामनाओं का समूह।

२०

१ हल्क़ः-ए-काकुल – केशों की घूँघर (कुल्ला)।
दीद – दर्शन, अवलोकन।
ज्यों दूद – धुएँ की तरह।
फ़राहम – संचित।
रौज़न – विवर, रंध्र।

२ दैर-ओ-हरम – मंदिर और मसजिद।
आईनः-ए-तकरार-ए-तमन्ना – (तकरार–पुनरावृत्ति, दोहराना, वाद-विवाद, तू-तू-मैं-मैं। आईनः–दर्पण, आदर्श, प्रकट होना) कामना की तकरार का सुबूत।
वामांदगि-ए-शौक़ – शौक़ (चाव, रुचि) की थकन।
तराशे है पनाहें – शरण ढूंढती है, आश्रय निर्मित करती है।

२१

१ गर्मि-ए-नशात-ए-तसव्वुर – कल्पना के हर्ष की गर्मी (अतिरेक)
नग़मःसंज हूँ – गा रहा हूँ।
'अन्दलीब-ए-गुल्शन-ए-ना आफ़रीदः – अजात उद्यान का बुलबुल।

२२

१ नवासाज़-ए-तमाशा – तमाशे को सजानेवाला।
सर ब कफ़ – सर हथेली पर लिये हुए।
तमाशागाह-ए-सोज़-ए-ताज़ः – नयी तपन का क्रीड़ास्थल।
हर यक 'अज़्व-ए-तन – शरीर का हर अंग।
चराग़ान-ए-दिवाली – दिवाली के दीप।
सफ़ ब सफ़ – पंक्ति के बाद पंक्ति।

२३

१ बज़्म-ए-तमाशा – तमाशागाह, क्रीड़ास्थल।
तग़ाफ़ुल – उपेक्षा।
पर्दःदारी – पर्दा रखना, आवरण।
तसवीर-ए-'उरियाँ – नंगी तस्वीर, निरावरण चित्र।

२४

१ फ़ुतादगी – नम्रता, पतन।
उस्तुवार – पोढ़ा, तन-मन से सुदृढ़।
बरंग-ए-जादः – रास्ते की तरह।
सर-ए-कू-ए-यार – दोस्त की गली की ओर प्रवृत्त।

२ जुनून-ए-फ़ुर्क़त-ए-यारान-ए-रफ़्तः – बिछुड़े हुए मित्रों के विरह का उन्माद।
बसान-ए-दश्त – क्षेत्र के समान।
दिल-ए-पुर ग़ुबार – (ग़ुबार–धूल, वैमनस्य, धूमिलता) ग़ुबार से भरा दिल।

२५

१ **तिलिस्म-ए-दैर** – मंदिर का इन्द्रजाल।
(**तिलिस्म-ए-दह्र** – समय और संसार का इन्द्रजाल)
सद हश्र-ए-पादाश-ए-'अमल – कर्म के प्रतिकार के सैकड़ों प्रलय।
आगही ग़ाफ़िल – भय अचेत।
इम्रोज़ – आज का दिन।
बे फ़र्दा – कल के दिन के बिना।
[ग़ालिब के दीवान के जितने संस्करण छपे हैं सब में 'दैर', (मंदिर) का शब्द मिलता है। मेरा विचार है कि यह ग़लत है, 'दैर' के बजाय 'दह्र' (काल और स्थान, ससार) होना चाहिए। इसलिए मैंने दीवान में इस शे'र को 'दैर' के शब्द के साथ छापा है; लेकिन भूमिका में 'दह्र' के शब्द के साथ लिखा है। उर्दू के प्रसिद्ध समालोचक प्रोफ़ेसर एहतिशाम हुसैन मेरे विचार से सहमत हैं, लेकिन उर्दू के दूसरे प्रसिद्ध समालोचक प्रोफ़ेसर आले अहमद सुरूर विपरीत मत रखते हैं]

२६

१ **गर्दिश-ए-गर्दून-ए-दूँ** – दुष्प्रकृत आकाश का चक्कर।

२७

१ **यास** – निराशा।
फ़राग़त – अवकाश।
ख़ुश्क – सूखी, प्यासी।
तश्नःकामी – प्यास।

२८

१ **ग़ुर्बत** – प्रवास।
ख़्वारी – ज़िल्लत, निरादर, अपयश।

२९

१ **बेचश्म-ए-दिल** – मन की आँख के बिना।
हवस-ए-सैर-ए-लालःज़ार – फूलों की सैर की लालसा।
वरक़-ए-इन्तिख़ाब – प्रमुख पृष्ठ।

३०

१ **ता चन्द** – कब तक।
पस्त फ़ितरती-ए-तब'-ए-आरज़ू – कामना के भाव का नीचापन, कामना की शिथिलता।
बलन्दि-ए-दस्त-ए-दु'आ – प्रार्थना के लिए उठे हुए हाथों की ऊँचाई।
२ **इम्तिहान-ए-हवस** – लालसा की परीक्षा।
बादः-ए-मर्द आज़मा – बहादुरों को आज़मानेवाली शराब, तेज़ शराब।

३१

१ **क़यामत क़ामत** – प्रलय ढानेवाले आकार वाला।
वक़्त-ए-आराइश – शृंगार के समय।
लिबास-ए-नज़्म – काव्य का वस्त्र।
बालीदन-ए-मज़मून-ए-'आली – उच्च विषय का विकास।
(विषय मा'शूक़ के शरीर की तरह है और शब्दों का रूप अलंकरणों की तरह)

३२

१ **मश्क़-ए-फ़िक्र-ए-वस्ल-ओ-ग़म-ए-हिज्र** – विरह के दुख और मिलन के चिंतन का अभ्यास।
लाइक़ – लायक़, योग्य।
ग़म-ए-रोज़गार – दुनिया के दुख।

३३

१ **बन्द-ए-क़बा-ए-यार** – दोस्त की क़बा (एक वस्त्र) के बंद।
फ़िरदौस – जन्नत, स्वर्ग।
ग़ुंचः – कली।
वा हों – खुलें।
यक 'आलम – एक दुनिया।
गुलिस्ताँ – फुलवारी, उद्यान, बाग़।

३४

१ **आतश अफ़रोज़ि-ए-यक-शो'लः-ए-ईमाँ** – (आतश अफ़रोज़ी–आग जलाना) धर्म और विश्वास की ज्वाला।
चश्मक आराइ-ए- सद शह्र-ए-चराग़ाँ – दीपमालाओं से अलंकृत सैकड़ों शहरों में चंचल लवों के इशारे।
[तू (ख़ुदा) ने केवल धर्म और विश्वास की लौ प्रज्वलित की है लेकिन मैं (मानव) ने नगरों को दीपों से सजाया है। यानी दुनिया तूने पैदा की है और संस्कृति व सभ्यता मैं ने]

३५

१ **बहार-ए-तमाशा-ए-गुलिस्तान-ए-हयात** – जीवन की फुलवारी के अवलोकन की बहार।
विसाल-ए-लालः 'इज़ारान-ए-सर्व क़ामत – सरो जैसे आकार और फूल जैसे मुखड़े वाले मा'शूक़ों का मिलन।

३६

१ **रश्क** – ईर्ष्या।
आसाइश-ए-अर्बाब-ए-ग़फ़्लत – उपेक्षावादियों का सुख-चैन।
पेच-ओ-ताब-ए-दिल – मन की कुढ़न, व्याकुलता।
नसीब-ए-ख़ातिर-ए-आगाह – चिंतनवादियों के भाग्य में।

३७

१ **जाम-ओ-सुबू** – मधुपात्र और मधुघट।
बादः-ए-गुल्फ़ाम – गुलाबी शराब।

३८

१ **ता चन्द** – कब तक।
नाज़ खेंचना – नाज़ उठाना।
बुतख़ानः – प्रतिमाशाला, मन्दिर।
ब ख़ल्वत-ए-जानानः – मा'शूक़ के शयनागार की ओर।

२ **'अिज्ज़-ओ-नियाज़** – ('अज्ज़) नम्रता और श्रद्धा।
हरीफ़ानः – हरीफ़ (दुश्मन) की तरह [हरीफ़ का अर्थ सहोयोगी भी है]

३ **ज़ौक़-ए-गिरीयः** – रुदन का चाव, आँसुओं का वेग।
'अज़्म-ए-सफ़र – यात्रा का संकल्प और साहस।
रख़्त-ए-जुनून-ए-सैल – जलप्लावन के उन्माद का रख़्त।
(रख़्त–उपकरण, सामान, वस्त्र)
ब वीरानः – उजाड़ क्षेत्र की ओर।
(पहले और तीसरे शे'र में खेंचिये का प्रयोग फ़ारसी का अनुवाद है। आगे के शे'र में भी ऐसा ही है)

३९

१ **नामः** – पत्र।
आश्ना – मित्र, परिचित, मा'शूक़।
मिन्नत खेंचना – आभारी होना, एहसान उठाना।
मिन्नत-ए-बेगानः – पराये (पत्रवाहक) का एहसान।

४०

१ **जाम-ए-हरज़र्र** :– हर कण का मधुपात्र।
सर्शार-ए-तमन्ना – कामना से भरपूर।
दो'आलम – दो संसार, लोक-परलोक।

४१

१ **गदा-ए-ताक़त-ए-तक़रीर** – वाक्शक्ति का भिकारी।
ख़ामुशी – ख़ामोशी, मौन।
पैरायः-ए-बयाँ – वर्णन-शैली।

२ **फ़सुर्दगी** – मलिनता, उदासीनता।
फ़रियाद-ए-बेदिलाँ – निराशों का आर्त्तनाद।
चराग़-ए-सुब्ह – बुझा हुआ दीपक।
गुल-ए-मौसम-ए-ख़ज़ाँ – पतझर की ऋतु का फूल, मुरझाया हुआ फूल।

३ **बहार-ए-हैरत-ए-नज़्ज़ारः** – अवलोकन के विस्मय की बहार।
सख़्त जानी – पोढ़ापन।
हिना-ए-पा-ए-अजल – मौत के पैरों की मेंहदी।
ख़ून-ए-कुश्तगाँ – क़त्ल हो जाने वालों का ख़ून।

४ **तरावत-ए-सहर ईजादि-ए-असर** – प्रभाव की सुब्ह की शीतलता।
यकसू – एक तरफ़, बाद की चीज़।
बहार-ए-नालः आर्त्तनाद की बहार।
रंगीनि-ए-फ़ुग़ाँ – (फ़ुग़ाँ–फ़रियाद, नालः, आह, आर्त्तनाद) आँसुओं की रंगीनी।

५ **गुल-ए-आईनः** – दर्पणों के फूल।
दर कनार-ए-हवस – लालसा की गोद में।
उमीद – उम्मीद, आशा।
महव-ए-तमाशा-ए-गुलिस्ताँ – फुलवारी की सैर में लीन।

६ **नियाज़** – श्रद्धा।
पर्दः-ए-इज़्हार-ए-ख़ुदपरस्ती – आत्मश्लाघा (अभिमान) का पर्दा
जबीन-ए-सिजदः फ़िशाँ – सिजदे करनेवाला मस्तक।
आस्ताँ – चौखट, ड्यौढ़ी।

७ **बहानः जूइ-ए-रह्मत** – ईश-कृपा काबहाना ढूँढना।
कमींगर-ए-तक़रीब – उत्सव का ओट लेनेवाली।
वफ़ा-ए-हौसलः – साहस का निर्वाह, साहस का कसौटी पर पूरा उतरना
रंज-ए-इम्तिहाँ – परीक्षा का दुख।

८ **ब मौसम-ए-गुल** – फूलों की ऋतु में।
दर तिलिस्म-ए-कुंज-ए-क़फ़स – क़ैद के जादू में फँसा हुआ।
ख़िराम – गति।
सबा – समीर।
गुलिस्ताँ – फुलवारी।

[यह ग़ालिब की बहुत कठिन ग़ज़ल है और तुम्हसे के प्रयोग ने इसे और भी मुश्किल बना दिया है। इसका संबोधन ख़ुदा की ओर है इसमें इस विश्वास का प्रकाशन है कि ब्रह्म से बाहर किसी वस्तु का आस्तित्व नहीं है। इससे मिलती-जुलती ग़ालिब की प्रसिद्ध फ़ारसी ग़ज़ल है

> नशात–ए–मा'नवियाँ अज़ शराबख़ानः-ए-तुस्त
> फ़ुसून-ए-बाबलियाँ फ़स्ल-ए-अज़ फ़सानः-ए-तुस्त

यानी, ज्ञानियों का हर्ष तेरे मदिरालय से है और बाबिल वालों का जादू तेरी कहानी का एक अंश है]

परिशिष्ट

उर्दू में ग़ज़लों का क्रम वर्णमाला के हिसाब से रखा जाता है और उसका आधार क़ाफ़िये और रदीफ़ के अंतिम अक्षर पर होता है। यही क्रम परिशिष्ट में बाक़ी रखा है—पहले अलिफ़ पर ख़तम होनेवाली और फिर बे पर ख़तम होनेवाली ग़ज़लें ....

अलिफ़–अ

अर्ज़-ए-नियाज़-ए-'अिश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा ४२–१२०

असद, हम वह जुनूँ जौलाँ गदा-ए-बेसर-ओ-पा हैं — ख़ार अपना २४–९२

आईनः देख, अपना सा मुँह ले के रह गये — ग़ुरूर था ४१–११८

'अिश्रत-ए-क़तरः है, दरिया में फ़ना हो जाना ४९–१३०

एक एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब — यार था १७–७५

क़तरः-ए-मै, बसकि हैरत से नफ़स परवर हुआ २९–१०२

कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया ४–५६

गर न अन्दोह-ए-शब-ए-फ़ुर्क़त बयाँ होजायगा ३६–९६

ग़ाफ़िल ब वहम-ए-नाज़ ख़ुद आरा है, वर्नः याँ — गियाह का ४६–१२६

गिला है शौक़ को, दिल में भी तंगि-ए-जा का २८–१००

घर हमारा, जो न रोते भी, तो वीराँ होता ३२–१०४

जब, बतक़रीब-ए-सफ़र, यार ने महमिल बाँधा ३०–१०२

जराहत तोह्फ़ः, अल्मास अर्मुग़ाँ, दाग़-ए-जिगर हदियः —दर्दमन्द आया २–५४

ज़िक्र उस परीवश का, और फिर बयाँ अपना ४४–१२४

ज़ुज़ क़ैस और कोई न आया, ब रू-ए-कार —हुमूद था ३–५४

ज़ौर से बाज़ आये पर बाज़ आयें क्या ४७–१२८

तू दोस्त किसी का भी, सितमगर, न हुआ था ३९–११६

दर्द मिन्नत कश-ए-दवा न हुआ २७–९८

दर ख़ुर-ए-क़ेह्र-ओ-ग़ज़ब, जब कोई हमसा न हुआ २३–९०

दह्र में, नक़्श-ए-वफ़ा, वज्ह-ए-तसल्ली न हुआ ९–६४

दिल मिरा, सोज़-ए-निहाँ से, बेमहाबा जल गया ५–५८

दोस्त ग़मख़्वारी मेरी, स'अि फ़रमायेंगे क्या २०–८२

धमकी में मर गया, जो न बाब-ए-नबर्द था ७–६०

नक़्श फ़रियादी है, किसकी शोख़ि-ए-तहरीर का १–५२

न था कुछ, तो ख़ुदा था, कुछ न होता, तो ख़ुदा होता ३३–१०६

न होगा यक बयाबाँ मान्दगी से ज़ौक़ कम मेरा ११–६८

नालः-ए-दिल में शब, अन्दाज़-ए-असर नायाब था १६–७६

पै-ए-नज़्र-ए-करम तोह्फ़ः, है शर्म-ए-नारसाई का २५–९४

फिर मुझे दीदः-ए-तर याद आया ३६–११०

बज़्म-ए-शाहनशाह में अश'आर का दफ़्तर खुला १४–७२

बसकि दुश्वार है, हर काम का आसाँ होना १८–७८

महरम नहीं है तूही नवाहा-ए-राज़ का १३–७०

मैं, और बज़्म-ए-मै से, यों तश्नःकाम आऊँ — हुआ था ३१–१०४

यक ज़र्रः-ए-ज़मीं नहीं बेकार, बाग़ का ३४–१०६

यह न थी हमारी क़िस्मत, कि विसाल-ए-यार होता २१–८०

रश्क कहता है, कि उसका ग़ैर से इख़लास, हैफ़ — किसका आश्ना ४३–१२२

लताफ़त बेकसाफ़त जल्वः पैदा कर नहीं सकती — बहारी का ४८–१३०

लब-ए-ख़ुश्क दर तश्निगी मुर्दगाँ का ३८–११६

वह मिरी चीन-ए-जबीं से, ग़म-ए-पिन्हाँ समझा ३५–१०८

शब, कि बर्क़-ए-सोज़-ए-दिल से, ज़हरः-ए-अब्र आब था १५–७४

शब, कि वह मजलिस फ़रोज़-ए-ख़ल्वत-ए-नामूस था ४०–११८

शब, ख़ुमार-ए-शौक़-ए-साक़ी, रस्तख़ेज़ अन्दाज़ः था ११८–२

शुमार-ए-सुबह्ः, मर्ग़ूब-ए-बुत-ए-मुश्किल-पसन्द आया ८–६२

शौक़ हर रंग रक़ीब-ए-सर-ओ-सामाँ निकला ६–६०

सरापा रेह्न-ए-'अिश्क़-ओ-नागुज़ीर-ए-उल्फ़त-ए-हस्ती — हासिल का १२–६८

सिताइशगर है ज़ाहिद इस क़दर, जिस बाग़-ए-रिज़्वाँ का १०–६६

सुरमः-ए-मुफ़्त-ए-नज़र हूँ, मिरी क़ीमत यह है — एहसाँ मेरा ४५–१२६

हवस को है नशात-ए-कार क्या क्या २२–८८

हुई ताख़ीर, तो कुछ बा'अिस-ए-ताख़ीर भी था ३७–११२

बे–ब

फिर हुआ वक़्त, कि हो बाल कुशा मौज-ए-शराब ५०–१३२

ते–त

अफ़सोस, कि दन्दाँ का किया रिज़्क़, फ़लक ने — 'अिक़्द-ए-गुहर अंगुश्त ५१–१३६

आमद-ए-ख़त से हुआ है सर्द जो, बाज़ार-ए-दोस्त ५४–१३८

मुंद गईं, खोलते ही खोलते आँखें, ग़ालिब — किस वक़्त ५३–१३८

रहा गर कोई ता क़यामत, सलामत ५२–१३६

जीम–ज

गुलशन में बन्द-ओ-बस्त बरंग-ए-दिगर, है आज ५५–१४०

लो हम मरीज़-ए-'अिश्क़ के तीमारदार हैं — क्या 'अिलाज ५६–१४२

चे–च

नफ़स न अंजुमन-ए-आरज़ू से बाहर खेंच ५७–१४२

दाल–द

हुस्न, ग़म्ज़े की कशाकश से छुटा, मेरे बा'द ५८–१४४

रे–र

क्यों जल गया न ताब-ए-रुख़-ए-यार देख कर ६१–१५०

घर जब बना लिया तिरे दर पर, कहे बिग़ैर ६०–१४८

जुनूँ की दस्तगीरी किस से हो, गर हो न 'उरियानी ६५–१५८
बला से हैं, जो यह पेश-ए-नज़र दर-ओ-दीवार ५९–१४६
लरज़ता है मिरा दिल ज़हमत-ए-मेहर-ए-दरख़्शाँ पर ६२–१५४
है बसकि, हर इक उनके इशारे में निशाँ और ६३–१५६
सफ़ा-ए-हैरत-ए-आईनः है, सामान-ए-ज़ंग आख़िर ६४–१५८
लाज़िम था कि देखो मिरा रस्तः कोई दिन और ६७–१६०
सितमकश मस्लिहत से हूँ, कि ख़ूबाँ तुझ प 'आशिक़ हैं
— रक़ीब आख़िर ६६–१६०

ज़े–ज़

क्योंकर उस बुत से रखूँ जान 'अज़ीज़ ७१–१६६
फ़ारिग़ मुझे न जान, कि मानिन्द-ए-सुब्ह-ओ-मेह्र
— कफ़न हनोज़ ६८–१६४
न गुल-ए-नग्मः हूँ, न पर्दः-ए-साज़ ७२–१६८
वुस्'अत-ए-स'इ-ए-करम देख, कि सर तासर-ए-ख़ाक
— गुज़रबार हनोज़ ७०–१६६
हरीफ़-ए-मतलब-ए-मुश्किल नहीं, फ़ुसून-ए-नियाज़ ६९–१६४

सीन–स

मुज़्दः ऐ ज़ौक़-ए-असीरी, कि नज़र आता है
— गिरफ़्तार के पास ७३–१७०

शीन–श

न लेवे गर ख़स-ए-जौहर, तरावत सब्ज़ः-ए-ख़त से ७४–१७२

'ऐन–'अ

जादः-ए-रह ख़ुर को वक़्त-ए-शाम है तार-ए-शु'आ'अ ७५–१७२
रुख़-ए-निगार से, है सोज़-ए-जाविदानि-ए-शम्'अ ७६–१७२

फ़े–फ़

बीम-ए-रक़ीब से नहीं करते विदा'-ए-होश
—इख़्तियार हैफ़ ७७–१७४
आह को चाहिये इक 'उम्र, असर होने तक ७९–१७८

काफ़–क

ज़ख़्म पर छिड़कें कहाँ, तिफ़्लान-ए-बेपरवा, नमक ७८–१७६

गाफ़–ग

गर तुझको है यक़ीन-ए-इजाबत, दु'आ न माँग ८०–१८०

लाम–ल

है किस क़दर हलाक-ए-फ़रेब-ए-वफ़ा-ए-गुल ८१–१८०

मीम–म

ग़म नहीं होता है आज़ादों को, बेश अज़ यक नफ़स
— मातम ख़ानः हम ८२–१८२
ब नालः हासिल–ए–दिल बस्तगी फ़राहम कर
— सदा मा'लूम ८३–१८४
मुझको दयार–ए–ग़ैर में मारा, वतन से दूर
— बेकसी की शर्म ८४–१८४

नून–न

आबरू क्या ख़ाक उस गुल की, कि गुलशन में नहीं ८८–१९०
'इश्क़ तासीर से नौमीद नहीं ९६–२०२
'ओह्दे से मद्ह-ए-नाज़ के, बाहर न आ सका ८९–१९२
क़यामत है, कि सुन लैला का दश्त-ए-क़ैस में आना
—ज़माने में १०५–२१८
कल के लिए कर आज न ख़िस्सत शराब में ९९–२०८
की वफ़ा हमसे, तो ग़ैर उसको जफ़ा कहते हैं ८७–१८८
गुंचः-ए-नाशिगुफ़्तः को दूर से मत दिखा, कि यों ११७–२४०
ज़मानः सख़्त कम आज़ार है बजान-ए-असद
—ज़ियादः रखते हैं ११०–२२६
जहाँ तेरा नक़्श-ए-क़दम देखते हैं ९७–२०२
ज़िक्र मेरा, बबदी भी, उसे मंज़ूर नहीं १०१–२१२
तेरे तौसन को सबा बाँधते हैं १०९–२२४
दाइम पड़ा हुआ तिरे दर पर नहीं हूँ मैं १११–२२६
दिल ही तो है, न संग-ओ-ख़िश्त, दर्द से भर न आये क्यों ११६–२३८
दिल लगाकर लग गया उनको भी तन्हा बैठना
— दाद याँ १०६–२२०
दिवानगी से, दोश प ज़ुन्नार भी नहीं ११३–२३२
दोनों जहान दे के, वह समझे, यह ख़ुश रहा
— तक़रार क्या करें १०३–२१८
नहीं, कि मुझको क़ियामत का ए'तिक़ाद नहीं १०८–२२२
नालः जुज़ हुस्न-ए-तलब, ऐ सितम इजाद, नहीं १०२–२१४
नहीं है ज़ख़्म कोई बख़िये के दरख़ुर, मिरे तन में ११४–२३४
बर्शकाल-ए-गिरियः-ए-'आशिक़ है, देखा चाहिए
— दिवार-ए-चमन ९५–२००
मज़े जहान के अपनी नज़र में ख़ाक नहीं ११५–२३६
मानं'-ए-दश्त नवर्दी कोई तद्बीर नहीं ९३–१९८
मेह्रबाँ होके बुलालो मुझे, चाहो जिस वक़्त
— आ भी न सकूँ ९०–१९४
मत मर्दुमक-ए-दीदः में समझो यह निगाहें ९४–२००
मिलती है ख़ू-ए-यार से नार, इल्तिहाब में ९८–२०४
लूँ वाम बख़्त-ए-ख़ुफ़्तः से, यक ख़्वाब-ए-ख़ुश, वले ८५–१८४
यह हम जो हिज्र में, दीवार-ओ-दर को देखते हैं १०७–२२०
वह फ़िराक़ और वह विसाल कहाँ ८६–१८६
सब कहाँ, कुछ लालः-ओ-गुल में नुमायाँ होगईं ११२–२२८
हमसे खुलजाओ, बवक़्त-ए-मै परस्ती, एक दिन ९१–१९४
हम पर, जफ़ा से, तर्क-ए-वफ़ा का गुमाँ नहीं ९२–१९६
हैराँ हूँ, दिल को रोऊँ, कि पीटूँ जिगर को मैं १००–२१०
हो गई है ग़ैर की शीरीं बयानी, कारगर
— बेज़बानों पर नहीं १०४–२१८

वाव–व

क़फ़स में हूँ, गर अच्छा भी न जाने मेरे शेवनको १२१–२४८

का'बे में जारहा, तो न दो ता'नः, क्या कहीं
—कुनिश्त को १११–२४४
किसी को देके दिल कोई नवा संज-ए-फ़ुग़ाँ क्यों हो १२७–२६०
गई वह बात, कि हो गुफ्तगू तो क्योंकर हो १२६–२५८
तुम जानो, तुम को ग़ैर से जो रस्म-ओ-राह हो १२५–२५६
धोता हूँ जब मैं पीने को, उस सीमतन के पाँव १२२–२५०
रहिये अब ऐसी जगह चलकर, जहाँ कोई न हो १२८–२६२
वारस्तः उससे हैं, कि महब्बत ही क्यों न हो १२०–२४८
वाँ उसको हौल-ए-दिल है, तो याँ मैं हूँ शर्मसार
—तासीर से न हो १२३–२५२
वाँ पहुँचकर जो ग़श आता पै-ए-हम है हम को १२४–२५२
हसद से दिल अगर अफ़्सुर्दः है, गर्म-ए-तमाशा हो ११८–२४२

हे–ह

अज़ मेह्र ता बज़र्रः दिल-ओ-दिल है आइनः १२९–२६४
है सब्ज़ः ज़ार हर दर-ओ-दीवार-ए-ग़मकदः
—ख़ज़ाँ न पूछ १३०–२६४

ये–य

'अजब नशात से, जल्लाद के, चले हैं हम, आगे १७७–३४०
अर्ज़-ए-नाज़-ए-शोख़ि-ए-दंदाँ, बराये ख़न्दः है २१३–३९८
'अिश्क़ मुझको नहीं, वहशत ही सही १४९–२८८
आईनः क्यों न दूँ, कि तमाशा कहें जिसे २३०–४१८
आ, कि मिरी जान को क़रार नहीं है १७१–३२८
आमद-ए-सैलाब तूफ़ान-ए-सदा-ए-आब है २२४–४१२
इब्न-ए-मरियम हुआ करे कोई २१६–४०२
उग रहा है दर-ओ-दीवार से सब्ज़ः, ग़ालिब
—बहार आई है १५७–३००
उस बज़्म में, मुझे नहीं बनती हया किये १५२–२९२
एक जा हर्फ़-ए-वफ़ा लिक्खा था, सो भी मिट गया १४४–२८४
क्या तंग हम सितमज़दगाँ का जहान है १३९–२७४
क्यों न हो चश्म-ए-बुताँ महव-ए-तग़ाफ़ुल, क्यों न हो २०१–३७६
कब वह सुनता है कहानी मेरी १८४–३५२
कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे २०६–३८६
करे है बादः, तिरे लब से कस्ब-ए-रंग-ए-फ़रोग़
—गुज़श्तः है २००–३७४
कहते तो हो तुम सब, कि बुत-ए-ग़ालियः मू आये १६४–३१४
कहूँ जो हाल, तो कहते हो, मुद्द'आ कहिये २१०–३९२
कारगाह-ए-हस्ती में, लालः दाग़ सामाँ है १५६–३००
कोई उम्मीद बर नहीं आती १६२–३०८
कोई दिन, गर ज़िन्दगानी और है १६१–३०८
कोह के हों बार-ए-ख़ातिर, गर सदा हो जाइये २२१–४१०
ख़तर है, रिश्तः-ए-उल्फ़त रग-ए-गर्दन न हो जावे १९६–३७०
ख़मोशियों में तमाशा अदा निकलती है २२८–४१६
ग़म-ए-दुनिया से, गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की १३७–२७२
गर्म-ए-फ़रियाद रखा, शक्ल-ए-निहाली ने मुझे १५५–२९८
गर ख़ामुशी से फ़ायदः, इख़्फ़ा-ए-हाल है १४२–२८०
घर में था क्या, कि तिरा ग़म उसे ग़ारत करता
—जा'मीर सो है १३६–२७२
ग़ैर लें महफ़िल में, बोसे जाम के १८१–३४८
ग़म खाने में बोदा, दिल-ए-नाकाम, बहुत है २३३–४२६
गुलशन को तिरी सोहबत, अज़ बसकि ख़ुश आई है १८६–३५६
चश्म-ए-ख़ूबाँ ख़ामुशी में भी नवा पर्दाज़ है १४८–२८८
चाक की ख़्वाहिश, अगर वहशत ब 'अुरियानी करे १९३–३६६
चाहिये अच्छों को जितना चाहिए १९०–३६०
जब तक दहान-ए-ज़ख़्म न पैदा करे कोई २१५–४००
ज़िबस कि मश्क़-ए-तमाशा, जुनूँ 'अलामत है २०७–३८८
जिस ज़ख़्म की हो सकती हो तद्बीर, रफ़ू की १८७–३५६
जिस जा नसीम शानः कश-ए-ज़ुल्फ़-ए-यार है २२९–४१६
जिस बज़्म में, तू नाज़ से, गुफ़्तार में आवे १७४–३३२
जुज़ क़ैस, तोहमत कश-ए-तस्कीं न हो, गर शादमानी की १६६–३२०
ज़ुल्मत कदे में मेरे, शब-ए-ग़म का जोश है १७०–३२६
जो न नक़्द-ए-दाग़-ए-दिल की, करे शो'लः पासबानी १६९–३२४
ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री, ग़ालिब
—ख़ुदा रखते थे १५१–२९२
ता, हम को शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा
—हमारा नहीं करते १३५–२७०
तुम अपने शिकवे की बातें, न खोद खोद के पूछो १४३–२८२
दर्द से मेरे है तुमको बेक़रारी हाय हाय १४०–२७६
फिर इस अन्दाज़ से बहार आई १८२–३५०
फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी है १६५–३१६
तग़ाफ़ुल दोस्त हूँ, मेरा दिमाग़-ए-'अिज्ज़ 'आली है १८३–३५२
तपिश से मेरी, वक़्फ़-ए-कशमकश, हर तार-ए-बिस्तर है १९५–३७०
तस्कीं को हम न रोयें, जो ज़ौक़-ए-नज़र मिले १६०–३०६
दिया है दिल अगर उसको, बशर है, क्या कहिये २०२–३७६
दिल-ए-नादाँ, तुझे हुआ क्या है १६३–३१२
दिल से तिरी निगाह जिगर तक उतर गई १५९–३०४
देख कर दर पर्दः गर्म-ए-दामन अफ़्शानी मुझे २०३–३८०
देखना क़िस्मत, कि आप अपने प रश्क आजाये है १५४–२९६
नक़्श-ए-नाज़-ए-बुत-ए-तन्नाज़, ब आग़ोश-ए-रक़ीब १८५–३५४
न पूछ नुस्ख़ः-ए-मरहम, जराहत-ए-दिल का १९८–३७४
नवेद-ए-अम्न है बेदाद-ए-दोस्त, जाँ के लिए २३५–४३२
नश्शःहा शादाब-ए-रंग-ओ-साज़हा मस्त-ए-तरब २१२–३९८
न हुई गर मिरे मरने से तसल्ली, न सही १७६–३३८
निकोहिश है सज़ा, फ़रियाद-ए-बेदाद-ए-दिलबर की १६७–३२०
नुक्तःचीं है, ग़म-ए-दिल उसको सुनाये न बने १९२–३६४
पा ब दामन हो रहा हूँ बसकि मैं सहरा नवर्द
—ख़ार-ए-पा हैं जौहर-ए-आईनः-ए-ज़ानू मुझे १७३–३३२
पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वह मेरे
—बदलने नहीं देते १४५–२८४
फ़रियाद की कोई लै नहीं है १९७–३७२

बहुत सही ग़म-ए-गेती, शराब कम क्या है २१७–४०६
बाग़ पाकर खफ़क़ानी, यह डराता है मुझे २१८–४०६
बाज़ीचः-ए-अत्फ़ाल है दुनिया, मिरे आगे २०९–३९०
बिसात-ए-'अिज्ज़ में था एक दिल, यक क़तरः खूँ
वह भी १३३–२६८
बे ए'तिदालियों से, सुबुक सब में हम हुए १६८–३२२
मंज़ूर थी यह शक्ल, तजल्ली को नूर की २३२–४२४
मस्जिद के ज़ेर-ए-सायः खराबात चाहिये १३२–२६६
मस्ती ब ज़ौक़-ए-ग़फ़लत-ए-साक़ी हलाक है २२२–४१२
मिरी हस्ती फ़ज़ा-ए-हैरत आबाद-ए-तमन्ना है १४६–२८६
मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किये हुए २३४–४२८
मैं उन्हें छेड़ूँ, और कुछ न कहें
—मै पिये होते १८०–३४८
याद है शादी में भी हंगामः-ए-यारब, मुझे २०४–३८२
रफ़्तार-ए-'उम्र, क़त'-ए-रह-ए-इज़्तिराब है १५३–२९४
रहम कर ज़ालिम, कि क्या बूद-ए-चराग़-ए-कुश्तः है १४७–२८६
रोने से और 'अिश्क़ में बेबाक हो गये २११–३९६
रौंदी हुई है, कौकबः-ए-शहरियार की २१९–४०८
लब-ए-'ईसा की जुंबिश करती है गहवारः जुंबानी
—संगी है २२३–४१२
लाग़र इतना हूँ, कि गर तू बज़्म में जा दे मुझे २०८–३८८
वह आके ख़्वाब में, तस्कीन-ए-इज़्तिराब तो दे १९४–३६८
शबनम ब गुल-ए-लालः न खाली ज़ि अदा है २३१–४२०
शिक़्वे के नाम से, बेमेह्र खफ़ा होता है १७८–३४२
सद जल्वः रूबरू है, जो मिश्गाँ उठाइये १३१–२६४
सर गश्तगी में, 'आलम-ए-हस्ती से यास है १४१–२८०
सादगी पर उसकी, मर जाने की हसरत, दिल में है १५८–३०२
सियाही जैसे गिर जावे दम-ए-तह्रीर काग़ज़ पर
—हिज्रों की २२६–४१४
सीमाब पुश्त गर्मि-ए-आईनः दे है, हम
—बेक़रार के १८८–३५८
हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी, कि हर ख़्वाहिश प दम निकले २२०–४०८
हम रश्क को अपने भी, गवारा नहीं करते १९९–३७४
हर एक बात प कहते हो तुम, कि तू क्या है १७९–३४४
हर क़दम दूरि-ए-मंज़िल है नुमायाँ मुझसे १९१–३६२
हासिल से हाथ धो बैठ, अय आरज़ू खिरामी १३८–२७४
हुजूम-ए-ग़म से, याँ तक सरनिगूनी मुझको हासिल है १७२–३३०
हुजूम-ए-नालः, हैरत, 'आजिज़-ए-'अर्ज़-ए-यक अफ़्ग़ाँ है २२७–४१४
हुज़ूर-ए-शाह में, अह्ल-ए-सुखन की आज़माइश है २०५–३८२
हुस्न-ए-बेपरवा खरीदार-ए-मता'-ए-जल्वः है २१४–४००
हुस्न-ए-मह, गरचेः ब हंगाम-ए-कमाल, अच्छा है १७५–३३६
हूँ मैं भी तमाशाइ-ए-नैरंग-ए-तमन्ना
—ही बर आवे २२५–४१४
है आर्मीदगी में निकोहिश बजा मुझे १५०–२९०
है बज़्म-ए-बुताँ में सुखन आज़ुर्दः लबों से १३४–२७०
है वस्ल हिज्र, 'आलम-ए-तम्कीन-ओ-ज़ब्त में
—दीवानः चाहिये १८९–३५८

ज़मीमः

अगर आसूदगी है मुद्'आ-ए-रंज-ए-बेताबी १३–४५०
अज़ आँजा कि हसरत कश-ए-यार हैं हम १९–४५२
अपना अह्वाल-ए-दिल-ए-ज़ार कहूँ या न कहूँ ३–४३८
अब्र रोता है, कि बज़्म-ए-तरब आमदः करो ८–४४६
अय नवासाज़-ए-तमाशा, सर ब कफ़ जलता हूँ मैं २२–४५४
असद, उठना क़यामत क़ामतों का, वक़्त-ए-आराइश ३१–४६०
असद, बज़्म-ए-तमाशा में, तग़ाफ़ुल पर्दःदारी है २३–४५६
असद, बन्द-ए-क़बा-ए-यार है फ़िर्दौस का गुंचः ३३–४६०
असद, बहार-ए-तमाशा-ए-गुलिस्तान-ए-हयात ३५–४६२
असद, यह 'अिज्ज़-ओ-बेसामानि-ए-फ़िर 'औन तौअम है १४–४५०
आतश अफ़रोज़ि-ए-यक शो'लः-ए-ईमाँ तुझसे ३४–४६०
कलकत्ते का जो ज़िक्र किया तूने हमनशीं २–४३८
खुद नामः बन के जाइये, उस आश्ना के पास ३९–४६४
खुद परस्ती से रहे बाहम दिगर, ना आश्ना १७–४५२
गदा-ए-ताक़त-ए-तक़दीर है ज़बाँ तुझ से ४१–४६४
गये वह दिन, कि नादानिस्तः ग़ैरों की वफ़ादारी १–४३६
गर मुसीबत थी, तो ग़ुर्बत में उठा लेते, असद २८–४५८
चन्द तस्वीर-ए-बुताँ, चन्द हसीनों के खुतूत ९–४४८
जाम-ए-हर ज़र्रः, है सर्शार-ए-तमन्ना मुझसे ४०–४६४
फ़ुतादगी में क़दम उस्तुवार रखते हैं २४–४५६
फिर वह सू-ए-चमन आता है, खुदा खैर करे १८–४५२
फिर हल्क़ः-ए-काकुल में पड़ीं दीद की राहें २०–४५४
ता चन्द, नाज़-ए-मस्जिद-ओ-बुतखानः खेंचिये ३८–४६२
ता चन्द पस्त फ़ितरति-ए-तब'-ए-आरज़ू ३०–४५८
तोड़ बैठे, जबकि हम जाम-ओ-सुबू, फिर हमको क्या ३७–४६२
दम-ए-वापसीं बर सर-ए-राह है ११–४४८
दो रंगियाँ यह ज़माने की जीते जी हैं सब १०–४४८
बसूरत तकल्लुफ़, बमा'नी तअस्सुफ़ १६–४५०
बे चश्म-ए-दिल न कर हवस-ए-सैर-ए-लालःज़ार २९–४५८
मज्लिस-ए-शम्'अ 'अिज़ारों में जो आ जाता हूँ ५–४४२
मुमकिन नहीं, कि भूलके भी आर्मीदः हूँ ४–४४०
मुझे मा'लूम है, जो तूने मेरे हक़ में सोचा है २६–४५६
मैं हूँ मुश्ताक़-ए-जफ़ा, मुझ प जफ़ा और सही ६–४४४
रश्क है आसाइश-ए-अर्बाब-ए-ग़फ़लत पर, असद ३६ ४६२
हमने वह्शत कदः-ए-बज़्म-ए-जहाँ में ज्यों शम्'अ १५ ४५०
हम मश्क़-ए-फ़िक्र-ए-वस्ल-ओ-ग़म-ए-हिज्र से, असद ३२–४६०
हूँ गर्मि-ए-नशात-ए-तसव्वुर से नग़्मःसंज २१–४५४
है कहाँ, तमन्ना का दूसरा क़दम, यारब १२–४४८
है ग़नीमत, कि बउम्मीद गुज़र जायगी 'उम्र ७–४४६
है तिलिस्म-ए-दैर में, सद हश्र-ए-पादाश-ए-'अमल २५–४५६
है यास में असद को साक़ी से भी फ़राग़त २७–४५८

اشاریہ

الف

آئینہ دیکھ اپنا سا منہ لے کے رہ گئے - غرور تھا ١١٩_٤١

اسد ہم وہ جنوں جولاں گدائے بےسر و پا ہیں

-- پشت خار اپنا ٩٣_٢٤

ایک ایک قطرے کا مجھے دینا پڑا حساب

-- مژگان یار تھا ٧٩_١٧

بزم شاہنشاہ میں اشعار کا دفتر کھلا ٧٣_١٤

بس کہ دشوار ہے، ہر کام کا آساں ہونا ٧٩_١٨

پھر مجھے دیدۂ تر یاد آیا ١١١_٣٦

پےِ نذرِ کرم تحفہ، ہے شرمِ نارسائی کا ٩٥_٢٥

تو دوست کسی کا بھی، ستمگر، نہ ہوا تھا ١١٧_٣٩

جب، بتقریبِ سفر، یار نے محمل باندھا ١٠٣_٣٠

جراحت تحفہ، الماس ارمغاں، داغِ جگر ہدیہ

-- درد مند آیا ٥٥_٢

جز قیس اور کوئی نہ آیا بروئے کار

-- حسود تھا ٥٥_٣

جور سے باز آئے پر باز آئیں کیا ١٢٩_٤٧

در خورِ قہر و غضب، جب کوئی ہم سا نہ ہوا ٩١_٢٣

درد منت کشِ دوا نہ ہوا ٩٩_٢٧

دل مرا سوزِ نہاں سے، بے محابا جل گیا ٥٩_٥

دوست، غمخواری میں مری، سعی فرمائیں گے کیا ٨٣_٢٠

دہر میں نقشِ وفا وجہ تسلی نہ ہوا ٦٥_٩

دھمکی میں مر گیا، جو نہ بابِ نبرد تھا ٦١_٧

ذکر اس پری وش کا، اور پھر بیاں اپنا ١٢٥_٤٤

رشک کہتا ہے، کہ اس کا غیر سے اخلاص، حیف

-- کس کا آشنا ١٢٣_٤٣

ستایش گر ہے زاہد اس قدر، جس باغ رضواں کا ٦٧_١٠

سراپا رہنِ عشق و ناگزیر الفت ہستی

-- حاصل کا ٦٩_١٢

سرمۂ مفت نظر ہوں، مری قیمت یہ ہے

-- احسان میرا ١٢٧_٤٥

شب، خمارِ شوقِ ساقی، رستخیز اندازہ تھا ٨٣_١٩

شب، کہ برق سوزِ دل سے زہرۂ ابر آب تھا ٧٥_١٥

شب، کہ وہ مجلس فروز خلوتِ ناموس تھا ١١٩_٤٠

شمارِ سُبحہ، مرغوبِ بتِ مشکل پسند آیا ٦٣_٨

شوق ہر رنگ، رقیبِ سر و ساماں نکلا ٦١_٦

عرضِ نیازِ عشق کے قابل نہیں رہا ١٢١_٤٢

عشرتِ قطرہ ہے، دریا میں فنا ہو جانا ١٣١_٤٩

غافل بہ وہمِ ناز خود آرا ہے، ورنہ یاں

-- طرہ گیاہ کا ١٢٧_٤٦

قطرۂ مے، بسکہ حیرت سے نفس پرور ہوا ١٠٣_٢٩

کہتے ہو نہ دیں گے ہم، دل اگر پڑا پایا ٥٧_٤

گرنہ اندوہِ شبِ فرقت بیاں ہوجائے گا ٩٧_٢٦

گلا ہے شوق کو، دل میں بھی تنگئ جا کا ١٠١_٢٨

گھر ہمارا، جو نہ روتے بھی، تو ویراں ہوتا ١٠٥_٣٢

لبِ خشک درتشنگی، مردگاں کا ١١٧_٣٨

لطافت بے کثافت جلوہ پیدا کر نہیں سکتی

-- بادِ بہاری کا ١٣١_٤٨

محرم نہیں ہے تو ہی نواہائے راز کا ٧١_١٣

میں، اور بزمِ مے سے یوں تشنہ کام آؤں

-- کیا ہوا تھا ١٠٥_٣١

نالۂ دل میں شب اندازِ اثر نایاب تھا ٧٧_١٦

نقش فریادی ہے، کس کی شوخیٔ تحریر کا ٥٣_١

نہ تھا کچھ، تو خدا تھا، کچھ نہ ہوتا، تو خدا ہوتا ١٠٧_٣٣

نہ ہوگا یک بیاباں ماندگی سے ذوق کم میرا ٦٩_١١

وہ مری چینِ جبیں سے، غمِ پنہاں سمجھا ١٠٩_٣٥

ہوس کو ہے نشاطِ کار کیا کیا ٨٩_٢٢

ہوئی تاخیر تو کچھ باعثِ تاخیر بھی تھا ١١٣_٣٧

یک ذرۂ زمیں نہیں بیکار، باغ کا ١٠٧_٣٤

یہ نہ تھی ہماری قسمت کہ وصالِ یار ہوتا ٨٥_٢١

ب

پھر ہوا وقت کہ ہو بال کشا موجِ شراب ١٣٣_٥٠

ت

آمدِ خط سے ہوا ہے سرد جو، بازارِ دوست ١٣٩_٥٤

افسوس، کہ دندان کا کیا رزق فلک نے
— عقد گہر انگشت ۱۳۷-۵۱
رہا گر کوئی تا قیامت، سلامت ۱۳۷-۵۲
مند گئیں کھولتے ہی کھولتے آنکھیں غالب
— کس وقت ۱۳۹-۵۳

ج

گلشن میں بندوبست برنگ دگر، ہے آج ۱۴۱-۵۵
لو ہم مریض عشق کے تیمار دار ہیں
— کیا علاج ۱۴۳-۵۶

چ

نفس، نہ انجمن آرزو سے باہر کھینچ ۱۴۳-۵۷

د

حسن، غمزے کی کشاکش سے چھٹا، میرے بعد ۱۴۵-۵۸

ر

بلا سے ہیں جو یہ پیش نظر درو دیوار ۱۴۷-۵۹
جنوں کی دستگیری کس سے ہو، گر ہو نہ عریانی
— گردن پر ۱۵۹-۶۵
ستم کش مصلحت سے ہوں، کہ خوباں تجھ پہ عاشق ہیں
— رقیب آخر ۱۶۱-۶۶
صفائے حیرت آئینہ ہے سامان زنگ آخر ۱۵۹-۶۴
کیوں جل گیا نہ تاب رخ یار دیکھ کر ۱۵۱-۶۱
گھر جب بنا لیا ترے در پر کہے بغیر ۱۴۹-۶۰
لازم تھا کہ دیکھو مرا رستہ کوئی دن اور ۱۶۱-۶۷
لرزتا ہے مرا دل، زحمت مہر درخشاں پر ۱۵۵-۶۲
ہے بسکہ، ہر اک ان کے اشارے میں نشان اور ۱۵۷-۶۳

ز

حریف مطلب مشکل نہیں فسون نیاز ۱۶۵-۶۹
فارغ مجھے نہ جان، کہ مانند صبح ومہر
— کفن ہنوز ۱۶۵-۶۸
کیوں کر اس بت سے رکھوں جان عزیز ۱۶۷-۷۱
نہ گل نغمہ ہوں، نہ پردۂ ساز ۱۶۹-۷۲
وسعت سعی کرم دیکھ، کہ سرتا سر خاک
— گہر بار ہنوز ۱۶۷-۷۰

س

مژدہ، اے ذوق اسیری، کہ نظر آتا ہے
— مرغ گرفتار کے پاس ۱۷۱-۷۳

ش

نہ لیوے گر خس جوہر، طراوت سبزۂ خط سے
— نگار آتش ۱۷۳-۷۴

ع

جادۂ رہ خور کو وقت شام ہے تار شعاع ۱۷۳-۷۵
رخ نگار سے، ہے سوز جاودانی شمع ۱۷۳-۷۶

ف

بیم رقیب سے نہیں کرتے وداع ہوش
— اختیار حیف ۱۷۵-۷۷

ک

آہ کو چاہیے اک عمر، اثر ہونے تک ۱۷۹-۷۹
زخم پر چھڑکیں کہاں، طفلان بے پروا نمک ۱۷۷-۷۸

گ

گر تجھ کو ہے یقین اجابت، دعا نہ مانگ ۱۸۱-۸۰

ل

ہے کس قدر ہلاک فریب وفائے گل ۱۸۱-۸۱

م

بناله حاملِ دل بستگی فراہم کر
-- معلوم ١٨٥_٨٣
غم نہیں ہوتا ہے آزادوں کو بیش از یک نفس
-- ماتم خانہ ہم ١٨٣_٨٢
مجھ کو دیارِ غیر میں مارا، وطن سے دور
-- بیکسی کی شرم ١٨٥_٨٤

ن

آبرو کیا خاک اس گل کی، کہ گلشن میں نہیں ١٩١_٨٨
بر شکالِ گریۂ عاشق ہے، دیکھا چاہیے
-- دیوارِ چمن ٢٠١_٩٥
تیرے توسن کو صبا باندھتے ہیں ٢٢٥_١٠٩
جہاں تیرا نقشِ قدم دیکھتے ہیں ٢٠٣_٩٧
حیراں ہوں دل کو روؤں کہ پیٹوں جگر کو میں ٢١١_١٠٠
دائم پڑا ہوا ترے در پر نہیں ہوں میں ٢٢٧_١١١
دل لگاکر لگ گیا اُن کو بھی تنہا بیٹھنا
-- بیکسی کی داد یاں ٢٢١_١٠٦
دل ہی تو ہے، نہ سنگ و خشت، درد سے
بھر نہ آئے کیوں ٢٣٩_١١٦
دیوانگی سے، دوش پہ زنار بھی نہیں ٢٣٣_١١٣
دونوں جہان دے کے، وہ سمجھے، یہ خوش رہا
-- تکرار کیا کریں ٢١٩_١٠٣
ذکر میرا، بہ بدی بھی، اُسے منظور نہیں ٢١٣_١٠١
زمانہ سخت کم آزار ہے بجان اسد
-- زیادہ رکھتے ہیں ٢٢٧_١١٠
سب کہاں، کچھ لالہ و گل میں نمایاں ہوگئیں ٢٢٩_١١٢
عشق تاثیر سے نومید نہیں ٢٠٣_٩٦
عہدے سے مدحِ ناز کے، باہر نہ آسکا
-- قضا کہوں ١٩٣_٨٩
غنچۂ ناشگفتہ کو دور سے مت دکھا، کہ یوں ٢٤١_١١٧
قیامت ہے، کہ سن لیلیٰ کا دشتِ قیس میں آنا
-- زمانے میں ٢١٩_١٠٥
کل کے لیے کر آج نہ خست شراب میں ٢٠٩_٩٩
کی وفا ہم سے، تو غیر اس کو جفا کہتے ہیں ١٨٩_٨٧
لوں وام بختِ خفتہ سے یک خوابِ خوش ولے
-- ادا کروں ١٨٥_٨٥
مانعِ دشت نوردی کوئی تدبیر نہیں ١٩٩_٩٣
مت مردمکِ دیدہ میں سمجھو یہ نگاہیں ٢٠١_٩٤
مزے جہان کے اپنی نظر میں خاک نہیں ٢٣٧_١١٥
ملتی ہے خوئے یار سے نار التہاب میں ٢٠٥_٩٨
مہرباں ہو کے بلالو مجھے، چاہو جس وقت
-- آبھی نہ سکوں ١٩٥_٩٠
نالہ جز حسنِ طلب، اے ستم ایجاد نہیں ٢١٥_١٠٢
نہیں، کہ مجھ کو قیامت کا اعتقاد نہیں ٢٢٣_١٠٨
نہیں ہے زخم کوئی بخیے کے در خور، مرے تن میں ٢٣٥_١١٤
وہ فراق اور وہ وصال کہاں ١٨٧_٨٦
ہم پر، جفا سے، ترکِ وفا کا گماں نہیں ١٩٧_٩٢
ہم سے کھل جاؤ بوقتِ مے پرستی ایک دن ١٩٥_٩١
ہوگئی ہے غیر کی شیریں بیانی، کارگر
-- بے زبانوں پر نہیں ٢١٩_١٠٤
یہ ہم جو ہجر میں، دیوار و در کو دیکھتے ہیں ٢٢١_١٠٧

و

تم جانو، تم کو غیر سے جو رسم و راہ ہو ٢٥٧_١٢٥
حسد سے دل اگر افسردہ ہے، گرمِ تماشا ہو ٢٤٣_١١٨
دھوتا ہوں، جب میں پینے کو، اس سیم تن کے پانو ٢٥١_١٢٢
رہیے اب ایسی جگہ چل کر، جہاں کوئی نہ ہو ٢٦٣_١٢٨
قفس میں ہوں، گر اچھا بھی نہ جانیں میرے شیون کو ٢٤٩_١٢١
کسی کو دے کے دل، کوئی نواسنجِ فغاں کیوں ہو ٢٦١_١٢٧
کعبے میں جا رہا، تو نہ دو طعنہ کیا کہیں
-- اہلِ کنشت کو ٢٤٥_١١٩

ہ

گئی وہ بات، کہ ہو گفتگو، تو کیونکر ہو ٢٥٩_١٢٦
واں پہونچ کر جو غش آتا پئے ہم ہے ہم کو ٢٥٣_١٢٤
واں اس کو ہولِ دل ہے، تو یاں میں ہوں شرمسار ٢٥٣_١٢٣
وارستہ اس سے ہیں، کہ محبت ہی کیوں نہ ہو ٢٤٥_١٢٠

ه	
از مہر تا بہ ذرہ دل و دل ہے آئینہ	۲۶۵_۱۲۹
ہے سبزہ زار ہر در و دیوارِ غم کدہ	
— خزاں نہ پوچھ	۲۶۵_۱۳۰
ی	
آ، کہ مری جان کو قرار نہیں ہے	۳۲۹_۱۷۱
آمدِ سیلابِ طوفانِ صدائے آب ہے	
— ئے جادہ ہے	۴۱۳_۲۲۴
آئینہ کیوں نہ دوں، کہ تماشا کہیں جسے	۴۱۹_۲۳۰
ابنِ مریم ہوا کرے کوئی	۴۰۳_۲۱۶
اُس بزم میں، مجھے نہیں بنتی حیا کئے	۲۹۳_۱۵۲
اُگ رہا ہے در و دیوار سے سبزہ غالب	
— بہار آئی ہے	۳۰۱_۱۵۷
ایک جا حرفِ وفا لکھا تھا، سو بھی مٹ گیا	
— غلط بردار ہے	۲۸۵_۱۴۴
بازیچۂ اطفال ہے دنیا مرے آگے	۳۹۱_۲۰۹
باغ پا کر خفقانی، یہ ڈراتا ہے مجھے	۴۰۷_۲۱۸
بساطِ عجز میں تھا ایک دل، یک قطرہ خون وہ بھی	۲۶۹_۱۳۳
بہت سہی غمِ گیتی، شراب کم کیا ہے	۴۰۷_۲۱۷
بے اعتدالیوں سے، سبک سب میں ہم ہوئے	۳۲۳_۱۶۸
پا بہ دامن ہو رہا ہوں، بس کہ میں صحرانورد	
— زانو مجھے	۳۳۳_۱۷۳
پھر اس انداز سے بہار آئی	۳۵۱_۱۸۲
پھر کچھ اک دل کو بیقراری ہے	۳۱۷_۱۶۵
پینس میں گذرتے ہیں جو کوچے سے وہ میرے	
— بدلنے نہیں دیتے	۲۸۵_۱۴۵
تا، ہم کو شکایت کی بھی باقی نہ رہے جا	
— ہمارا نہیں کرتے	۲۷۱_۱۳۵
تپش سے میری، وقفِ کشمکش ہر تارِ بستر ہے	۳۷۱_۱۹۵
تسکیں کو ہم نہ روئیں جو ذوقِ نظر ملے	۳۰۷_۱۶۰
تغافل دوست ہوں، میرا دماغِ عجز عالی ہے	۳۵۳_۱۸۳
تم اپنے شکوے کی باتیں، نہ کھود کھود کے پوچھو	
— آگ دبی ہے	۲۸۲_۱۴۳
جب تک دہانِ زخم نہ پیدا کرے کوئی	۴۰۱_۲۱۵
جس بزم میں، تو ناز سے، گفتار میں آوے	۳۳۳_۱۷۴
جس جا نسیم شانہ کشِ زلفِ یار ہے	۴۱۷_۲۲۹
جس زخم کی ہوسکتی ہو تدبیر، رفو کی	۳۵۷_۱۸۷
جنوں تہمت کشِ تسکیں نہ ہو، گر شادمانی کی	۳۲۱_۱۶۶
جو نہ نقدِ داغِ دل کی، کرے شعلہ پاسبانی	۳۲۵_۱۶۹
چاک کی خواہش، اگر وحشت بہ عریانی کرے	۳۶۷_۱۹۳
چاہیے اچھوں کو جتنا چاہیے	۳۶۱_۱۹۰
چشمِ خوباں خامشی میں بھی نوا پرداز ہے	۲۸۹_۱۴۸
حاصل سے ہاتھ دھو بیٹھ، اے آرزو خرامی	۲۷۵_۱۳۸
حسن بے پروا خریدارِ متاعِ جلوہ ہے	۴۰۱_۲۱۴
حسنِ مہ، گرچہ بہ ہنگامِ کمال اچھا ہے	۳۳۷_۱۷۵
حضورِ شاہ میں اہلِ سخن کی آزمائش ہے	۳۸۳_۲۰۵
خطر ہے رشتۂ الفت رگِ گردن نہ ہوجاوے	۳۷۱_۱۹۶
خموشیوں میں تماشا ادا نکلتی ہے	۴۱۷_۲۲۸
درد سے میرے، ہے تجھ کو بیقراری ہائے ہائے	۲۷۷_۱۴۰
دیکھ کر در پردہ گرمِ دامن افشانی مجھے	۳۸۱_۲۰۳
دیکھنا قسمت کہ آپ اپنے پہ رشک آجائے ہے	۲۹۷_۱۵۴
دل سے تری نگاہ، جگر تک اتر گئی	۳۰۵_۱۵۹
دلِ ناداں تجھے ہوا کیا ہے	۳۱۳_۱۶۳
دیا ہے دل اگر اس کو، بشر ہے، کیا کہئے	۳۷۷_۲۰۲
رحم کر، ظالم، کہ کیا بودِ چراغِ کشتہ ہے	۲۸۷_۱۴۷
رفتارِ عمر، قطعِ رہِ اضطراب ہے	۲۹۵_۱۵۳
رونْدی ہوئی ہے کوکبۂ شہریار کی	۴۰۹_۲۱۹
رونے سے اور عشق میں بیباک ہوگئے	۳۹۷_۲۱۱
زبسکہ مشقِ تماشا، جنوں علامت ہے	۳۸۹_۲۰۷
زندگی اپنی جب اس شکل سے گذری، غالب	
— خدا رکھتے تھے	۲۹۳_۱۵۱
سادگی پر اس کی، مرجانے کی حسرت دل	
میں ہے	۳۰۳_۱۵۸
سر گشتگی میں، عالمِ ہستی سے یاس ہے	۲۸۱_۱۴۱
سیاہی جیسے گر جاوے دمِ تحریر کاغذ پر	
— ہجراں کی	۴۱۵_۲۲۶

سیماب، پشت گرمیِ آئینہ، دے ہے، ہم
— دلِ بیقرار کے ٣٥٩_١٨٨
شبنم بہ گلِ لالہ، نہ خالی ز ادا ہے ٤٢١_٢٣١
شکوے کے نام سے بے مہر خفا ہوتا ہے ٣٤٣_١٧٨
صد جلوہ رو برو ہے جو مژگاں اٹھائیے ٢٦٥_١٣١
ظلمت کدے میں میرے شبِ غم کا جوش ہے ٣٢٧_١٧٠
عجب نشاط سے، جلاد کے چلے ہیں ہم، آگے ٣٤١_١٧٧
عرض نازِ شوخیِ دنداں، برائے خندہ ہے ٣٩٩_٢١٣
عشق مجھ کو نہیں، وحشت ہی سہی ٢٨٩_١٤٩
غمِ دنیا سے، گرپائی بھی فرصت،
سر اٹھانے کی ٢٧٣_١٣٧
غم کھانے میں بودا دلِ ناکام بہت ہے ٤٢٧_٢٣٣
غیرلیں محفل میں بوسے جام کے ٣٤٩_١٨١
فریاد کی کوئی لے نہیں ہے ٣٧٣_١٩٧
کارگاہ ہستی میں، لالہ داغ ساماں ہے ٣٠١_١٥٦
کب وہ سنتا ہے کہانی میری ٣٥٣_١٨٤
کبھی نیکی بھی اسکے جی میں گر آجائے ہے، مجھ سے ٣٨٧_٢٠٦
کرے ہے بادہ ترے لب سے، کسبِ رنگِ فروغ
— گلچیں ہے ٣٧٥_٢٠٠
کوئی امید بر نہیں آتی ٣٠٩_١٦٢
کوئی دن گر زندگانی اور ہے ٣٠٩_١٦١
کوہ کے ہوں بارِ خاطر، گر صدا ہوجائیے ٤١١_٢٢١
کہتے تو ہو تم سب، کہ بتِ غالیہ مو آئے ٣١٥_١٦٤
کہو جو حال، تو کہتے ہو، مدعا کہیے ٣٩٣_٢١٠
کیا تنگ ہم ستم زدگاں کا جہان ہے ٢٧٥_١٣٩
کیوں نہ ہو چشم بتاں محوِ تغافل، کیوں نہ ہو
— پرہیز ہے ٣٧٧_٢٠١
گر خامشی سے فائدہ، اخفائے حال ہے ٢٨١_١٤٢
گرمِ فریاد رکھا، شکلِ نہالی نے مجھے ٢٩٩_١٥٥
گلشن کو تری صحبت، از بسکہ خوش آئی ہے ٣٥٧_١٨٦
گھر میں تھا کیا کہ ترا غم جسے غارت کرتا
— حسرت تعمیر سو ہے ٢٧٣_١٣٦
لاغر اتنا ہوں، کہ گر تو بزم میں جا دے مجھے ٣٨٩_٢٠٨
لب عیسیٰ کی جنبش کرتی ہے گہوارہ جنبانی
— خواب سنگیں ہے ٤١٣_٢٢٣
مدت ہوئی ہے یار کو مہماں کئے ہوئے ٤٢٩_٢٣٤
مری ہستی، فضائے حیرت آباد تمنا ہے ٢٨٧_١٤٦
مستی بہ ذوقِ غفلتِ ساقی ہلاک ہے ٤١٣_٢٢٢
مسجد کے زیرِ سایہ خرابات چاہئے ٢٦٧_١٣٢
منظور تھی یہ شکل، تجلی کو نور کی ٤٢٥_٢٣٢
میں انہیں چھیڑوں، اور کچھ نہ کہیں
— پیے ہوتے ٣٤٩_١٨٠
نشہ ہا شاداب رنگ و سازہا مستِ طرب
— جوئبار نغمہ ہے ٣٩٩_٢١٢
نقش نازِ بت طناز بہ آغوش رقیب
— مانی مانگے ٣٥٥_١٨٥
نکتہ چیں ہے، غمِ دل اس کو سنائے نہ بنے ٣٦٥_١٩٣
نکوہش ہے سزا، فریادیِ بیدادِ دلبر کی ٣٢١_١٦٧
نوید امن، ہے بیداد دوست، جاں کے لئے ٤٣٣_٢٣٥
نہ پوچھ نسخۂ مرہم، جراحتِ دل کا
— جزو اعظم ہے ٣٧٥_١٩٨
نہ ہوئی گر مرے مرنے سے تسلی، نہ سہی ٣٣٩_١٧٦
وہ آکے خواب میں، تسکین اضطراب تو دے ٣٦٩_١٩٤
ہجوم غم سے، یاں تک سرنگونی مجھ کو حاصل ہے ٣٣١_١٧٢
ہجوم نالہ، حیرت، عاجزِ عرض یک افغاں ہے ٤١٥_٢٢٧
ہر ایک بات پہ کہتے ہو تم، کہ تو کیا ہے ٣٤٥_١٧٩
ہر قدم دوریِ منزل ہے نمایاں مجھ سے ٣٦٣_١٩١
ہزاروں خواہشیں ایسی، کہ ہر خواہش پہ دم نکلے ٤٠٩_٢٢٠
ہم رشک کو اپنے بھی، گوارا نہیں کرتے ٣٧٥_١٩٩
ہوں میں بھی تماشائی نیرنگ تمنا
— بر آوے ٤١٥_٢٢٥
ہے آرمیدگی میں نکوہش بجا مجھے ٢٩١_١٥٠
ہے بزم بتاں میں، سخن آزردہ لبوں سے ٢٧١_١٣٤
ہے وصل، ہجر، عالم تسکین و ضبط میں
— دیوانہ چاہئے ٣٥٩_١٨٩
یاد ہے شادی میں بھی، ہنگامۂ یارب، مجھے ٣٨٣_٢٠٤

ابر روتا ہے کہ بزمِ طرب آمادہ کرو
— دم ہے ہم کو ٤٤٧_٨
اپنا احوالِ دلِ زار کہوں یا نہ کہوں ٤٣٩_٣
آتش افروزیِ یک شعلۂ ایماں تجھ سے
— چراغاں مجھ سے ٤٦١_٢٤
از آنجا کہ حسرت کشِ یار ہیں ہم ٤٥٣_١٩
اسد اٹھنا قیامت قامتوں کا وقت آرایش
— عالی ہے ٤٦١_٣١
اسد، بزمِ تماشا میں تغافل پردہ داری ہے
— عریاں ہیں ٤٥٧_٢٣
اسد، بندِ قبائے یار ہے فردوس کا غنچہ
— گلستاں ہے ٤٦١_٣٣
اسد، بہارِ تماشائے گلستانِ حیات
— قامت ہے ٤٦٣_٣٥
اسد، یہ عجز و بے سامانیِ فرعون توام ہے
— خدائی کا ٤٥١_١٤
اگر آسودگی ہے مدعائے رنجِ بیتابی
— روزگار اپنا ٤٥١_١٣
اے نواسازِ تماشا، سربکف جلتا ہوں میں ٤٥٥_٢٢
بصورت تکلف، بہ معنی تاسف
— پژمردگاں کا ٤٥١_١٦
بے چشمِ دل نہ کر ہوسِ سیرِ لالہ زار
— انتخاب ہے ٤٥٩_٢٩
پھر حلقۂ کاکل میں پڑیں دید کی راہیں ٤٥٥_٢٠
پھر وہ سوئے چمن آتا ہے خدا خیر کرے
— ہواداروں کا ٤٥٣_١٨
تا چند پست فطرتیِ طبعِ آرزو
— دعا تجھے ٤٥٩_٣٠
تا چند، نازِ مسجد و بت خانہ کھینچئے ٤٦٣_٣٨
توڑ بیٹھے جب کہ ہم جام و سبو، پھر ہم کو کیا
— برسا کرے ٤٦٣_٣٧
جامِ ہر ذرہ ہے سرشارِ تمنا مجھ سے
— لگایا ہے مجھے ٣٦٥_٤٠
چند تصویرِ بتاں، چند حسینوں کے خطوط
— ساماں نکلا ٤٤٩_٩

خود پرستی سے رہے باہم دگر، نا آشنا ٤٥٣_١٧
خور نامہ بن کے جائیے اس آشنا کے پاس
— بیگانہ کھینچئے ٤٦٥_٣٩
دم واپسیں برسرِ راہ ہے ٤٤٩_١١
دو رنگیاں یہ زمانے کی جیتے جی ہیں سب
— کفن دیکھا ٤٤٩_١٠
رشک ہے آسایشِ اربابِ غفلت پر، اسد
— آگاہ ہے ٤٦٣_٣٦
فتادگی میں قدم استوار رکھتے ہیں ٤٥٧_٢٤
کلکتے کا جو ذکر کیا تونے ہم نشیں
— مارا کہ ہائے ہائے ٤٣٩_٢
گدائے طاقتِ تقریر ہے زباں تجھ سے ٤٦٥_٤١
گر مصیبت تھی تو غربت میں اٹھا لیتے اسد
— خواری، ہائے ہائے ٤٥٩_٢٨
گئے وہ دن کہ نادانستہ غیروں کی وفاداری
— رہتے تھے ٤٣٧_١
مجلسِ شمع عذاراں میں جو آجاتا ہوں ٤٤٣_٥
مجھے معلوم ہے جو تونے مرے حق میں سوچا ہے
— گردونِ دوں، وہ بھی ٤٥٧_٢٦
ممکن نہیں کہ بھول کے بھی آرمیدہ ہوں ٤٤١_٤
میں ہوں مشتاقِ جفا، مجھ پہ جفا اور سہی ٤٤٥_٦
ہم مشقِ فکرِ وصل وغمِ ہجر سے، اسد
— روزگار کے ٤٦١_٣٢
ہم نے وحشت کدۂ بزمِ جہاں میں جوں شمع
— ساماں سمجھا ٤٥١_١٥
ہوں گرمیِ نشاطِ تصور سے نغمہ سنج
— نا آفریدہ ہوں ٤٥٥_٢١
ہے طلسمِ دہر میں صد حشرِ پاداشِ عمل
— فردا نہیں ٤٥٧_٢٥
ہے غنیمت، کہ بہ امید گزر جائے گی عمر
— جزا ہے تو سہی ٤٤٧_٧
ہے کہاں تمنا کا دوسرا قدم یارب
— نقشِ پا پایا ٤٤٩_١٢
ہے پاس میں اسد کو ساقی سے بھی فراغت
— تشنہ کامی ٤٥٩_٢٧

غلطنامہ

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
١٧	٢٤	فرست	فرصت
٣٣	٢٦	٦ _ ١٢٢	٦ _ ١٦٢
٣٩	١	خوش مزاقی	خوش مذاقی
٤١	٢٢	دچکی ہے	دے چکی ہے
٤٧	٢٠	ہوتی ہے	ہوتا ہے
٩٣	١٤	پشتِ خار	پشت خار
١٤٣	١٤	سُفرہ	سَفرہ
١٥٩	٧	سامانِ رنگ	سامانِ زنگ
١٦١	٩	ہے	ہیں
١٦٧	٧	جاں	جان
٢١٥	١	مطلٯ	مطلق
٣٦٧	١٢	زخم دم	زخم دل
٣٦٧	١٦	ہے	کرے
٣٧٧	٨	پرہیز	پرہیز
٤٣٩	٧	میوہ ہاے و تازہ	میوہ ہاے تازہ

हिन्दी की अशुद्धियाँ शब्दावली में ठीक कर दी गई हैं।

Printed at THE ADABI PRINTING PRESS,
8 Shepherd Road, Bombay 8.